प्राप्ति स्थान--विश्व मंगल प्रकाशन मेहिद्र

, श्री रतिलाल अमृतलाल (वकी^ल) श्री जयन्तीलाल मिग्गलाल णाह

C/o शाह रतिलाल पुनमचन्द वर्तन के व्यापारी मु पो वाटण (च गु) व्हामा म्हेमाना ५० व

मृत्य : दो रुपये

इयमा वृति १००० ति म २०३५ 118 11 5X3"

પુ પાઢ સુપ્રસિદ્ધ વક્તા, પ્રશાંતમૃતિ', પંન્યાસજ મહારાજ શ્રી કનકવિજયજ ગણિવર



करमा कि. मी. महत्त्व र विद्या कि स १०८५ करियु प्रत्यसभाग कि. स २०६५

पुरो वचन

विस्व मंगल प्रकाशन मन्दिर की और ने प्रग्त्न पुरुष की बकाशिन करन हुए हमें अतान हमें की जनुम्ति हो रही १ पुरवराय स्विमित्र बाला, ब्रह्मान्त मृति पन्छास्त्री म श्री कनकविजयकी गणिवर भी अपने शिष्य समुदार सहित जब रतकाम में बातुमीय रियन से तद प्रशीवराज भी पर्वाण पद की भागधना के परित्र उदेश्य से एकतिन हुए भोजानको है गमधा श्री पन्यासली म. ने सारमचित प्रवत्तर दिये थे। पर्वेषण पर्व की भाराधना करने के इंग्ह्रा लग्य ग्रासपाते पा भी मार्गदर्शन मिल तक इस हेनु में उन मननीय पदननी पा गारभूत अवतरण एवम् मन्।।इन प्रिन्त श्री वनवीत्राजन नप्रवाम 'स्वाम्बार्म' में निया है। बिन्डत्यी ने निष्ठा हर्षेत्र गुन्दरमंती में समादन हिया है। पंजासजी मं भी के पनि ें जनका संवित-भाषना, निष्ठा एवं सवनकी रहा प्रशसनीय है। पुरवपाद पुरवातन्ते म के साबी को दस सुन्दर राज में प्रस्तु म रने व स्पान प्रयास के लिए हम बोचनकी जो हारत सहुदे। शुक्तांत्रक प्रार्थिक व्यवस्था है ।

'सप्तनता ना मोपान' मगल मायूरी शालीन सब्सायमाला, दर्गन ग्रीत मुखा, दर्गन माधुरी, दर्गन स्वाध्याय मुखा अ।दि ना प्रकाशन हो रहा है। इन प्रवत्तनों में सिंद प्रवत्तनवार के ष्ट्राध्य के विरुद्ध या जैन सिद्धांत क विरुद्ध कोई बान ही तो नगर रिपे हम मिन्छामि द्वारूटम् देने हैं।

इन ५्यंत्रण पर्व के प्रक्रनों का वायर मनन परिमीतन कर सभी मृमुक्षु धर्मतीय भव्यतीय आगपना क वस पर चल फर शाहम मन्याण के रिष्ट उद्घर हो एकी मगल सामना पारम है।

पो २२५ খানিবা সূ

मा ६०६%

SUTT

र्शतिलाल असुरालाल वकील चाह नयहितलाल मणिलाल

दानद म की

वित्र ममल प्रमाणन मन्दिर

परम प्र चामन प्रभावक व्याग्यान-वाद्यानि जानाये देव श्री विषय रामनन्द्र मूरीप्रवरको म. के जिल्ला रहते। में पूर पत्यामणी म. या जवना विधित्य स्थान है । जयनी विद्रान, रेजन एवं प्रमृत्य की विल्लान प्रतिमा और प्रथमन भाव में जान-वर्णन-चारित की जारायना प्रारा जाय जन-जन के मन नग जाम-कागरण का नदेश पहेंचा रहे है।

रालाम नम क प्रत्यार घाष्ट्र भरे च्युन्य को ग्यांशार गर प्रश्यात मन्द्राशित जानायेंद्र अंग्या दिवस प्रम स्रोध्यात्म की आज्ञा में पत्यामता महाराज मा का स २०२२ वा चतुम्स रतलाम नगर में हुमा । वर्षी ता की स्रान्या जानू होते के बादपूर प्रत्यागां की भीवन गर्भी की सहन वासी पूल, सर्वाम २०० मीत का जम बिहार वासी रियानका में का राज्याम योग में खाला प्रवास है की प्राय प्रापंत हुआ। श्री गण रजनाम ने मायका माण न्यांग्य स्वास्त

पुत्रम प्राप्तकी महाराज के स्थायकर न बहाराध पत्र में राभूतपुत्रे के तथा और कामाह ना बाटारामा निविध हुआ के पत्र स्थाय प्राप्तमीय के स्थाय निविध स्थाय के उपयोग पत्री में स्थायक रामृति का स्थाय हुन ।

पूर्व मनाराज है की जीतिकार कर्ता से रक्ताम गण्ड की राष्ट्रियोग क्रांत लाहाँ यह है। यस एट्टेंग्स में प्रति रूपार महाराज का जासामी का प्रतिस्थान किया गया। पू पन्यामजा म की वाणी को बहुजन हितारी और मर्वोगयोगी बनाने हेन् उसे निषिबद्ध और सम्मादित करवाया गया। प्रवचनों को निषिबद्ध करने और सम्मादित करने का काम उन पित्नयों के लेखक को ही मौपा गया या। वे सम्पादित प्रवचन श्री विश्व मगल प्रकानन मन्दिर पटण द्वारा 'प्रगति क प्रव पर' नामक पुम्तक के रूप में प्रकाशित किय जा चक है।

तीन दिन में इस महा मगलमय पव को सफल आराधना के मम्बन्ध में विस्तार पूर्वक प्रकाश उल्लाखा । उन प्रस्क प्रवचनों को मैंने निविद्ध निया और प्रवचनकार क मूलभावों को सुरक्षित रखते हुए उनका सम्पादन किया। विषय का प्रतिपादन एवं दी गई सामग्रा प्रवचनकार का हा है। मैंने तो विषय ना पमबद करन और भाषा का सवारने का ही कार्य किया है।

पूज्य पन्यासजी महाराज श्री ने पर्यप्रणपर्व के प्रारंभिक

धीर सिंद के पर्यक्षार को बकास में पश्चित करतें है अनप्य यह प्रकास का पर्व कहा जाता है। इसी तथ्ह पर्वत्य पर्वस मन में जभे हुए थिकारी का मन्दर्भ का साम सुपरा करना होना है, आत्मा क दुर्गुणों को चन जन कर अलग करना हीता है, हृदय का स्पष्ट करना होता है. आत्मा को जनक स्वामारिक मुल्तो में असमून करना होता है। मानव राषादिन प्राणी हाने से एक दूसरे व सम्पर्ध में त्या माना पराच है। इस सम्पर्ध क कारण पारस्यस्कि मनस्टाय या सँग्यिमध्य गा प्रसम् का जाना स्वाभाविक है। ऐस अबोद्धियाय प्रदेशों के सिए प्रस्पर म धामा का चारका-प्रदान पर हुइय का विश्व दनाने वाला यह महान विश्वकि का एवं है। महमगी की बंगन-राओं द्वारा चाहता को उन्होंक्यिका का स्वास्थ्य महत्त्व का निर्देश करता पर्वे है। इस जारवाधिका कर राज्ये हो। ग्रस्टविक काराधना किस मकार हा गानी है इसका बदा ही पुनदर निरुद्धण जन पत्रवनाम रिया थया है। अन्देश तन जनाव कृति य धवनन् प्ररणादायका तीर मानेद्रशक 🤼 ।

गरमीयकार ता भगपती गत्म वर्षे मा तर्गामा के लिय पास सक्तमेलों तथा काल्या काबिक सम्बो हर निर्माण विकारी विकासकार ने काले की बन्नमा में इस्ते परिस्कारीय भीर प्राप्त परिष्ठ लाखी गाविस्तानपर्वत सन्नेत्र सर्गन विकास है।

स् एता है कि विदेश के त्रीत है के लक्ष्मियार के हैं कि बाद के विदेश स्कूत सरह में हैं है के किए के हैं जह कहारे हिस्स कार्य के लिए में हैं शीर (अष्टम) तप का हृदय म्पर्णी विवेचन किया है। तीमरे प्रवचन में चैत्य परिपाटी ओर एकादश वापिक कृत्यों की प्रभावपूर्ण गौली में व्याख्या की गई है। उदाहरणों और कथानकों के द्वारा विषय को म्यष्ट और हृदयग्राही बना दिया गया है।

पूज्य पन्यामजो महाराज के इन प्रवननो में जन सस्कृति की भव्यना का पद—पद पर परिचय प्राप्त होता है। आज के युग की नई पीछी अपनी सम्फृति के प्रति आम्था—हैन होती जा रही है उसका पुरुष कारण यह हे कि इस पीछी की अपनी सम्कृति की भव्यना का ठो ह हंग में ज्ञान ही नहीं हैं। अत्र युग मुग की यह मून्यून आव्ययकता है कि उदीयमान पीछी को अपनी सम्कृति की भव्यता का परिचय कराया जाय गांक वह पथ अग्ट न हो और अपनी अद्धा के दीप की मुग्धिन राग गया। पत्यामजी म क उन प्रवचनों में यह मून भव नत्व करावित है। उन प्रवचनों में जैन सम्कृति की भव्यनी और पेन दिन्या के स्विणम पूर्वी पर पर्याप्त की भव्यनी और पेन दिन्या के स्विणम पूर्वी पर पर्याप्त की भव्यनी आहा हो हो साम्या दा गई है

1 29]

किय गये हैं। उनमें यदि कही स्तत्त्वता हा तो मसादक के नाते मैं उत्तरदायों हूँ।

इस पुरतक का स्ट्रण को मेरे ही पेन में रिया गया है। यथा मन्द्र जुड़ और मुन्दर मुद्रण का प्रयन्त विया गया है तथि कही हुई कहियों के लिये में धानानार्थी हैं।

सिद्यं मध्य प्रमाणन मन्दिर पाटन की और से इन प्रमाणने ना प्रसाधन किया जा का है अनुष्य प्रह चन्यपाद या पात्र है।

'पर्युषण पर के हरके प्रश्नित है के प्रेरण जिल्ला सब स्थानक हान-प्रश्नित पानित की अध्यापना से उपने नके हनी सम्बद्धिमान के साथ के

रताल

पित्रम महस्तीनाल ननशमा

प्रवचनकार की जीवन रेखा



सुरम्य उप 1न के आचल में मृदूल टहिनयों पर पूर्ण प्रस्फुटित होते हैं । फूल की कोमलता सुन्दरता होर पुगन्य से उपवन का कण्-कण सीरम से सुवासित हो उन्ना है। दर्शक कर पर है। दर्शक का मन-मयूर नान उठता है। वह उत्लास और माह् लाद से भर जाता है ठीक इभी तरह सत-नन विषव-वाटिमा के रमणीय सुमन है। वे स्वय जीवन की सुवास से सुवासित हाते है और अपने स्नासपास के वातावरण को भी सुवी सित और सुरम्य बनाते हैं। ऐसे सतजनो मे प्रस्तुत प्रवदना है प्रवचनकार, शान्तम्ति प्रसिद्ध वता, समर्थ साहिधकार पत्यामजी महाराजश्री कनकविजयजी गिर्णिवर का प्रमुख स्थी है। जीवन के उपामाल में ही ऐश-प्राराम और सांसारि प्रलोभनो में कपर उठकर मोक्षमार्ग की द्वाराचना हेतु तर पू भार समनित्द जीवन श्रमीकार करना आएके जीवन की प्रमु विशेषना है। साधारण प्राणी एश-अलाम की जोर जुनती प्रस्त विभिन्न व्यक्ति सिन्द प्रशास की सापना सरके जन-वर्षाम क तिय सामारित मुधापभोग का दूररा कर ताय और करतार । अगडा जादम जर्मध्यन पत्रता है। पत्रमासनी महाराज त्यान राज्यात की तथा है। सहये जाता है। यह उन्हें महान ना विकास मात्र प्रस्तु हरो का प्रसन्त हिया आ



वाल्यावस्था और प्रवज्या ग्रहणः

श्री वत्यासभाठी बचपन स ही सुसम्कारी थे । पूर्वकालीत उन्कट काटि के धमसम्मारा के नारण तथा विता श्री गारवन्य भाई का प्ररुगा न व चार पाच बप का उम्र में ही बर्ग के ब्रि अनुराग रयत व विविधा विषया से जी शुगार वेन अपने लाइ तपुत्र का 🕖 वर्ष का छोड़ कर स्वर्गताणी हो गई थी। मार्त की ममतागय छाया छिन गर्छ। प्रांत में रहने बाते उक्ताभाई जबरी को धमपत्ना था नदतवन न प्राने पुत्र के समान ही इनका नालन-पालन किया किया भाई ग्राने पिताली के साथ निरस्तर जिनालय म अप्टयशारी पूजा करते थे। पब दिनों में प्रांत कमण करन । स्दम । का त्याग गांज-भा नि-त्याग का जन वचपन सती या। ४० वप का लालावय में हा चार पकरण पत्र प्रतिक्रमण, नवसम्बग उत्पादि प्रय बहित कठस्य ये । पटमदाताद में प्रथमाद सकतानमरहस्यत्या प्राचार्यदव श्रीमद् विजयज्ञान सरीव्यर्ता मधारा आ हे यह्मनावक पूज्यपाद जाना करें। अामद विजयन मन्त्रिष्य का महाराज्यों के सम्पक्त में याने ने तथा उत्तर पदयगात । व्यास्थान व्यानकरील सम्बन्धानेत पो मरफ न मरुत हुआ। इसी व्यवता स्वास्वस्थाती है भी वि व १६.४ पर तुर मुद्धाः व दिन प्राम्बस स नार्वती विद्याः परस्याः इस्त्राः एक स्वया स्वास्त्रा स्वाप्तः विद्याः परस्याः इस्त्राः स्वयाः स्वयाः विद्याः परस्याः । भागाति इसि, स्याप्ताः पर स १०-१०० कः स्वयाः स्वयाः । सी इस्तर्वाः इत्याः स्वयाः स्वयाः विद्याः स्वयाः । स्वायः स्वयाः द्वाः स्वयाः । विद्याः स्वयाः स्वयाः ।

अरागात गुर्व गंत्रवार पन ग्राधित

्रिक्ष जाता, वर्ष के तक्ष्य स्वाप्त स्थान स्थान

ववतृत्व एवं साहित्य मृजन :

पूज्य पन्यासजी म जहाँ एक और सफन बक्ता है वहीं दूसरी और उच्न कोटि के नवक भी है। एवननवार होने के मार्य हो साथ माहित्या । रहाना एक अनात्वा राजनस्य है नावशी मुसुबर और भारत शला स प्रवचन करते हे सार धाराप्रकाह है मे जापती लेगनी साहित्य सजन करता है। जन नमाज मे माहित्य सजन को पर्वाच के लिये प्रस्मित 'करयाण' मासिक आक्ती भ्रेरमा का ती सुफन है। उसन अनेकविध अपनाम से स्राप नानाविध गामगी पाठका को प्राप्तते है। स्रापने १५-५º पागवानी का स भादन तथा सजन किया है। सस्कारबीप, बीप माल, मगलबोर जैन लीटा का इतिहास रामायसा क विवेचन, श्री बजुञ्जम महात्म्म इत्यादि प्रापता वश्वन न ॥ सम्पादित प्रसिद्ध साहित्य-प्रतिया है। जानको प्रवान-पत्ति अहतीय है। नारा मुन्तुर तथा उमा अंतो से आप किसो भी विषय पर धण्डो तर्राप्रवेचन । र ःो ते। स्वारं प्रच म स्थुस्य हो कर श्रवण करते हैं। अपने काल्यान का प्रक्राशन हजा है। हिन्दी में विदेशीय के भागा जा भागाता के विकास समारिक

१ अपूर्व नेत-धेर ता एक बर्गानप ज्यब्धाने अन वर्षी यह है। जो महा भौगारी, बोलह मध्यो, एक उत्वान मध्ये, उत्वान मध्ये, प्राप्त मध्ये, की महा प्राप्त प्राप्त प्राप्त नाम स्थित प्राप्त के प्राप्त वर्ष नेता. व्याप्त की प्राप्त वर्ष मध्ये प्राप्त का व्याप्त प्राप्त की प्राप्त की प्राप्त के प्राप्त की प्

रिक्षार-माँ विद्या

तिनास है। सं त्या कि विषय मानास के पूर्ण स्वास्थान सितास की सितास

विश्वत माध्याः

 आपकी विह्न प्रशान्त विदुषी साध्वी श्री दर्शन श्री जी म का स्रभी सभी स्वगंवास हुआ है। स्रापका विशाल साध्वी-समुदाय है।

उपसंहार:

इस प्रकार प्रस्तुत प्रवचनों के प्रवचनकार पत्यामजों श्री कनकविजयकी गणितर अपने लेखों और प्रवचना द्वारा सभाज में जार्गन का अभियान चार रहे हैं। अपने तब पूत सयमी जीवन और आजन्वी व्याग्यानों के द्वारा जिन-शासन की प्रभावना गर रहे हैं। शासनदेव में का मना है कि आप दीर्घ काल तक जिनगामन की सेवा करते रह

* सम्पादक

BESTERN BARBARA AFAMAMAMAMAKA

अनुक्रम

		700
पगा ग्राचन	• •	*
र्दाता गर्मन	4***	ڻر ۾
पृतीय प्रवचन	dF4 N	\$ 7 3

And the state of t

पर्वाधिराज श्री पर्युपण महा-पर्व की आराधना

१. प्रधम दिवस का प्रवचन :

श्रन्टान्डिकाः परेशीकाः स्पादाटामगदीनर्मः। ततु स्वरूपं समावर्णं धामेन्या परमाहर्तः॥

धाल का यह मनलमय प्रभाव एक सनीया ही प्रकाशन मुल दिला आगा है। वैस ता प्रतिबन पूर्वोद्ध होता है भी र समझी मुनर्गी दिलों शिव में अन्याद की दूर कर कारों स्थार प्रणाद ही प्रभाव विशेष हैं। है पान्यू स का प्रभाव साथ प्रणाद के प्रभाव की स्थार एक नर्था प्रभाव है। विश्व प्रभाव की स्थार एक नर्था का मा पर कर रामा है। यह प्रणाद साथ ही माथ स्थान स्थार कर रामा में प्रमाद साथ ही माथ स्थान स्थार कर साथ में स्थार प्रभाव की स्थार की साथ स्थान कर साथ में स्थार की स्थार है।

स्ति वर्षेत्रम् ५६ का स्तारमय प्रमान है। या स्तारो भीर महाने मुद्दिन भर करा है है। र वि स्तारत भा भूगो है, सन्तारह का नायाव्य स्तिरतेश्वर भा भूगा है, दिला है सानार से सम्मान मुंदि है, तेल क्षार स्वृति प्रमान करने वाली वायु की मन्द-मन्द लहिंग्याँ नवजीवन का सवार कर रही है, हे भद्र । उठो, निद्रा छोडो, पुरुपार्थ करो और इट्ट साध्य को प्राप्त करो । भाव-जागरण का यह सुनहरा अवसर है। मोह की रात्रि दूर हुई, ग्रज्ञान का अँबेरा हट गया, सम्यक्तव का सूर्योदय हम्रा, आत्मा की गुण-लहिर्यो में स्पन्दन हुआ, यो वातावरण अनुकृल है, ग्रव प्रमाद की नीद को छोडकर जागृत बनो, मोझ तुम्हारे नजदोक है। यही आज के मगलभ्य पर्यु पण पर्व के प्रभात का भव्य प्रेरणास्पद सदेश है।

पर्वाधिराज पर्युपण:

जिस प्रकार तीयों में शत्रुजय तीथं, मत्रो में नवकार मत्र पर्वतो में मुमेरु पर्वत, समुद्रो में स्वय भू-रमण समुद्र प्रचान और महान् है उसी तरह सब पर्वो में पर्व-मृकुट-मणि पर्वाधिराज पर्युषण पर्वे प्रधान और महान् है।

सामान्य दिनो की अपेक्षा पर्य-दिनो में विशेष उत्साह परिलक्षित होता है। जीवन के दैनदिन नाय-कलापो में नवीन उत्ताम का मचार करने हेतु पर्यों की आयोजना हुई है। पर्य-दिनों में नर्य-तता, उत्ताम और स्कृति का अनुभव होता है। वैने तो जिस्स देश-काठ की अपेक्षा के नाना प्रकार वे पर्य है परन्तु सामान्य तथा हम प्रदेश यामि में विभा-जित कर मकते हैं, वे हैं लोकिक पर्य और सोसोन्य प्रमान मानारिक आमोद-प्रवोद की वृद्धि करने वाल पर्य होता क पर्वे हैं और अस्मा को ग्रम्यूदय के मार्ग पर चलने की प्रेरणा करने अने मोत्तोनर पर्वे हैं। पर्वाधिराज पर्युषण पर्वे महान् स्पेकोत्तर पर्वे हैं। यह ग्रान्या के ग्रम्युम्वान का सापान है।

जिस प्रशास कीई महानु व्यन्ति योई राजा या कोई विनिग्टर (मत्रा) आत्रके घर आने याला हा सो उसके म्हतार-मन्मान और स्वागत के लिया अंप कितने उल्लाम के साथ नैवाश्यी करते है, आमपान की ग्रमी दूर कर स्वच्छता काते हैं, वाना प्रकार को सजाब्द परते हैं, विवय प्रकार के द्वार बनाते हैं और मोरप-यन्दनदारी से उन्हें सजाते हैं, विवित्र ११९-उपराग् आदि समितिम कन्ते है और न जाने में सी-बेमा मैयारियों यह उत्माह के माथ मध्यन करने हैं ? यस स्पापत के पाने के पूर्व की उत्साह बहुना है, यह आता है यब भी उत्पाह गाता है। इसी तरह पर्वाधियाल पर्युपन का रोवन के अनिन में पदार्पण हुआ है। हमें भावले ने हुदया से गाना स्थापन सम्मा है । हुदय के आंगन की, मन के मन्दिर भी, गाण सुबंध करना है अन्तासंख्य में छिपे हुए मीट की रायागरा वं पागरार की दूर गर विवेश-सान की ज्योति भगाना है, पारना की विज्ञाव-विज्ञतियों की इटाकर स्था-भाषित गृह-रान गाँस में प्रारमा की मनामा है।

पूर्व सम्बार्ति के कारण असमा विकास की सन्त्रमण म कारण भाग्य करणाव की विकिन्न केरिया है। कीई प्राणी एमें हैं, की स्थानाव सुद्ध काची के प्रति जाकरित स्थाई जीर सदा गुम श्रनुष्ठानों में लगे रहते हैं; कोई प्राणी एमें हैं जो थोड़ी सी प्ररणा पाकर श्रुम कार्यों में लग जाते हैं और कोई ऐसे प्राणी हैं, जिन्हें तीय श्रेंग्णा की आवश्यकता होती हैं। कोई एसे भो हैं जिन्हें वार—बार प्रेंग्णा मिलते रहते पर भी धमें कार्यों के सन्मुख नहीं हें ते हैं। जो प्राणी स्वमावत धमें के प्रति श्रनुरागी होते हैं वे प्रतिदित धमीनुष्ठान में लगे रहते हं उनके लिये वारह माम पर्व दिन हैं। जैसे कि कहा गया है.—

''मदा दिवाली संत के बारह माम वमन्त''

जो व्यक्ति थोडो सी प्रेरणा से धमं के प्रति सावधार हो जाते हैं वे अप्टमी, चतुदणी, पाक्षिम श्रादि तिथियो प धमं की श्वाराधना करते हैं। जिन्हें विशेष प्रेरणा व सावश्यकता होतो है वे चौमासी पक्ली, पर्युषण आदि प क दिनो में धमं की प्राराधना करने में प्रवृत्ति करते हैं। उ इन पर्व दिनो म भी धमं की सावना वरने से विचित रहते वे अत्यन्त निम्न कोटि के समझ जाते हैं। उसी बात को इ तरह भी कहा जाता है—भी सदैव धमं की आराधना करने वे महैया भी कभी २ श्राटमी, चनुदंशी को धमं की आराध करत हैं वे बदया, और जो नेयन भारपद माम में श्रय प्रयंणण पर्व में धमाराधन करने हैं वे भईया महे जाते है।

त्रत्त बात का फिलिताये यह होता है कि इस पर्य का निमित्त पांकर असेक प्राणी श्रात्म-भत्याण के पथ पर अग्रसर होत है हम जैने कृत में जन्में हैं, पर्युषण हमारा पश्चित्र पर्व है, इन दिनों में धर्मा एउन करना तमारा कुनाबार है, दन दिनों में यदि धर्म परालों भी, यदिक उपध्यय में दरी लाउँगे तो धरहा नहीं जगेगा रामधी छारणामी है। यमोपूर होत्तर भी गाउँ व्यक्ति गर्भ की खालपरा हेनु प्रवृत्त तीत है। जहाँ यर इस प्रशार में सर्व की दाने हैं कद यह सा मन्याय का द्वार सुका हुआ है। जब यह समें भी नाते जाली है नव का बाल के हार बाद दा वाला है। बहुत का ताम्बर्वे यह है कि वर्षे का विभिन्न पाएर समेश पान प्रानी आरमा का काय पा करत में प्रश्नीत हरता है। अस्पराधाया काने का यही मुक्ति गरी जात हम कदरें समझ उद्देश्यन है। प्रशिक्षण पर्वयण, छई की कोषिम है। प्राप्तारी सीव मासिम व दिनों में परिश्व पार्य प्यायाक्षेत्र कर मेल ₹ और हिर वर्ष भर मुल पूर्वत क्विया नियोग करता है, एके पनन योग-धेम की विनय जिल्हा नहीं करती तहती है त्री स्वाताम गणरून में परनार भौतिन दा समय यो तो होता देश है यह वर्ष भर यसकारा है। इसी मन्द्र का कानापर पर्यापाय का पार्विक भी वस का वार्तिकार ज्ञान लाम कि विश्व है यह करमभाष्यक्ष कर गुज्ज प्रशास कर केया है भोर जा प्रयाद के कारण की या हा रीवा देना है वह उत्तर कर्यान का स्वर्ध भन्ने बा-विस्त्रहित क्षा हा-स M 1 18 5

प्रदेशायाधिकः :

की है:— (१) चैत्र माम की (२) अपाढ माम की (३)
पर्यु पण पर्य की (४) आमीज मास की (५) कार्तिक
पाम को और (६) फारगुन माम की । उन छह अप्टान्हिकाओ
का भाव पूर्वक समाराधन करना चाहिये। उन्न छह अट्टाइयो
भें में आसाज और नैन माम की दो अटटाइयाँ शाष्ट्रवन कही
गई हैं। उत्तराध्यमन सूत्र की चृहद्वृत्ति में ऐमा उल्लेख

हा दी घाएगत श्रष्ट्राहयों को दिनों में भुवनपति,
वान श्रमण्ड, पर्मानिक और वैमानिक चारों प्रकार को देव तीर देवियों तथा विधावर आदि नन्दीएवर द्वाप में जाकर जिन्हार भगवा की तद्गान पूचक भिना करने हैं और भव्य ग्रह्मण मना कर जान दिव्य जन्म की सफनता समझते हैं। हुनी प्रकार मनुष्य भा उन घाश्या अल्डान्हिकाओं में आधिकात की तपश्नमी पूचक नापद का भिन्तिमात्र पूचेक ग्रमाराधन करने हैं। शीपाल राजा और मगणामुन्दरी की सरह नवपद औता का भीगाना पूचक समाराधन करना इम भव में भी व याणकार होता है और परभार में भी एहान् शुन फल का प्रदान होता है और परभार में भी एहान् शुन फल का प्रदान होता है और परभार में भी एरवन और यांच महाविदेह-यो १५ कर्म भूमियाँ मानी गई है नहीं धर्म-कर्म मादि की प्रवृत्तिया है। जम्बूद्वीप में १ भरत, रे एरवत और १ महाविदेह है। मानरी गर में २ भरत, रे एरवत और रे महाविदेह हैं हु अर्व पुष्टर घर ईला स. भी र भग्त. २ एग्या और २ महाविदेत हैं। इस प्रसार उठाई दीप प्रमाण मनुष्य क्षेत्र मे ५ जरत, ५ एरवन और ५ महा यिरेट हैं। ५ महाविदेह क्षेत्र में नदा घणे की प्रवृत्ति है। यही होना संबिद्धारदेव विजयान भने हैं। वहाँ मधाराल पनुशिप में पिरामान रहता है। यहाँ का क्षेत्रानभाव हा ऐना ह पि या भरा यत्र के चौके लादे रहोता रचना रदाणाल रहाँ है। यहाँ के कांग काह्यभाग है। अनम्ब यहाँ के माणु माध्यिमें वा आचार भी यहाँ से विश्व है ये वय वाद सगाप है गव प्रतिचयम बर्ध है जब दाय नहीं समता है ता प्रतिव मन नहीं चनते हैं। हमाने यह जिसा धेवनी, संद, पालिन, पंतृपंतिर या स्वान्तारिक प्रतिक्षण रा छनिवाये विधान यहीं मही है। इसनिये महाविदेत क्षेत्र में बार जादानिताओं की पारमामा नहीं हैं। इ भारत और ५ मृत्यत सब में उत् मार राजारिहराओं की भाक्षतना गरी गई है र

भरत की स्वयन क्षण में गया मानक्ष समाय नहीं भीड़े हैं मार्ग क्षण नीम बाल का बावान कर कर कर प्रशास है । दर्श विभी की एक किस मानक्ष बाद कर कर कर पार्श किसे हैं । क्षणिया में कोड़ मीर पारत बाद मानसे की कारणना है, में प्रशासी में गाँड हैं । इसियों की मोर बंद के की महिला में की महिला मानदार करवाल तीर महैं का नी महिला के मानवा नहें हैं।

भग्म विया । (३) उत्तम आहण है वर, माधु पुराहें पर, नंबर पाने पर उनकी रक्षा के निकित्त देव मनुष्य कोण में पाने हैं और (४) तीर्धंकर देवों के नायाणकों के प्रवस्त पर, महातक नान्त्रियों को समित के लिये, युहत्त दान धादि के समय गुताने-पृत्ति पुरा दृत्ति शाहि है लिये नाम की उधर्म क प्रभाव में हेनु देव यहां क्षेत्र ।

यलांव में घंणुक और नाम भाषा में निमे देव याते हैं, स्थान मन सबण हनते हैं, मामाणा भारि का राष्ट्र भवित्याप पूर्वत मनते हु पक्ष्म् किरिंग का परिणाम उन्ने नहीं तेना है व स्थाण, मनत और स्था उनमें नै पक्ष्मु मास विकेश नहीं है। इस प्रभाव देवजीय में सिवृत्य गुल्कांग है पक्ष्मु भवित्य में सार्थित समूचित ने-सार्थितरास में न्यायक नहीं गही है।

विश्व क्षा कि से स्वा त्यास्त ता अध्वय तर के सस स्वस्थित्य होस् स्वयम् हे स्वी की ग्रम्बिन्य क जात्वात त्यस्य त्याः व पूर्वेस के अविन्यस्व विश्व प्रित्न ज्यानित्रस्य अन्दर्श द विन्य विश्वेस से स्वयंत्रव व को स्वयंत्रक ज्यानित्रस्य स्वयंत्र स्वयंत्रस्य स्वयंत्रक स्वयंत्रक व का का वर्ष के स्वयंत्रक क्षा स्वयंत्र स्वयंत्रस्य स्वयंत्रिक व्यवंतिक स्वयंत्रक व का वर्ष के स्वयंत्रक स्वयंत्रस्य स्वयंत्यस्य स्वयंत्रस्य स्वयंत्यस्य स्वयंत्रस्य श्री जीवाभिगम सूत्र मे कहा गया है कि-"श्री नदी-रवर द्वीप में भुवनपति, वानन्त्रन्तर, ज्योतिषी और वंमानिक देव देवियाँ तीनो चौमासी और पर्युषण की अट्ठाइयो की अत्यन्त उल्लास और भिवत बहुमान पूर्वक महा मिहिमाशाली महोत्सव मनाते हैं।" इस पर से समक्षा जा सकता है कि इन पर्युषण पर्व की आराधना का कितना श्रिधक महत्त्व है।

मानव भवः एक अपूर्व अवसर

घमं की श्राराधना ही पर्व की आराधना है। धमं की आराधना का श्रपूर्व श्रवमर हम सब की प्राप्त हुआ है। इस महा दुर्लम मानव भव में हो धमं की आराधना सम्भव हैं— अन्यत्र कही नहीं। देवयोनि में भोगों की ही प्रश्नाता है। त्याग प्रत्याच्यान नहीं है, न सामायिक न प्रतिक्रमण, विरित्त का नामनिशान तक नहीं है। तोर्थं कर देवाधिदेव के समवनरण में देव व्यार्यान श्रवण हेतु श्रातं ह तब भी वैश्विय शर्रारधारी होते हैं, तप त्याग सयम का आराधना ओदारिक शरीर से ही सममव है।

शास्त्र में कहा गया है कि चार काराणों से देव मनुष्य लोक में आने हैं -(१) राग के कारण -पूर्व भव के राग-सम्कारों की प्रवलना टीन में देव मनुष्य नाक में आन है; प्रवा गामद्र मेठ का जाव देवलोंक से शानिमद्र से लिये मृहोपनींग वा सामगा भेजा ना । (२) देव व कारण में -प्रवा हैंदावन कृषि के जीव न पृष्टन निदान में द्वारिका का भन्म निया। (३) इसम आहणको पर, माधु पृत्यो पर, गंधर धाने पर उनकी रहत ने निनित्त देव मतुष्य लोक मे ध ने हैं और (४) तीर्धंकर देवो न वाद्याणको के धवमर पर, महात्मा नर्शन्ययो का भन्ति ने निया, मुद्राण दान धार्य के मुन्य मुद्राले वृद्धि पुत्र पृत्रि लादि ने निया नाम के माध्य में प्रसाव में हतु देव परा धाने हैं।

संप्रांत सार्वज्ञार और नाय भरित के रिय देव साते हैं, ध्यान मन स्वाल करते हैं, जा पालक सादि भी नाम भरित साद पूर्वक मन्ये हु परन्तु किरित का परिचाम उन्ने नहीं होता है । ध्यस्य, नामस और ध्या प्रान्त है परन्तु गयम दिक्ता नहीं है। इस प्रचाद ब्यताल में विद्या मुक्तान है परन्तु स्वित्य को भागांविक सन्दर्शन के अध्यापकार म-ध्यस्य गर्दे हों।

विश्व क्षिण के भूक प्रकार ते अपन्य सारह है ताल प्रकारित श्री प्रमान है सही भी ग्रामित है। के शहूबार अपन्य स्वाप्त प्रमान है सुनि इसाई है जो लीग्ड र रहिन्दि है। प्रकार से किया विश्व किया में स्वीप्त स्वाप्त हैं। स्वाप्त हैं। स्वाप्त हैं। स्वाप्त स्वाप्त किया कि स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त कि स्वाप्त स्वाप्त कि स्वाप्त स्वाप्त के स्वाप्त स्वाप्त

त्वम् च ज्ञीत्रम् च द्वाराष्ट्रके स्थापित है । निर्मार र सहस्र राज्य के हैंगल और गार्च गार्च व स्थापित है । नाम अर्थ संस्कृतिस्थित है के स्थाप्त है जो स्थापित केवल मनुष्य-शरीर ही ऐसा सुअवसर है जहाँ वर्म की आराधना के स्वर्ण अवमर मूलक है। मानवता, पवेन्द्रियो की परिपूर्णता, आयंक्षेत्र, उत्तम कुल-जाति, धर्म श्रवण की अनु कूलता, विवेक शक्ति (समक्ष), त्याग प्रत्याख्यान करने की श्रवित और रत्नत्रय की आराधना-ज्ञान,दर्शन,चारित्र की परिपूर्णता और निर्वाण प्राप्ति की योग्यता केवल मनुष्य में ही है। इतनी सारी अनुकूलताएँ आप सबको मिली हुई है। यह कितना वडा सीभाग्य है आपका। इतनी अधिक अनुकूलताएँ होने के कारण मोक्ष आपके नजदीक ही है। आवश्यकता है केवल अपमत्त भाव से त्याग और संयम आराधना की।

आदिनाथ भगवान् ऋषभदेव स्वामी ने अपने ह८ पुत्री को सम्बोधित करते हुए कितना मामिक उपदेश दिया है –

संबुद्भह किन्न बुद्भह, मम्बोही खलु पेच दुल्लहा। मो ह्वगमन्ति राईयो नो सुलहं पुगरावि जीवियं ॥

— स्त्रकृतांगस्त्र

"है भव्यो ! समझो ! वयो नहीं समक्षते हो ? मनूष्य भव के अतिरित्त दूसरी जगह अन्य गतियों में ज्ञान की प्राप्ति नहीं हो सकती है। तुम्हें आत्मिकाम की बहुत प्रधिक अनुकूल सामग्रियाँ मिली हुई हैं। स्वर्ण-अवसर तुम्हारे हाथों में है। जो समय पता जा रहा है, वह वापम लोडने वाला नहीं है। ऐसा मुन्दर प्रजमर वार-वार मिल्ने वाला नहीं है। ऐसा मुन्दर प्रजमर वार-वार मिल्ने वाला नहीं है। इसिटिये इस प्राप्त मुजवनर से साम ल्हाने । प्राप्त-पितास

के प्रधापर अवसर हो। आशी । मोधा तुम्हारे नजरीय है। समाम-माग्र से सिनारे से नजरीय आ गये हा। सब की एस-मा पुरुषाय कोर कर को यम जेटा पार है।

इस मान्य देह स नयम की गांधना बारक आग-दानन पारित्र की परिपूर्व धारावना बारवे अनन्त ग्रीय पूर्व म मोछ मा प्राप्त कर प्रकृति । बर्ज जीवी में स्पति निक्ति विमान से में रीम मामरोपम को उत्प्रान्य क्यान के दिया मुनी की प्राप्त किया है। एक माना जाता है कि यदि इत जीदी की एक जी में संपर्की निर्देश और साम संव की अध्यु और जीवर लाका साथे मीस में बाँठ हार । बाइक इनसी की वसी का नान के कारण से मील में न जाकर सर्वार्थिक विमान मे प्राप्त हुत है। की माधी चूक लाई। है सा स्ट्रान पर पदा कारा प्रशास्त्र के सामान की जिंकड नहीं विवर्त में सी वहीं रह काला पाला है से हैं दिर भा रवाचार के वर्तांप स्वयंत्राक्तका महत्वक्षित व न्यामी तीति । यह अपन्य स्थिति भा मानवासरीर है है। प्राप्त होता है है सिन्दरी करणत है संस्तरहतेन हों। है इस कह है कर को पहले में पाई से मायाहती के कार्य देविको अपर्यंत्र चारच्या है। स्थानित कार्याक्षेत्र हुन्छ ह mriilai 🛊 –

' अक्षे स्पाद १ दा प्रस्था^त

Haberton fit

人数 不不 自我能能 被 女 不一定 使知语 中 中日

इस बहुमूल्य नर-भव को प्राप्त कर मोक्ष को प्राप्त करने के लिये पुरुषायं करना चाहिये। इसमें ही नर-भव की सार्थकता है। तप सयम की साधना के लिए यह स्वर्ण-अवसर्ग है। खाने-पीने या भोग में रस लेने के लिये मानव-अरीर नहीं है। ऐश-आराम में मानव जीवन को विता देना मोने की यानी में लोहे की मेख लगाने के समान है अयवा सोने के पात्र में मदिरा भरने क समान मूखंतापूर्ण है। अतएव मानव-तन को पाकर दान-शोल-तप मावना रूप धर्म की आराधना करनी चाहिये।

यह आराधना प्रतिदिन हो ता बहुत ही अच्छी बात है परन्तु यदि प्रमाद वश हमेशा न बन सके तो पर्व-दिवसो म तो अवस्य ही धर्म की आराधना का जानी चाहिय।

किश्तो का वुकारा:

तिहीं माहता अतः आप पोटे-पोटे ममय के अन्तर की किट्नें भर को ताकि में पोटे-पोटे और घीने-धीरे देवर घर्ज मुक्त हो मण्। साहकार ने यह मान निया। विद्यों के द्वारा कर्ज का मुक्तार मृतिधा से हो गया।

हम मन धर्म रूपी मानुष्ट र गार्जेशन है। हम प्रसि-दिन धर्म की अवस्था नर्थ उम्मा का चुलाना साहित रिन्तु एमा सामध्ये न होने पर त्याहार की मान्द्री के साहित पर्म दिनों में धर्म-ताराधन करने की किर्ना के जारा हम पर्के हा बराना चाहिये पर्व दिन किर्ना के दिन है। धर्म रित के उम्म मृतिस्था प्रदान की है कि धर्म दिन है। धर्म रिप मेरा को न पूका बनी सह पर्य-पर्व कर सन्दर्भ प्रमान म धर्माराधन पर पर्व में हाति दना । ना दिने म मार्गाधक प्रमान कर प्रदेश कर प्रमान कर की का

पर्व दिनों में प्रशास के लालुक्त की संभाव छ :

है। आयु का वध पडते समय जिम प्रकार की भावना और जंसे णुभागुम अध्यवमाय होते है उन्हीं के अनुसार शुभ या अशुभ आयु का वध पडता है। श्रत भवभी रु मुमूक्ष ग्रात्माओं को पवं के दिनों में विशेष रूप से धमं की श्राराधना के प्रति सावधानो रखनी चाहिये ताकि अशुभ आयु के वब की सभाविना को टाल मके।

जिस प्रकार व।पिक परीक्षा के समय छात्र स।वधानी रखता है तो उत्तीर्ण हो जाता है और असावधानी करता है, गफलत करता है तो वर्ष बकार चला जाता है इयी प्र^{कार} क्षायुष्य कर्म के वद्य के प्रति पूरी २ साववानी रखी जानी चाहिये। श्रगुभ आयुका बग्र टाला जा सके इसके लिये ^{पर्व} तिथियो पर शुभ ग्रध्यवमाय रखते हए धर्म की ग्राराधना करना चाहिय । पर्वे तिथियो मे आरम्म समारम्भ के कार्य नहीं करने चाहिये; पर्व तिथियों में हरे शाक-सिंवन्यों और फल-फूलो का सेवन नहीं करना चाहियं झिवत अनुसार तप करना चाहिये। अठारह देशो के राजा कुमारपाल ने वर्पा-चातर्माम के चारो महीनों के लिये हरे शाको का त्याग कर दिया था, वह एवामना तप करना था. उसने वेवल १ विगय रखी यी रोप का प्रत्यास्थान कर दिया था। विज्ञाल राज्य का स्वामी होते हुए भी युवारपात राजा ने अपना जीवन हितना धर्ममय बना रसा था यह उत्त बातो से विदित होता है।

के क्षयोपयम के अनुमार होती है। पुण्य की प्राप्ति धर्मा-राधन से होतो है। धर्म की आराधना के बिना पुण्य की राधि सचिन नही हो मकती और पुण्य के विना धन की प्राप्त नहीं हो सकती । आप लोगों को अपने ग्राप पर, ग्रान धर्म पर, अपने पुण्य पर विश्वास नहीं है, श्रद्धा नहीं हैं। महा-पुरुषों ने कहा है कि 'धर्ममिद्रे ध्वा सिद्धि ' अगति धर्म की साधना करने स अवश्य ही सफलता प्राप्त होती है। इम वचन पर आपकी श्रद्धानही है। पग्न्तुयह ध्रुव सत्य है। कूप में जल होगा वही क्यारे में अ।वेगा, टकी में जैसा होगा वही नलो में आवेगा। इसो तरह धर्म और पु^{ण्य की} राशि सचित होगी तो ही व्यापार आदि मे लाम प्राप्त होगा। अतएव 'धर्ममिद्धे ध्रुवामिद्धि' की बात पर विश्वास रसकर इन पर्व दिनो में अपने व्यापार-प्रधो को वन्द रसकर, मावध श्रारम्म समारभो को छोडकर, तप-त्याग और ऋहिंसा धर्म की आराधना में मलग्न रहना चाहिय । ज्ञान दर्शन-चारित्र की आराधना अन्त करण पूर्वक करते हुए पर्व को सफल बनाना चाहिय ।

'रयाद्यादाशयदोत्तमे'ः

प्रारम में जो बतोक वटा गया है उसमें तीर्य द्वा के निये 'स्य द्वारानयरोत्तमें' निर्णयण दिया गया है। तीर्य पुरदेव स्थादाद गिटान्त के महान प्रतित हैं और अभय-दान के सर्वे श्राट उपदेश्या हैं। न २ वत उपदेशन हो है जिन्द निर्मे होयम में अहिंगा और स्याहण्ड का चामरण कार हमार् ने पोंथों के समझ उन्होंने लगमकात सीर ममस्या का राजवन होरिक प्रावने उपस्थित किया है।

भगपान मह दोर धेन की नहींन ककी हुन गुहालाग प्रति में कहा गया हैं--

उर्दू शहेषं तिरियं दिसास, तमा य जे घानर जे य पाटा र ते फिबफिबं हि मिषक्यपने दीने व धरमं मिषपमुदाह ॥

केंबी, बीवी और विश्वी विद्यादी में व्यापी यह होग ^{क्षादर} प्राची है से संद निकास र है। इस्त्राधिक क्या की परिषा श्रीय—परामा शिष्य है। मधी भीव ३४२ वर विलाह निर्मित्री हमस्थिये बहु दिस्य है । यह क् जनकी कार्यकारी-पिर्विने वेदल में मुन्ति है, क्षान क्षा देव पर्योग का अला है, भागे मन्त्र पर्याद सं वाली विशोधन वर्षात्र से और संस्त भारक प्रयोग से । इत त्यांकों के भेट शालता द्विया । है क त्रण प्रदेश के हेल के केले केलिया के प्रदेश केलिया के केलिया के किल्ला में धारा बर्द्रमान व क्षताव की फालवार महत्वम् राप रा प्रकृति निया है। इन्होंने निष्वारित्यन्त्रण रहाहार य सुरवर्ष होत Statement of the second of the second that the contract of me (se du fact à e chi de " ding uen e n'e tich e the the allower a first arresting them that the style first 医乳腺素病 经收益的过去式和 声声 海南 斯多尔 化氯化二十分苯 斯斯二部的作用

जनत गाया में प्रमुमहावीर ग्वाभी को स्याद्वाद के खीर अहिंगावमें के महान् प्रवत्तंक और जपदेण्टा के ह्य म निरूपित किया है। वस्तृत तीर्थं द्वुरो द्वारा प्ररूपित जंन धर्म के ये दो मौलिक सिद्धान्त है। अग्वार में अहिमा और विचार में स्याद्वाद (अनेकान्तवाद) जैन धर्म की मौलिक विशेषता है। इन्ही दो विश्वपताओं को सूचित करने क लिय 'स्याद्वादा-मयदोतमें." विशेषण प्रयुक्त किया गया है।

स्याव्दाद का महत्त्व:

अनन्त ज्ञानियों ने बस्तु का स्वस्य अनन्त धर्मात्मरं वताया है। प्रत्यक पदाथ में अनन्त धर्म हैं। पदार्थ की इस विभिन्न धर्मा सकता के कारण हो उसका ज्ञान भी विविध स्पी में होता है। विभिन्न दृष्टिकोणों में एक हो वस्तु विविध स्पी में दृष्टिगोत्तर होती है। यही सब मतभेदों का मूल होता है। मभी धर्मों, पत्थों, दर्शनों और मतो में जो अन्तर पाया जाता है उसका कारण भी दृष्टिकोण का अन्तर ही है। कोई दर्शन आत्मा को मानते हैं, पोई धर्म-दर्शन आत्मा को नहीं मानते, कोई प्रत्मा मों नित्य मानते हैं, पोई अकर्ता मानते हैं। बोई आत्मा को बनी मानते हैं, पोई अकर्ता मानते हैं। देह-परिमाण। इस प्रकार विभिन्न मान्यताओं में बारण सब इतर-पर्म-दर्शन कार परस्पर में विभाइ परते हैं सब अन्ते-जाने पक्ष का कार परस्पर में विभाइ परते हैं सब अन्ते-जाने पक्ष का कार परस्पर में विभाइ परते हैं सब अन्ते-जाने पक्ष का

नाम्य बादनीयमार और जिन्हामार रहना है। एनद्भाव भारा है और बलह का युवान होता है। यास्तिक दृष्टि मैं जब हम देगते हैं ता विदित्र तोता है कि प्रायक पत वस्यू ण एग ही जन को समग्र गढ़ समल देने की भूग राज्या है। यह मान में एक इस को ही मस्त्री समय कर रह इस इस क निस्कार करता है। याद यह तश की वस रव मानवाद प्रिमें नेती का विकास न गर मा गर नहीं पास है पहला "ये प्राप्टे तभी का अध्यक्षित करता है की प्रमु विध्या हो भिष्य है। को मुक्तान ताह र वाहते है वे बन्तान र साम ^{में} प्रदुषार तानी के एक तर सुद्ध, चाक देश, दूरा करीं। का हीं हिंदी समेता दि है किया है है है है है है है है से साम स्थाप ो हासी है। ग्रहतन्त्राई जीत, नारत गीमनान, नेगादिक, विमीयक प्राथान वर्तन स्वयन क्षेत्र प्राथी विकास गाम प्राचेत करते काल भीते क समित है अवहैल हिंगायांचा उपायांस में। इंदिरेड प्रवृत्त स्वाद अपूर्व अपूर्ण के बण विश्वपाल प्रवृत्त अपूर्ण पूर्ण पहे A BERTAR BERAL Tert bin Edigite de ret in man bit. सर्वेदण हार्दिका विकास क्षेत्रमान क्षेत्रमात है हार्दिकारकी के अने हा है है है अभूद का ताम पहिल्ला होते यक हिन्द अनत्त न्या है र

 कर उनमे सम्मिलन करा देता है। इसी को जैन परिमापा में विभिन्न मतो का समवसरण कहा जाता है।

विचार भेद होते हुए भी, मत भेद होने के वावजूद भी मन-भेद न हो यह स्याद्वाद का हमारे दैनिक जीवन में सदुपयोग है। स्याद्वाद का सिद्धान्त हमे आपस में प्रेम भाव से रहने की प्रेरणा देता है। विरोधियों के साथ भी सह-अस्तित्व की शिक्षा देता है।

आज का युग सगठन और एकता का युग है। सगठिन होकर हम शिक्तशाली हा सकते है। विभवत रह कर हम क्षीण होते हैं। अत आवश्यकता है कि हम स्याद्वाद के गमं को समझे और परस्पर प्रेम का विस्तार करके जैनशासन को शिक्त सम्पन्न बनावें। स्याद्वाद का स्रमीध कथन हमें मय विरोधों के प्रहार से बनावेगा। इस महान् रसायन से गुन्ट हो हर आप विषय में जैन-शासन की वैजयन्ती फहरीं सकेगे।

आत्मवाद और कर्मवाद :

आत्म-करयाण के अभिनापी मुमुक्षुओं को आहमा और कमें के स्वस्प को भछोभानि समझ तेना चाहिये। जैन दर्शन में आत्म तत्व की गहरों विवारणा को गई है। आहमा का स्वस्य बनाने हुए कहा गया है –

यः वर्त्ता कर्मभंदानां मात्ता क्रमंप्रनम्य च । मंगनां परिनिर्वाता महास्मा नास्य लहारः । भारत्मकृत्यंत्रां म (शास्य पातां समुष्टपण)

केन सारमानुसार प्राप्त हमी का कानी है और करे-यात का भोषता भी है। यह भवनतर में समय करने काणा और कामैबन्धन से सहद होने बादा भी है।

मारव दर्श संपंता की सुवान्त्र ब्राह्म किए। राजपा है। जो सुबार-व निरंप हो हो है अपने दिया का लाउप कीला है कारत्य वह प्राथ्या का पश्ची सार्या है । प्याप मिल्लानामधार व्यवस्ति हार्स है और आप भारत है । अन्य मीत्य भी धन्ति वह राष्ट्र है खुरुक्त रह नहीं है जन अस्त्रक 學學 化硅基主动性 軟体性 相關 电二电流 中特色 的 भरेष्ट्रणह भी भूनी हह सकता है । एवं कर्नी हुए नह है हहने भावना होती है। स्रोतन प्रश्नी देश करते हैं और हाल का अपना क न्द्री अहा अनेवह हैनाए अहार बादिया की हैनाय है न हार्नेक हैं राज राष्ट्रांद सहार सब साह बार्ड के ये उसके करेन्स ही सबस है और ने भीतराज र इंडी, पान "संबर एए हाँ राष्ट्र है 사람이라 범인이 되었다는 그는 것은 것은 것은 작은 일은 가지는 그 중사업가다 산년만 ब्रोह प्रदेशक प्रमुख्य है है में से प्रकारित है से ब्रोह के प्रकार के प्रकार के प्रकार के क्षेत्र की कार्य कुर हैं। अन्य, ब्राह्मपुर्वक बीहें। बहरते सहस हम हिम हिम पहल द K B. K with the F F my K Ind Vet in which in 翻村惠县

वीद्ध दर्शन एकान्त अनित्यवादी-क्षणक्ष्यवादी दर्शन हैं। उसके मत से अत्येक पदार्थ क्षण क्षण में सर्वथा नष्ट होता रहता है और नया नया उत्पन्न होता रहता है । यह अनात्म-वादी दर्शन है। यह मान्यता भी विचार की कसीटी पर सही नहीं उतरती है। ऐसा मानने पर स्वर्ग-नरक, वध-मोक्ष की और लेन देन की ज्यावहारिक व्यवस्था भी नहीं बनती है। क्योकि यदि प्रथम क्षण म हो पदार्थ नव्ट हो जाता है तो जिस पदार्थ ने किया की वह उसका फल भोगे विना ही नष्ट हो गया और जिसने फल मोगा उमने वह कर्न किया ही नहीं [।] जिमने दिया और जिसने लिया वे दोनो यदि क्षण में सर्वया नष्ट हो जाते है तो देने लेने वाले दूपरे ही हो जाते हैं विमने लिया नहीं उमे देना पडता है और जिसने लिया वह उसी क्षण नष्ट हा गया ' यह सारी अव्यवस्था हो जाती है अत कृतकर्म का प्रणाश और अकृतकर्म का भोग दोप होने के कारण क्षणमगव.द मानना ठीक नही है।

जैन दर्गन दोनो एकान्तवादो का निराकरण कर सम्यक् सभावान वर देता है कि आत्मा द्रव्य की अपेक्षा नित्य है और पर्याय की अपेक्षा सिन्य है अनम्ब वह परिणामी नित्य है। ऐसा मानने में हो नो ह-परनाक, वर मोक्षा, निन्य जादि की सार्ग ब्यवस्था मुचार कर में समन होती है।

जैन दर्गन का नमेंबाद भी प्रमाणाति तीर नके समा है। यह कहना है कि समार के विविधना का कारण कमें हा है। सामानी राज्या विवे कारे की लग वा कान करें है मसार का सुरा -इसा ६८वा छाउँ। उपच रूप ३०८ ४०मा जा सिभीता है। यह स्वयं प्रशी क कल्पना से पत् पत्र नामनार्ट मिस्यों में अभा है और पूर्वा ए यन्त्र का काले प्रदन प्रयामि में पोड़क्क म्हर की यन जाता है। कोई द्वार दारिय थरमा को मुखी यह दसर नहीं उसर महका । किया का जाय मे क्षा की कि किया का कार्यान में सुनी नहीं है। सन कर हा हा है हा राजभी के वह साधे हारा राहा है शहर ३० ४ ४८५० ह हीं । ब्रह्मानक्षा कर कारणायां विदेश, बार प्राप्त, प्रोप्तर-शिक्षा प्राप्त कारणाया कारणाया मधे प्रकृति द्वारित्यानी नाम सभा है। नाम सभा रह पर धाला व्यवस्थान कर हो जाता है है है जा प्राप्त है जह प्राप्त बार्की की विषय कर देश है, जन्म करावा कर दानकर सुबन, प्रवाद, भीत और कप्रदेश के उन्हार पूर्व राज्य है है। पह Ett it tefde gint da eitern be mant be e bitait, a. nab. \$j\$pertskij라도 werest vitra sea na a 항도 \$4.50 km - Lacks Alt Jak tul Est to the short to the term of the section of the with the first of the second o 地口中天主体外面 经股本人产品的 医四次 电电子管 超级 经代本 Sp & skopt when the transmission to 8 & 1 & 1 and 2 a subject to me 과 발대 씨는 : 발표 보다 집대를 보는 사람들이 나온 동국 경우 다모아야 합니다고 보고 다는 그 모

इन तीनो की सम्यग् विचारणा और सम्यक पिणिति ही सर्वोदय है।

श्रातमा का स्वरूप जानकर मुम्धु श्रात्माओं को सव प्रकार की हिसा और कर्मवन्धनों से विरत होना चाहिये। ससार के सब प्राणियों को आत्मवत् समझ कर किसी की मनमा, वाचा, कर्मणा दुख न देना श्रित्मा है। हमें सुख प्रिय हैं, दुख अप्रिय हैं, जीवन प्रिय हैं मरण श्रिप्य हैं। इसी तरह सब प्राणियों को सुख और जीवन प्रिय हैं, दुख और मरण अप्रिय हैं; ऐसा जानकर हिसा में निवृत्त होना चाहिये। सब जीवों को आत्म-नुला पर तोलो। यही परम धमं है। यहां तीर्यंद्भर देवों के उपदेश का सार है। कहा गया हैं—

एवं खु णाणिणो मार जं न हिंसइ किंचण। स्रहिंसा समयं चेव एयावंतं विजाणिया॥

ज्ञानी के ज्ञान की सार्थकता इसी मे है कि वह किसी प्राणी की हिंसा न करे। अहिंसा ही सब सिद्रान्ती का सार है।

अहिना और स्यादाद ने उपदेण्टा तीथेपुर देवो ने पट् अप्टान्हिका कही है। पहित्र कहा जा चुका है कि आमीज और चैत्र माग की अप्टान्हिका जायवती है। उनमें देव श्री नन्दी जार द्वीप में जाकर भव्य और दिव्य महोत्मय की आयोजना करने जिनेस्वर देव की बहुमान एवं मिल पूर्वक पूजा-आराजना करने है। मनुष्य होक म श्रापक श्री काराजन

मार्ग्यापन साथ करने सिद्ध कर की गृह नवास्त्री की समान्य यागत करती है।

टावपत् निरुपणः

कर-त, निद्ध, सामावे काण्याय भीर मामु य पत-परमेण्यां बर्जाते हैं। हान, दशन, वारित और गर-व नार मोग के प्रचान जम होने के कारण परम उपादय है। नेमा वि कार मदा है—

सामं च दमनं सेव चित्र च त्र वो नहा । एम मग्गो नि पण्णनो जिल्हेंहि परदेखिहे ॥

प्रकार कालो प्रवेश-सबैदारी क्लिक्टक देवी है। हाल-प्रवेश फारिक कीक क्ष्य की मोश्रासाओं करा है। प्रकार प्रकार भीक बार सोशा के अला को स्पन्न कीचे हैं। यह जनपट प्रका कामक्तिक हैं। इसकी काकादण भी व्यक्त का प्रकार हिल्ली है।

स्था प्रशेत के प्रवाद प्रवाद प्रवाद के हैं के प्रवाद प्रशेत के प्रवाद प्रवाद के के प्रवाद प्रवाद के के प्रवाद प्रवाद के के प्रवाद प्रवाद के कि प्रवाद प्रवाद के कि प्रवाद प्रवाद के कि प्रवाद प्रवाद के कि प्रवाद के

अन्तर्गत है। आचार्य भी हिम्मद्रमूरि ने इमीलिये कहा है-

भववीजांकुर-जनना रामाद्याः चयमुपागता यस्य। ब्रह्मा वा विष्णु वी हरी जिना वा नमः तस्म ॥

अर्थात्-भव रूपो वीज के अहर उत्पन्न करने वाहे राग-द्वेप आदि जिनके क्षय हो चुके हैं उन्हें मेरा नमस्कार है फिर भले ही वह ब्रह्मा, विष्णु, शकर या जिन हो।

कितनी उदारता है इस पच परमेट्ठी-पद में ^ग

उक्त पाच पदो मे अरिहन्त और मिद्ध अनन्त केवलिं ज्ञान के स्वामी होने से ज्ञान के प्रतीक है। आचार्य चारियान् चार के धनी होने से चारिय के प्रतीक हैं। उपाध्याय सूय-मिद्धान्त के पाठक होने ये तथा धमं से डिगते हुए प्राणियों को स्थिर करने के कारण दर्गन के प्रतीक है और साधु भगवन्त तपाचार में निष्णात होने से तप के प्रतीक है।

अत्य विवक्षा में इन नव पदो का देव, गुरु, धमें में समावेश किया जाता है। अरिहन्त और सिद्ध पद का देव में, आचार्य, उपाध्याय और साधु को गुरु में और जान-दर्शन चारित्र-तप का धमें में समावेश हो जाता है। अरिहन्त मुक्ति के मार्ग दर्शक हैं, सिद्ध मुक्ति मार्ग पर नक्तर मजिल पर पहुंच चुई है, आचार्य मुक्तिमार्ग ये पियकों के नेता है, उपाध्यायती मुक्तिमार्ग के शिक्षादाता है और साधु-मुक्तिमार्ग के शिक्षादाता है और साधु-मुक्तिमार्ग हाथ पर ह कर मित मार्ग पर अथगर वरने ता है।

हन परम उपकारने, महा शायाणकारों पत्र परनेष्ठों भगपति की काराधना यो श्रापन श्राप्तिकातिहरणों में प्रित्-भगपति की काराधना यो श्रापन श्राप्तिहरणों में प्रित्-भाष प्रदेश मां शादी है नाशि लमारों श्राप्ता भी उनने पद चिल्हों पर चलक अपने परम और जन्म माल गह्य का मान का महा ।

स्य प्रमृत नव्या प्रतिशिक्ष से कारी परिण पृष्टि गिरिपिती पर निरुद्ध विकार काम है । द्वा पान सन्तर्भ को में भागपत्र बारते से हा कान्यदिश सन्ने में पर्नुष्या महाप्र्ये के भागपत्र हो। सम्बद्धि है । कान्युक्ष भाग्यपाणी मानाहु-भाग है हुए कान्या कर स्वयंत्रित स्वयं प्रतिश सम्बद्ध विकास सम्बद्ध करा है। कान्युक्ष मान्युक्ष महो स्वाद को प्रति सन्दर्भ ।

पांत राजकीय :

्रे र प्रोध्य पर (१८४६ मधार अध्यक्ष १८४५ मा है १०० प्रवस्त १९४५ में अध्यक्ष अध्यक्ष के प्रश्ने अध्यक्ष अध्यक्ष है । अध्यक्ष है । ये ४० प्राप्त के के

and restraction

E . T Bresting Have a

Se week gat ben him

1 f = time we do je je je je

and a proper to the same

अब क्रमश इन पाच कर्त्तव्यों के विषय में विस्तार से प्रकाश डाला जाता है ताकि इनके सम्बन्ध में विशेष जान-कारी हो सके और इनके आचरण का मार्ग प्रशस्त वन जाय। अमारि-प्रवर्तनः

विश्व में सर्वाधिक प्रियं वस्तु अपना प्राण है और सर्वाधिक अप्रियं वस्तु मौत है। संसार के सब प्राणी—बाहें वे वस हो या स्थावर—जीवित रहना चाहते है, मरना कोई नहीं चाहता। प्राण सबको प्रियं है, मौत सबको अनिष्ट है। इम वास्ते प्राणरक्षा रूप अहिंसा सबये बडा धमं है और प्राणाति—पात—हिंसा सबसे बडा पाप है। इमिलये ग्राचाराम सूत्र में तीर्थं द्धुर भगगान् ने फरमाया है,

"से वीम जे छाईपा, जे य पहुपन्ना, जे य छाग-मिस्सा छरहता भगवंतो, ते सन्वे एवमाइक्छंति, एव भासति, एवं परणाविति, एवं परुविति-सन्वे पाणा. सन्वे भूषा, मन्वे जीवा सन्वे सत्ता, न हंतन्वा, न छाजा-वेयन्वा, न परिचित्तन्वा, न परियावेयन्ता, न उद्वेयन्वा। एस धम्मे, मुद्धे, निइए, मामए, मिम्न लोगं खेयन्नेहं प्रोइ्यं।

प्रविच्या अर्थात्-भूतकात में जो अनन्त तीर्यक्रर हो चुके हैं, वर्तमान में बीम विहरमान तार्यक्रर है और जागामीकाल म भनन्त तीर्यक्रर होग वे सब ऐसा कहते हैं, ऐसा बालों है, ऐसा बतुजाते हैं, एसी प्रधाणा गरते हैं कि इंग्लिय आर्थिक स्टू प्राणियों को, सन्वानिकास कर भूषी को, प्रेनिज्य जीवो का भीर पृथ्योकास सादि स्वयों को सारका नहीं पार्विय, उन पर क्षामा नहीं पात्रामी (प्रशाप नहीं गांगापर) पार्विय, उने दान पी प्रश्न नहीं रमाना पाहिये, उन्हें प्रश्निय नहीं देना पार्विय, और जनका कर नहीं करना प्राणिय । यहीं सुर्वे हैं निष्य , है, पाष्ट्रप रहें । त्यन् के प्राथा का द्वारा क्षान्य र वर्षण भयवत्युं में यह पहिनामय सुर्वे प्रश्न किया है ।

ा अहिनाह त्रवाह नांची हिन वे विषय में नापाण मुंध नांची ही या अमान देन अने अमान वास माने हैं। या अमान देन अने अमान वास माने हैं। या अमान देन अने अमान वास माने हैं। या अमान वास का माने हैं। या अमान वास का माने वास का माने वास का प्राप्त का माने वास का माने वा

. आतिकत रहता है। दूमरो की हत्या करन वाला म्वय किसी का शिकार होता है, वैर से वैर की परम्परा बढ़ती है और भय से भय की वृद्धि होती चली जाती है। अभय से ग्रभय को परम्परा बढती है। अनएव स्वय की मुरक्षा और निर्भयता के लिये भी दूसरो की रक्षा और अभयदान देना हितावह हैं।

श्रभयदान को महिमा बताते हुए कहा गया है -

दाणाण सेष्टं अभयप्ययाणं सच्चेसु वा अण्यवन्तं वयति । तवेसु वा उत्तम बंभचेरं, लोगुत्तंमे समणे गायपुति।।

सब दानों में असयदान प्रधान है सत्यों में निरवद्य ववन प्रधान है तप में ब्रह्मचर्य उत्तम ह और लोक मृश्रमण भगवान् महाबीर देव सर्वोत्तम है।

धनदान, अप्रदान, पानदान, औपधदान,ज्ञानदान, मुपात्र-दान आ'द समस्त दानो की अपेक्षा अभयदान सर्वश्रेटठ हैं। श्रभय-दान मूल है और शेषदान उसकी रक्षा के सिय बाउ के समान है। ग्रनदान, पानदान आदि दान का प्रभाव वर्णिक होता है। कालान्तर में यह क्षीण हा जाता है। ज्ञान दान की सायकता असपदान में ही है। '०य गु गाणिना मार्ग जै न हिंसई केंचगाँ' ज्ञान की माथकता अस्यदान र राज्य है। मुत्रात्र दान का महत्त्व भी अभयदान से ही है। अभयदान से दाता पट्नाय क बता माधु हा ता मुराब है। अभयदान क मामने कोडि-क प्राप्त के स्वर्ण का जीवनदान मन कोई एक जाणी का •वर्ग । । यद करीट म्बर्ग म्हाण या जीवनदान म स कोड एक । गिज यद करीट म्बर्ग म्हाण या जीवनदान म स कोड एक । गिज

निरंदी नहां नाम हा यह बराग रशारे गुण्या, राष्ट्रण भागनतान ही तिना चमप करवा १ प्रथम असप्रधान के, मेरेश्र सिक्ष भी जाना ति ।

परमार्था लुपारपान राजा का अस्य प्रवर्धन :

स्मानि, सम्प्रकान क्षित्र की राश्च न कार्य करिया, में स्मानि स्मानि स्वाप के स्वापित स्वाप्त नास्त्र के स्वाप के स्वाप स्वाप के स्वाप स्वाप के स्वाप स्वाप के स्वाप स्व

Less not total birthe and many on a sign of the second of

होते जा रहे हैं। पानी छानने का वस्य कज़्मी से या उपेक्षा के कारण चाहिये वैसा गाढा और छेद रहित नहीं होता। गलने में छेद पड जाते है तो भी उमी से काम निकाला जाता है। उसे बदलने को तरफ ध्यान नही जाता। इसी तग्ह घर की सफाई के लिय रखो जाने वालो बुहारी मुलायम हो^{नी} चाहिये ताकि उससे ज वो की विराधना न हो। परन्तु आज-कल भावक-भाविकाएँ खोडे की बुआरी प्रयोग में लाते हैं. यह भयकर भूल है। खोडे की बुहारी वापरना घर को कत्ल-खाना बनाने के समान है। आजकल श्रापलोग अपने गरीर को पौछने के लिये तो टिकिश टुवाल जसा नरम और मुलायम वस्त्र का प्रयोग करते हैं, टेरेलीन के मुलायम वस्त्र पहनते हैं और दूसरी तरफ लोडे की युहारी का प्रयाग करते है यह कितनी अविवेकता है। घर की मकाई के लिये मुलायम मुज की बुप्रारी, सन की याऊन की पूजनी से काम लियाजा सकता है।

द्यास्त्रकारों ने फरमाया है कि यदि श्रावक-श्राविकाएँ उग्नोग, विवेक और यतना से काम ल तो वे बहुत से पाप में वस सकते हैं। विवेक और उपयोग के श्रमाव में गृहस्य का घर जांबों का वध-स्थान बन जाता है। पहले अमावधानी गदगी या प्रमाद के कारण जीवों की उत्पत्ति के प्रति ध्यान नहीं दिया जाता है और उत्पत्ति के बाद छों छो छो। पाउडर या अन्य गारम औपधियों का प्रयोग कर उनकी दिमा की जारी है। यह कितना अधिक के

मिलिश्च निर्देश करवार प्रायम कर्ता उपक्रिक कर्ता निर्देश वाद्य क्षित कर्ता निर्देश कर्ता प्रायम कर्ता कर्ता कर्ता क्षित कर्ता क्षित कर्ता क्षित क्षित कर्ता क्षित क्ष्री क

प्रभाव के क्षेत्र के स्थान के

to the first and the set of the parties of the section of the section of

क्षेत्र स्था विश्व के स्था के स्था देश- श्री के प्राच्या की स्था के स

聖代教育 建设备的 事情不知 的 新江 人名英巴西斯特尔 人名马克尔

 जीवन प्रदान किया, राज्य भर मे करुणा का विस्तार किया और जैन-शासन को महान् प्रभावना की। सूरि-सम्राट और मुगल मम्राट् के सम्पर्क मे निमित्त बनी हुई सुश्राविका चम्पा विहन का शुभ नाम भी इन पवित्र दिवसों में स्मरण आये विना नहीं रहता, जिमने अपनी छह मास की कठोर तपश्चर्या और विचक्षणता से श्रकवर बादशाह को अत्यि धिक प्रभावित किया इसी चम्पा विहन के द्वारा गुरुवर्य श्री हीर सूरिजो महाराज का गुणगान सुनकर अकवर बादशाह ने उन्हें आदर पूर्वक आमित्रत किया और उनके दर्गन एवं धर्मश्रवण से प्रभावित होकर अभयदान का प्रवत्तन किया। वह घटना इस प्रकार है —

सुश्राविका चम्पा बहिन महा तपम्बी थी। बहैं तपिस्वनी होने के साथ ही साथ मार्ग की जाता भी थी। उसने छह मास के लगातार उपवास की महा तपदवर्या की थी। इतनी लम्बा तपश्चर्या इसके बाद किसी और ने की ही यह मुनने में नहीं श्राया।

एक बार चम्पावित दर्शन के लिये जा रही थी तब मब भी महोत्सव पूर्वक माथ में जा रहा था। वरघोड़े का दृश्य बड़ा मतीहर और भव्य था। मकल श्री मन, बह बड़े अगगण्य कता और विद्याल जनगमूह का चरा-गमारोह (जुलूम) के न्य में एक वित्त को घमप्राम के माथ मन्मान पूर्वक के जाते हुए देव कर महत्त हो प्रत्येक को उमके प्रति खाल्येंग हो जाता हुए देव कर महत्त हो प्रत्येक को उमके प्रति खाल्येंग हो जाता था। महत्त्र हो कर के भी यह दुन्म देगा और उमका स्थान था।

विधि-विधान की समुचित व्यवस्था कर दी गई। वादशाह को विश्वम्त व्यक्ति उसकी दिनचर्या का सावधानी पूर्वक अवन्ति का कि वादशाह को खबर पहुँचाते थं। अपने विश्वस्त व्यक्तियो द्वारा जाँच करा लेने पर वादशाह की ग्रका का निवारण हो गया। एसी कठिन तपश्चर्या को देखकर वादशाह का हृदय हिल गया। एक दिन भूखा रहना कि होता है वहा लगातार छह मास तक गरम जल के निवाय कुछ भी न खाना न पाना कितना वडा कमाल है। कितना अदमुत पराक्रम है। वादशाह के हृदय मे चम्पा वहिन के प्रति बहुत बहुमान पैदा हुआ। उसने बहुत सन्मान पूर्वक उसे बुलाकर पूछा कि - 'इतना कठिन तप तुम किस के प्रभाव से कर सकती हो?'

चम्पा बहिन ने उत्तर दिया—'यह महिना मेरी नहीं परन्तु मेरे देव और गुरु की कृपा का परिणाम है।' हमारे सघ में देव और गुरु का स्वरुप उस प्रकार कहा गया है। देव गुरु का स्वरूप बताने क परनात् उसने कहा कि ऐसे गुरु वर्तमान में धाचायं मगवत श्रीमद् विजय हीर सूरीस्वरजी महाराज हैं।'

यह मुनगर बादशाह क मन में ऐसा विचार हुया कि-कित गुरु के नाम-स्मरण मात्र से यह बाई इतना कठिन तर धैर्ष पूर्व के प्रमानवदन रहकर कर संगती है, उन गुरु के दर्शन मुझे बनस्य करना चाहिये। भागित्व ने प्रत्यक्ष द्वाव के नामक दिन कि स्थित का मुद्रित की किया ने कान महिला के साथ का नामक पूर्व प्रति की एक प्रति का महिला के साथ का नामक प्रति की की महिला है। एक प्रति के महिला महिला के प्रति का महिला है। एक प्रति के प्रति की प्रति की प्रति का महिला है। एक प्रति की प्रति की प्रति की प्रति की प्रति का महिला का प्रति की प्रति की

प्रकृति के से तर क्षिण के स्वाप्त के प्रकृत के स्वाप्त के कि कि स्वाप्त के स्वाप्त के स्वाप्त के स्वाप्त के स् प्रकृति के स्वाप्त के स् स्वाप्त के स्वा महाराज को हैरान-परेशान किया था। उसे मान हुआ दि मैने उम समय कितना वडा अपराध विया था। उसने उम प्रसग की स्मृति दिलाते हुए ग्राचार्य महाराज मे क्षमा मानते हुए कहा कि-'मैंने तो आपके प्रति पूर्व मे बहुन ही अमद-व्यवहार किया है किन्तु आप उसका व्यान न करते हुए मुझ क्षमा करे और मेरा कत्याण हो एमा कीजिये।'

आचार्य हीर सूरी ज्वरजी महाराज ने कहा—'इस समय तो क्या, उस समय भी हमारे हृदय मे तुम्हारे प्रति जरा भी असदमाव नही आया । हम सब जीवो का कल्याण बाहते हैं, भले ही वह हमारे प्रात श्रद्धा रागे या असद्भाव रखे। हमारे मन मे किसी के प्रति विद्वेष श्राता ही नहीं। हमने उस नमय भी तुम्हारा कल्याण चाहा और इस ममय भी कल्याण चाहते हैं। जैन साधु मार्ग्ने वाले और पूजने वाले—दोनो पर समभाव रहते हैं।

इम उत्तर को मुनकर सूवा बहुत ही प्रभावित हुप्रा श्रीर उसने बादशाह श्रुक्वर को लिया कि-'फकीर तो बहुत देखें है परन्तु अवतक इनवे जैसा फकीर देगने सेनही झाया।

ययात्रम विहार करते हुए आचार्य भगवत फतहपुर प्रारे जहाँ बादबाह या । यहाँ के सब ने भन्य स्वागत विया। यहा जाता है कि स्वागत का जुन्म छह भीत तस्वा धा। मझाट् अपबर ने सूरि सझाट् या बानदार राजकीय स्वागत विया। अमीर-उमराव सामने गय। बढा ही जान-दार क्ष था वह !

The work to a many or a many by a many to a ma

व्यक्त कर सकते मे उसने वहुत प्रमन्नता मानी थी। यह भी कहा जाता है कि वह १। सेर वकरे की जीभ प्रतिदिन खाता था। इतना हिंसा प्रेमी मुगल-शासक आचार्य भगवत श्री हीर-विजय सूरीव्वरजी म. के सम्पर्क मे आकर किस प्रकार दयावान वन जाता है यह उसके जीवहिंसा निपेध सम्बधी फम्मानों से विदित हो जाता है।

एक बार सम्राट् अकवर ने गद्गद् होकर ग्राचार्य महाराज से निवेदन किया कि—'मैंने प्रापको वहुत दूर देश से प्रामित कर बुलाया, आपने पद्यार कर मुझे कृतकृत्य किया, धर्मोपदेश के द्वारा सही मार्ग बताया परन्तु आपने मेरी गोई चीज श्रव तक अगीकार नहीं की है अत कुछ भो मांग कर आप मुफ्ते कृतार्थ कीजिये।"

वादशाह के आगह को देगकर श्राचार्य महाराज ने अवमर पाकर कहा 'हमें किसी भीतिक पदार्थ की हामना नहीं हैं। हम तो यही चाहते हैं। क जगन के सब जीवों का करमाण हो। तुम्हारा भी बन्याण हो और जीवों का भी करमाण हो। दमलियं तुम्हारे पूरे राज्य में जाय-हिसा का निपेश होना ही चाहिये। वम यही हमारी एक माम है।'

फतहपुर के नानुमीम में आचार्य महाराज न बादशाह को पर्युपणा क खाठ दिन जमारि का उपदेश दिया। आनार्य महाराज की निम्पृहता और दयात्वा देगानर उपने तनगाल 'जाठ दिवस मापने और वार हमारा वरफ के यो वारह The same of the sa

हो सके, करना चाहिये। यह स्व-पर कल्याण का अमीप साधन है ग्रहिंसा भगवती की ग्राराधना इहलोक परलोक में परम मगलकारी है।

साधर्मिक वात्मल्यः

श्री पर्युपण-पर्व के पाच सत्वर्त्तव्यो में से हूसरा सत्कर्त्तव्य साधिमक वात्मल्य कहा गया है । ''समान धर्मी येपाते साथिमका 'अर्थात् एक ही धर्म के अनुयायी परस्वर मे साधिमक कहलाते है स्वधमी वन्धुओं के प्रति प्रेम, वात्मत्य, बहुमान तथा भिवत होना साधिमक वात्सल्य कहलाता है। धार्मिक और सामाजिक दृष्टिकोण से साधिक वात्सल्य का बहुत अधिक महत्व है। सघरचना और सघ की दृढना मे इस अग की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। सप की महनीयता इस बात से स्पष्ट है कि उमे शास्त्रकारो ने भगवान्' कहा है तथा नन्दी-सुत्र के प्रारभ में विविधि शुभ उपमाओं द्वारा सघ की स्तुति का गई है। "न घर्मों धार्मिकैविना" इस उनित से भी सघ का महत्त्व प्रतिभासित होता है। मध के अन्तर्गत साधु-साध्या-श्रावक-श्राविका का समावेश होता है इस चतुर्विध सघ की सेवा- शुश्रूषा करना, परस्पर में सद्भाव, स्नेह और बहुमान रसना, भिवत करना और निष्काम प्रीति न्याना पारस्परिक मीहार्द रति हुए एक दूपरे की मह यता करना सार्पामक-वाहमन्य है। इस अग की श्रारायना उरने से हदग में धर्म के प्रति शहा बद्दती है, दशैन की यदि होती है, हरस में प्रति शहा बाती है, अल्ब करा म मुक्तेमल प्रतियो सा विद्यालना जानी है, अल्ब करा म मुक्तेमल प्रतियो सा

소송 소송하다면 달 15g jo 대통학제공 는 단소운으로 하는 30학교로 아이면 다 다 주 ने भीत पर स्वस्तु - वस्त स्वति भागा हा १ हि है व

प्रकृतिक व्यवस्थाय स्टल पूर्व है व करण प्र मेरा गढा ने कि अंद प्रांत प्रांत में अंद प्र कर पहीं उप स्वयान्त्रे प्रात्कार्त्वात्रे के तेव स्वयं प्रात्ने प्रात्ने प्रात्ने स्वयं क्रिकेट स्वयं प्रात्ने है। व्हेद्याप कर्तरा हर राज्य जाल पर पह कर परवर्ता है। ज Ref fat ficom me biebegbe bengen milge beene gan 可谓,你是我们的一次,我们对你可能的现在,我不是一个一个我们没有什么 ·翻集節 海里中美洲和斯里中中文中海中国第一次中国新安全 स्वरूपि प्रात्ति । जन्मे तुम्मे के प्रदेशक अन्तुमान । प्रदेशक । and the same of the same and the same sections and the man इंगाहर संदर्भ द्वार दे हर का क्षाहरू मान कर कर मान प्राप्त है। ना aft nime 1

医囊状的 数温度性处理经验 电流 医细胞 机工作工作 化水谱 明年年 主義 全性 医骨骨性 经现代 经 医原生 医大克 化二甲烷 化二烷烷 化 化二烷烷 可用2000 1 and 1 an The source of the state of the we are the first of the second of the second of the second

人姓氏斯特氏系统 野 电动影片 自治生

वात्मत्य करन से साधिमक द्वारा ग्राचरित सभी प्रवार के धर्मों के सेवन का लाम प्राप्त किया जा सकता है। इसीनिये एक तरफ सब प्रकार के धर्माचरण हो और दूमरी तरफ केवत साधिमक वात्सल्य हो तो भी उसकी समानता वताई गई है। कितना ग्रिधक महत्त्व है साधिमक वात्सत्य का ।।

अपने कुटुम्नियो का,पुत्र-पुत्रियो का और मगे-सबिधयों का घ्यान रखना कीन बडी वात है। यह प्रवृत्ति तो तिर्यनों में भी पाई जाती है वे भी अपनी सन्तान के प्रति ममता- शील होते हैं। उनमें भी मोह-ममता देखी जाती है। मानव की विशेषता इसी में है कि वह मोह-ममता से ऊपर उठकर, स्वार्थ के सकीएां दायरे से निकल कर, परिवार क घेरे से वाहर आकर साधिमक बन्धुओ पर निष्काम प्रममाव ररों और तन-मन-धन से जहरतमदों की सहायता करे। धर्म के प्रति जितना प्रेष होगा उतने ही अनुपात में मार्थिमकों के प्रति बहुमान होगा जितना बहुमान होगा उत्ती के प्रनुपार भित्त होगी। अपने इकलीते पुत्र पर जितनी प्रीति होता है उससे भी अधिक प्रीति साधिमक के प्रति होनी चाहिये।

भरत चक्रवर्ती का साधर्मिक वात्सल्य:

इस जयमपिणी कात में सर्व प्रथम माधिनक वात्मत्य करने वाल भरत चकवर्ती हुए। उनका उदाहरण मननीय और आवरणीय है। विसर्गत प्रकृषिक भाषाक्षात्र कांग्य सम्बंध स्वाहस्य अस्य वह मृत्यके बाद कांग्य कार्बुट कांग्य स्थित स्वाहत स्वाह कांग्य कांग्य कार्य कांग्य कार्य कांग्य कार्य कांग्य कार्य विस्ति पूर्ण भाष्य प्राप्त कांग्य कांग्य

ादिमं पूर्यानाच्या कादिन निम्मित्रस्यः। पादिनं रोपंतापण प्रश्तास्यान स्तुमः।।

कारण शहर हम तुष्य हर ३ १ ५ ५ ५ ५ है। संदेश के ह 로래백화·기노·호 기·리토 : 출근록등장의전 역사회과 보트 : 전기계다여 전보 都是 收收到时间,并不是正是多 化多色 學工 不明年 2 "不明" ,从 生态管 费然 महोत्य के प्रदेशक के के बार के पार पार के प्रदेश के अवदेश कर कर करें 통사범이번에 나는 속 가는 경쟁상 강인 등 상점에 다 그 아니는 문업원인 보고스러나 관 in got you a new species that years to specie the in the second 对新 那 一种的 网络大大 医海上 加入 打 大 安大 人 对人们的 化力量 er of the property of the prop ぎんかけまな マン・スティ だみ 智(いき きが てがり かっかい しゅ tiken , man, go wie ma lidali in kad ili ili ili alteli The first war and the second was been recommended to the first of the 李本本本 在一大戶 一十八年 经中主日 经本 不知 大土 人工 Return to the safetiment the thetime top to a the time to be a factor of each of each of was my by made to free her had to be that

छह खडो पर भरत ने विजय प्राप्त कर ली। चार-न्त्न द्वार पर आकर एक गया। चक्रन्त्न अन्दर नहीं आया। कारण ज्ञात करने पर विदित हुआ कि भरत के छोट भाई बाहुविल ने अधीनता स्वोकार नहीं की है अतः विजय अपूर्ण होने से चकरत्न अन्दर नहीं प्रवेश कर रहा है। भरत ने वाहुविल को अधीनता स्वीकार करने के लिये कहा। वाहु-विलिजी मे अपरिमित शक्ति थी। पूर्व भव मे उन्होने माधु-मुनिराजो की खूव वयावृत्य की थी जिसके फलस्वरूप उनमे न्त्रपूर्व श वत विद्यमान थो । बाहुबलिजी ने भरत की चुनौती स्वीकार की । दोनो का द्वन्द्व युद्ध हुआ । ९६ करोड सैनिको का अधिपति, वत्तीस मुकुट वद्व राजाओ का सिरमीर भ^{रत} वाहविल के पाव को तिलमात्र भी नही खिसका सका। इस प्रकार पाच युद्धों में भरत की हार हुई। खीझ कर भरत ने चकरत्न छोडा परन्तु उसका बाहबलिजी पर असर नहीं हुग्रा क्योकि चकरत्न का अपर एक खून वाले अपने सब्धियो पर नही होता । इसी बीच सहमा बाहुबलिजी की विचारधारा मे नवीन मोड आ जाता है। ज्यो ही उन्होने प्रहार मट्ठी उठाई त्यों ही भावना परिवर्तित हो जाती है। वे सोचने लगे-'मेरे विताजी ने दीक्षा ले ली, मेरे ९८ भाइयों ने भी दीक्षा ले ली, मैं राज्य के लिये अपने वहें भाई का प्रतीकार कर रहा हूँ, यह उचित नहीं है। यह मोचने ही उन्होंने उस उठी हुई मुट्ठी में ही वालों का लोच कर लिया और दीजिन हो गये।

इस प्रकार करण कारण हैं तो मण तमें त्यान्य स्वापत स्वापता गर्य कर्णों के विश्वीत में इस में शालूण स्वापती की स्वापता कारण की स्वापता करण करों तन विश्वीत माल्य मार्थ कारणों ना सप्यों रिजार क्षान करने की देखिल की तुल सपने कारणों ना सप्ये सामी में वश्चान ही स्वापता का शालाक मीं एपने भारकों साल द्वार साम्या भगा करणा है -

> त्रा सददवे महस्यक्षां येवामे कुञ्ची दिले । एवं विलेजन कानालं, एवं की वक्षी लगी।।

मार्स हार १ वर गहाल के आधु भने बीक गरेएन अवशे का भार के और भार सा पा राजा कि कि का के के का पान कि अव का भाग कि जा है । या गा कि के पा का के का का के का मि का के का भाग कि जा है । या गा कि का प्रकार के के का का का का का या भार के का साम के की का सा का की का का मान का लाव का का का

के राज्य की तिनक भी वाछा नहीं करते। वे तेरे भोग-निम-

यह मुनकर भरत को निराशा हुई। उमने मन में सोचा—'मेरे भाई भोग स्वीकार नहीं करते हैं परन्तु मेरे द्वारा दिया गया आहार तो ले ही लेगे। यह विनार कर पान सी गाडों में विविध खाद्य सामग्रो लेकर भरत भगवान के समीप आये। भगवान् से प्रार्थना करने लगे—'प्रभो, ग्राप सब मुनिराज यह श्राहार ग्रहण कर मुझे कृतार्थ करे।'

भगवान ने कहा—'भग्त, मुनियो को इस प्रकार का भ्राधाकर्मी (उनके निमित्त से तैयार किया गया) और सन्मृत लाया हुआ आहार नहीं कल्पता है। इसलिये यह आहार हम ग्रहण नहीं कर सकते हैं। राजिपण्ड भी मुनियो के तिये अक्तरानीय हैं।

यह मुनकर भद्रिक ह्दय वाले भरत विद्यल वन जाते हैं। उन्हें तीव्र म्लानि का अन्भव हाता है। मेरी कोई वस्तु इन मुनियों के उपयाग में नहीं आ मकती है तो में कितना अधन्य हूँ।

भरत के मुग पर प्रात्म-स्तानि की गहरी छाया देख-कर भगवान् ने मान्दवना देते हुए कहा कि-'अरत ! इम प्रकार स्वानि न ताओ ! मृति कत्य के अनुसार तुम्हारा गाण सामग्री मृतिगण नहीं ते सकते हैं परन्तु तुम्हे उसस निराध हाने की अकरत नहीं है ! तुम्हे अन्य सात स मृतिया की गांक भवाद मह राजस हैसाए काब एड है हिंदी सहस्यू क्रमाएँड हिल्लाहर है हा ने उन्हार द्वाव सूच्या एका राज्य सहित्य सह सामा के लिए से सामाय भागत है से सम्बाध में द्वारात सामा सुरस्थान काला है। सिन्दें सामाय करते के सम्बाध में द्वारात सामाय है सामाय के लिए है है। पहाले रिम्दें तरह सामाय का रहते सामाय का है। स्वाधित का है। स्वाधित का सामाय सामाय सामाय का रहते सामाय है। सामाय सामाय है। स्वाधित का स्वाधित का सामाय सामाय है। स्वाधित का सामाय स

प्रमुक्त में प्रमुक्त के प्रमुक्त के प्रमुक्त प्रमुक्त प्रमुक्त के महिन्द्र के स्थाप के स्था

The second secon

को श्राराधना में उद्युक्त (उजमाल) रहना चाहिये। ^{कहा} गया है कि∙–

'साहम्भी सगपण समु, अवर न सगपण कीय। भक्ति करे साहम्भी तणी, ममकित निमंत्त हीय॥'

समिकत के आठ आचारो में वात्सत्य बताया गया समिकत और घर्म श्रद्धा की दृढता के लिये सार्घीमक वात्स यया शक्ति अवश्यमेव करना चाहिये। धन-सम्मत्ति सार्थकता इसी मे है। सासारिक प्रवृत्तियो मे, ज्ञाति ज कुटुम्बी, मित्र ग्राढतिया लादि की सार सम्भाल में और अ एंश-आराम में जो धन व्यय होता है वह ग्रकारय जाता उसका फल ससार की वृद्धि करने वाला है। इसके विपरं जिनेन्द्र देव के शासन में निरूपित धर्म कियाएँ करने वाल, तपश्चर्या करके जीवन को पवित्र करने वाले, सामायिक पीपध म्रादि धर्मकियाओं में लगे रह नेवाले साधिमक भाइयो की भवित करने से धन की वार्स्तावक सफलता है। यह पुण्यानु-वधी पुण्य है। पुण्य की परम्परा को बटाने वाला है। ऐश-म्राराम और सामारिक प्रवृत्तियो म किया गया सर्च पापान-बबी होने से अशुभ फन वाला है। यह जानकर भन्य प्रात्माओं को अपने घन का मदुपयोग मार्घामक बन्धुओं के हिनाये तरता चाहिये । उन्हें यह ममजना नाहिये कि माधनिक बध्यो की मेत्रा का लाम महान् पुण्योदय मे प्राप्त होता है। मार्गिमको को अपने आगन में आया का गयुक्त और अकाल

har ba buren keelet might fa breitenag na White has not not and their at her and not not the The first of the said of the s the first the said that have to my and and a few last that the said to the said of the said of the said of 本山山 南山山 東京 大田 大田 10 mm 不是如此人 我 我 一人 我是 好你不是 我 我们我不是我 我们 Ent. Ent. Sec. 364 24 Such a Character Such same to the Second of Sec. 645 the second angular to the second to the second STATE OF THE PARTY PARTY WAS AS A STATE OF THE अपर्याप्त रहा। श्रावक की एक सामायिक का मून्य मगध के सम्राट्क खनाने से भी कही अन्ति है। ऐसो अवस्था में कीन जैन दोन-होन हो सकता है ? प्रत्यक जैन म ऐसी खुमारी होनी चाहिय कि वह वादशाहो और शाहशाहो से भी अपने- स्रापको अधिक भाग्यशानी और ऐश्वयशाली माने।

धमं और अंदम-सम्मान की खुमारी होना एक सद्गुण है। भाट बाराट को जब अकबर की सभा में जाना पड़ा था तो उसने पगड़ी हटा लो थी। उसे यह खुपारी थी कि मेरी पगड़ी कंवल प्रताप के नामने ही झुहेगी, अन्य किसी के आग नहीं। भूखा, प्यासा और निर्धन रहना स्वीकार है परन्तु प्रताप की छोड़ कर प्रन्य किमी के सामन पगड़ी झुकाना कदापि स्वीकार नहीं। ऐसी अजीव खुमारी थी भाट बारोट में।

जैन को भी ऐसी खुमारी होनी चाहिये। देव गुरु धर्म को महारत्नों को पा लेने उर दोन-होनता टिफ हो नहीं सकती है। अतः कोई जैन न अउने स्रापको और न किसी दू4रे जैन भाई को दान होन समग्रे।

देव, गुरु और धर्म के सम्बन्ध के कारण जैन मात्र में एक पारिवारिक भावना होनी चाहिये। परिवार के व्यक्तियों के प्रति जैमी आत्मीयना होती है वेगी ही आत्मीयना और प्रीति मार्धिमकों के प्रति होनी चाहिय। श्रीमना जैगी को निर्धंन जैन मार्द्यों के प्रति बर्गात और महमाज रुगना चारिले जैन मार्द्यों के प्रति बर्गात और महमाज रुगना चारिले

dam de madif كالمتعلوف المفاضية المعاشة المفرية المتارية الله وإيفاش ما المناقبات الطابع المداعية المداعية that is the first warm to find the said that the the said that the प्रकृतिक प्रदेश व्यक्ति के द्वारण प्रत्ये के स्वयं प्रत्ये के 经禁护者 医对对大切 報 如節 內口本 一次指言 明 持序管 前 经股本等于 KELLOW THE THE IS IN THE MENTER AND THE WASHINGTON ASSESSED. The was to the second of the s The way is in the sail of the control that the sail of भी भारत है के एंडर के लेंडर के लेंडर के लेंडर है है है है है है है है If I have the second in making in the board of which 好 不 电声 美沙兰 人名英格兰人名英格兰人名英格兰人名英格兰人名英格兰人名 white the second to the second I to the take in the second of 松子丁丁二 即 時年 學 3

李司 李子本 其 本 等語之歌時 经收益 如此以对知知好 報子 班子班 考了 情日事的是人名西班牙 四月 有其其所有問 你也不知

है से स्वर्ति है है है है के लिए हैं के लिए से स्वर्ति हैं है है के लिए से स्वर्ति हैं है है है है है है है है

A decided of the first of the f AS LESS LESS SECTION TO LIGHT LESS CONTRACTOR OF THE PERSON PRINCES OF THE PERSON PRINCE 是是一种是 10 gr man 在海上上, 10 mm 1 the to the state of the state o तक आ गई कि अन्न दाँत का वैर हो गया । खानदानो व्यक्ति किसी के आगे हाथ तो पसार नहीं सकता । घघा कुछ रह नहीं गया था । वाल-वच्चो को भूखा कैसे रखा जा सकता या। खानदानी या कुछीनता से पेट तो नहीं भरता । वडी समस्या सामने खडी हो गई। जब मनुष्य अभाव से परेशान हो जाता है तो उसकी मानसिक समाधि और वृद्धि में भी विक्षेप आ जाता है। जिनदास सेठ बहुत गम्भीर और पुण्य-पाप की विवारणा को समझने वाले थे। कमजोर स्थिति होने पर भी धमं के प्रति उनकी रुचि वरावर कायम रही थी।

पर्युषण के दिन आ गये घारणा-पारणा के लिये घर मे कोई व्यवस्था नहीं थी। जिनदास सेठ का मन बहुत क्षुट्य हो गया। वे अपनी पहले को स्थित को याद कर और आज की विषम स्थिति को देखकर विचलित हो उठे। कहाँ वह पूर्व की श्रीमन्ताई और कहाँ धाज धारणा—पारणा का भी अभाव!

प्रसग वरा यह कहना अनुचित नहीं होगा कि घारणा-पारणा का महत्त्व नहीं है, महत्त्व तो है उपवास का। परन्तु आजकल घारणा-पारणा का आडम्बर दतना बढ गया है कि उसमें उपवास गोण जैसा हो गया है। घारणा-पारणा में गरिष्ठ पदार्थ सेवन करने की परिपाटी चल पढ़ो है परन्तु यह न स्वास्थ्य की दृष्टि से ही ठोक है और न धामिक हरिन में ही। उचित तो यह है कि उपवास के। त्रार्थ्य भीत हा लाइ क्षेत्रण सार प्रांति प्राप्ता से और नारिष्य , क्षेत्रण प्रांति है जह का नाइ देशका साथ है क्षाण स्वार्थ के स्वार्थ से क्षेत्रण है के स्वित्रण प्रांति है जह का नाइ देशका साथ है का साथ स्वार्थ के प्रांति स्वार्थ स्वार्य स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्वार

भ्याप्त करण्य करण्य करण्य करण्य व्यवस्थात करण्य करण्य

है। उनका सारा पुरुषार्थ खाने-पीने तक ही सीमित है। पहीं कारण है कि जास्त्रकारों ने कहा है कि मोक्ष में जाने बालें जीव निगोद के जीव का अनन्तवां भाग हैं। विरलें व्यक्ति ही संसार व्यवहार की प्रवृत्तियों से उत्तर उठकर धर्मागधना में निमग्न होते हैं।

सेठ जिनदास के मन में कल की चिन्ता ने उयलपुवलें मचा रखा था। इधर सेठ शान्तिदास भी प्रतिक्रमण करने उपाश्रय में आये। उन्होंने प्रतिक्रमण करने के लिये तैयारों के रूप में अपने बहुमूल्य वस्त्रामूपण उतारे और प्रतिक्रमण के योग्य वस्त्र धारण किये। धर्मिक्रया करते समय ग्रामूपणों का त्याग करना ही चाहिये। बहुमूल्य आभूपणों का और मूल्यचान भडकीले वस्त्रों का त्याग करके सादगीपूर्ण वस्त्रों से धर्माराधन करना चाहिये। शरीर के सत्कार या सस्कार का भी त्याग किया जाना चाहिये। धोती और उत्तरासन रसक्ते ही सामायिक, चैत्य वन्दन आदि करना चाहिये सामायिक में मोह-ममता वर्धक पदार्थों का त्याग करना ही चाहिये। कहा है- 'समगों इव सावयों हुज्जा, तम्हा मामाइयं चहुमों वृज्जा"

अर्थात्-मामायिक के समय मे श्रावक साधु तुल्य ही जाता है अतिएव पुन पुन मामायिक करना चाहियो। इसका अर्थ यह हुग्रा कि मामायिक के ममय मे श्रावक को साधु के ममान मादगी पूर्ण वेश रणना चाहिये।

ड्यान्तिदास सेठ ने सामायिक छिने में पूर्व अपना होते

श्राजकल तो एक रुमाल भी इघर उघर हो जाय तो शोरगुल मचाया जाता है, धर्मस्थान के विरुद्ध उटपटाग और अट-शट वाक्यावली बोली जाती है। शान्तिदास मेठ समझदार और विवेकवान् थे। उन्होने साचा कि-यदि मैं हीरे के हार के चोरी चले जाने की वात प्रकट करुगा तो इससे धर्मस्थान और धर्म के प्रति लोगो मे अविश्वास उत्पन्न होगा, धर्म की हीलना होगी, धर्मवन्धुओं के प्रति शका का वातावरण वनेगा। श्रतएव उन्होने इस वात को प्रकट न करना ही उचित समभा। कितनी गभीरता और महानता है यह । धर्म और धर्मस्थान की प्रतिष्ठा की रक्षा के लिये शान्तिदास सेठ ने हीरे के हार की कोई चिन्ता नहीं की। वे सहजभाव से अपने घर चले आये।

घर आने पर सेठानी ने देखा कि सेठजी के गले में हीरे का हार नही है। प्राय स्थियां हर बात की विशेष खबर रखने वाली होती हैं। श्रापकी अपेक्षा आपकी धर्मपतियां विशेष हिमाब—िकताब रखती हैं। विचक्षण सेठानी को समझने में देर नहीं लगी कि हार चोरी चला गया है। सेठजी ने हार की हकीकत बताते हुए मेठानी को सावधान किया कि वह किसी के सामने इम बात को प्रकट न करे। सेठजी ने कहा कि—अपनी कुळीनता इमी में है कि हम धर्म-स्थान में हुई इम घटना को प्रसट न होने से। यह तो महज समझा जा सबता है कि किसी अत्यन्त जहरतमद व्यक्ति ने ही वियदा होर ऐसा कृत्य किया है। परिस्थित इन्सान को न जाने क्या—क्या करने को मजबूर करती है। साधारण व्यक्ति परि-

यह हार ग्राप गिरवी रख लीजिये। ग्राप मेरा विश्वाम करते है, यह ग्रापका वडप्पन है। व्यवहार मे व्यावहारिक रीति से ही चलना चाहिये। शान्तिदाम सेठ ने कहा—ग्रच्छा, आपका आग्रह है तो आपके नाम कौ चिट्ठी लगा कर यह आपका हार रख लेता हूँ। यह कह कर उन्होंने एक हजार रुपये जिनदास सेठ को दे दिये। जिनदाम सेठ ग्राने घर चले आये।

जिनदास सेठ के जाने के पश्चात् शान्तिदास सेठ की धर्मपत्नी ने सेठ सा. से कहा कि-श्रापने जिनदास सेठ को हार पर रुपये दिये यह ठीक नहीं किया। उनको यो ही रुगये दे देने चाहिये थे।

सज्जनो । यह कितनो वडी वात है । यदि आजकल जैसी तुनुकमिजाजी स्त्री होनी तो कहती—'शमें नहीं आई, धर्मस्थान में चोरी करते हुए । इसे पुलिस के हवाले करो ! हमारा ही हार चुरा कर हमारे यहा गिरवी रखने ग्राया ! धूर्त कहीं का !' इत्यादि शब्दो द्वारा उसके हृदय को वेब देती । परन्तु शान्तिदास सेठ की सठानो ऐसी नहीं थी । वह समक्रदार नारी साधिनक को प्रतिष्ठा की रक्षा करने वाली थी । धर्म और साधिनक के महत्त्व को समझने वाली थी इमिलये मब कुछ जानते हुए भी उसने जिनदास सेठ की प्रतिष्ठा को कुछ भी घरका न लगने दिया । इसे कहने हैं स्वधमी वात्मल्य !

जिनदाम मेंट बुलीन और स्वय ग्रमीर ये। परन्तु घूप छाह के समान मुल-दुल आने-जाने रहते हैं। सूर्य का भी

इस प्रकार गुरुदेव के समक्ष दोनो ने अन्त करण पूर्वक ग्रालोचन लेकर ग्रातम—ग्रुद्धि की । साधिमक वात्सत्य का यह एक अत्यन्त प्रेरणाम्पद उदाहरण है । इस पर आप गहराई से विचार करें और इस मत्कत्तंत्य को निभाने का ययाशित प्रयत्न करे ।

साधिमक वात्सल्य के महत्त्व को कुमारपाल राजा ने समझा था जो प्रतिदिन एक हजार स्वणं मुद्राएँ खर्च कर साधिमको को भोजन कराता था। उसने माधिमको से लिया जाने वाला ७२ लाख का वािपक कर लेना वर कर दिया था। वस्तुपाल-तेजपाल, झाझणशाह, आभडशाह, विमलमत्री आदि साधिमक वात्सल्य का एतिहासिक आदर्श उपस्थित करके मावा सन्तित के लिये प्रेरणा के अन्नज स्रोत बने है। उनके अनुपम और अनूठे कार्यों में आप सबको समृचित शिक्षा और प्रेरणा प्राप्त करनो चाहिये।

लीकिक कहावत है कि "अन्न एक तो मन एक।" इस लोकोन्ति में गहरा धान्य रहा हुआ है। जो जो व्यक्ति एक साथ बैठ कर गाना गाते हैं उनमें एक रूपता की भावना उत्पन्न होती है, उनमें परस्पर सद्मान और स्नेह बद्धना है। धाप लोग भी विज्ञानसभा के सदस्यों को, अधिकारियों को दी-पार्टी एट-होम धादि देने हैं। अधिकारी और नेतागण भी परस्पर में, एक दूसरे के सत्मान में भोज की व्यवस्था करते है। इनमें भी यही लस्ब काम कर रहा है।

स्वार की मुक्तार महारा है प्रकृति के कि महार्तिकां स्वार्तिकां स्

本上 화경국부학교》 및 구류부ャ 역가 따는는 등으로 되어와 작가는수는 을 수 유럽실하다 최 루마 최고 최고 보는 바다가 불편되다를 된 다 그 회복 전략



पर्युषण का द्वितीय ट्याख्यान

महा मगलकारी, परम पित्रत्न, पर्वाधिराज पर्युं पण महापर्व का आज दितीय दिवस है। यह महापर्व सकल लीकि की को तिरोमाण तुल्य है। पुरुषो मे नरपित, नरपित के शरीर मे मस्तक, मस्तक पर मुकुट और मृकुट मे मिण सुशोभित होता है उसी तरह सामान्य दिनो की अपेक्षा पर्व की शोभा है, सामान्य पर्वों की अपेक्षा महापर्वों की महता है, महापर्वों में भी लोकोत्तर महापर्व प्रधान है और उनमें भी पर्युं पण महापर्व सर्वोत्तम और परम कल्याणकारी है।

स्वान्तः सुखाय सर्वजनिहतायः

प्रधानता का वया कारण है ? इस प्रश्न का समाधान करने के लिये हमें पर्वी के प्रयोजन, उद्देश्य और उनको मनाने के आकार प्रकार और रीति-नीतियो पर विचार करना होगा। होली, दीवाली, दशहरा आदि लौकिक पर्वों का प्रयोजन और उद्देश्य क्षणिक आमोद-प्रमोद और भौतिक सूस-समृद्धि होता है। इसमे प्राप्त होने वाला हर्षी लाम अन्य की स्थार को स्थार की स्था की स्थार की स्थार की स्थार की स्थार की स्थार की स्थार की स्था

ककर पत्थर हटाये जाते हैं, काटे ग्रलग किये जाते हैं, भूमि जोती जाती है, पानी द्वारा मीच कर मिट्टी को मुलायम बनाई जाती है। इतनी मन कियाएँ कर लेने के पश्चात् बीजारोपण किया जाता है। तभी वह फलदायक होता है। इसी प्रकार अपने अन्तः करण के खेत में सम्यक्त आदि शुद्धभावों का बीजारोपण करने के लिये हृदय में रहे हुए कण्टको, श्रत्यों और दोपों को दूर करना आवश्यक होता है। इसी नहें इस से भूमिका—शुद्धि के लियं पर्यु पण पर्व के सात दिवम रखें गये है। इन दिनों में धर्माचरण द्वारा अन्तः करण को निमंत और शुद्ध वना कर सवत्मरी के दिन ग्रात्मिक भावों का बीजारोपण करना है। ऐसा करने से ही इम विराट ग्राह्यातिमक महापर्व की वास्तविक आराधना होती हैं।

पाच मत्कत्तंव्यो में मे अभयदान प्रवर्तन और स्वधर्मी-वात्मत्य-इन दो अगो का निरूपण कल के व्यत्यान में किया गया था। शेप रहे हए क्षमापना अन्द्रम तप तथा चैत्य परि-पाटी का प्ररूपण आज किया जाता है।

पर्य का मर्भः क्षमापना

सर्वज्ञ-सर्वदर्शी वीतराग महाप्रमु ने क्षमापना का महत्त्व बताने हुए उत्तराध्ययन सूत्र के २९ वं अध्ययन मे फरमाया है –

श्वमावण्याण णं भंते! जीवे कि जगयह ? समावण्याण पन्हायण्याचे जण्यह ! पन्दायण्यावद्वाराण् म् वृत्ये सरा-जाग-सूप-जीर-म्बेष् सिमीसारम्या-हर । विकास स्वास महिल्ली राज्यात futor trata

ment to the first of

ないできまれない できっち まる 関の 素語 · は 歌作さり · は 如かかっていまかっ

The second of th (大學 海軍下衛 李衛 中部 中 中心 等 下 2次 如人也 是 人名德格尔克 Be where the west discourse is a superior of the wife of the order water same go or secret to the secret sec. the second of th

My to and of go of the post of the man as have a dist 数本特 微草: The state of the s 在本 · 不成 · 如 所於 g在 · 他 发放 · 布 · 似 在 · 九· 记上 ; 杂 the miles of the second of the

五十分で、大変なな者、かるな 変いなか あからずらとかいう The second services with the second of the s

partance distrebie de for amodéras a cabié é degra mentous mitables my by high thank their mere their work thinks the table on makes makes the time of a few tents. of which I begin to man who for the the own in a far an a wide 可可断性 建生物表 四下號 新拉斯 电气管电影性 安 新地區 不知 二十多。 total and grant adolone france margin a granton to him Rus Lund Artification of the Relation to the Color of the South States of the Relation of the the move state of the state of Alter Wartenge Software & Sola of Bullet Are about 5 판 본 가 NE 클ROME 내 가는이었습니다. je 는 데 3면 접임 및 가던데 1 위 다. 나 다. 医甲基二氏 医甲基氏 化氯酚甲基甲基酚甲二甲基酚甲基甲基甲基 學性主義性 人名英格兰人姓氏 野菜 医二甲甲醇 医二甲二甲醇 如此熟 心神 化双氯甲甲基甲甲甲基甲基甲基甲甲甲基甲甲甲甲甲基甲甲甲 ek , % _

महीने के काल में तो कषायों का उपज्ञमन नितान्त जरूरी है। अत. पर्यु पण पर्व की आगधना करने की अभिलापा वालों को कम से कम सबत्मरी के दिन तो क्षमापना पूर्वक उपशान्त वर्न ही जाना चाहिये। बैंग-विरोध को दूर कर देना चाहिये।

यह स्मरण रखना चाहिये कि वैर से वैर और जहर से जहर बढता जाता है। खून का कपड़ा ख़्न से माफ नहीं हो सकता। उसे घोने के लिय तो पानी ही अपेक्षित हाता है। इसी तरह को घया वैर का प्रतिकार को घया वैर से नहीं हैं। सकता । इसके लिये क्षमा का रसायन ही फलदायक हो सकता है। वैर से वैर की परम्परा बढती जाती है । आग में ईन्धन डालने से वह शान्त नहीं होती अपितु विशेष-विशेष भडकती है। सुभूम नामक क्षत्रिय राजा ने कोधवण ब्राह्मणो का नाश किया तो परशुराम ने २१ बार धात्रियो का विनाश किया। यह वैर की परम्परा वश-वशानुगत चलती रहती है। इतना हो नहीं भव-भवान्तर तक भी चलती हैं। गुणसेन तथा अग्नि-शमि तापस की वैर-परम्परा अनेक भवो तक चली, जिनमे म्रग्निशर्मा ने वंग-परम्परा बढाई, गुणसेन ने यह परम्परा बद कर दी। यह बात समरादित्य केवरी वे वृतान्त मे प्रस्ट होती हे। इसीलिये शास्त्रकार भगवत फरमाते हैं कि -

"वेरानुवंधीण महत्मयाणि"

यह कोच, हिमा, वेर-विरोध और कपाय महा भय-

तरह तरह के वस्यामूषण और विविध उपहार मदनरेवा के पास भिजवाना गुरू किया।

सती मदनरेखा अनुपम सुन्दरी होने के साथ ही साथ प्रनुपम शोलवती और गुणवती भी थी। उपहारों के कारण मदनरेखा पर क्या असर होने वाला था? शेपनाग की मणि कदाचित हाथ म आ सकती है,पराक्रमी सिंह की दाढ का हाथ में आना सम्भव है परन्तु सती शिरोमणि नारी का दूसरे के हाथ में आना सम्भव नहीं है। मणिग्थ अपने प्रयत्नों में सफल न हो सका। इस असफलता ने उसे अधिक विह् बल और वमान बना दिया। एक बार मर्यादा छोडने पर मनुष्य का कितना पतन हो मकता है, यह नहीं कहा जा सकता। इसीलियं भर्तृहरिजी ने कहा है —

''विवेक-अप्टानां भवति विनिपातः शतमुखः।''

जो न्यक्ति विवेक के सीपान में फिपल पहता है वह न जाने कितना नीचे जा गिरेगा यह नहीं कहा जा सकता है। मिणरथ विवेक भ्रष्ट हो चुका था। राजा का कर्त्तंच्य, कुत के ज्यष्ट का कर्त्तंच्य, बडे भाई का दायित्व, जंठ की मयादा, मामान्य कुठाचार, माधाग्ण नीतिष्यमं आदि की विमरा कर वह नगधम बन गया था। उसके ह्दय में काम-वामना का कालुध्य जम चुका था अनाएव उसक ह्दय में क्यी मनेह, वात्मत्य करणा आदि सदमाव नष्ट हो गय। भयकर पूर विवारों था आधिषस्य हा गया था। उसने माया-अस # 소설 등 17 보고 소설 파고스 소스 2 다 수 소설 등 1 보고 있다. 1 보고 있는 1

報できた。 またま かいか からいち できっかいる と デッコー カー・マール おまり Man まっては ないない かいか - いい まかなっと データ ベーカット かっ ましゃ できるよう まんさはな ないかい と - いい まかなっと データ ベーカット かっ ましゃ またました ないない ないかい と - いい まかなっと データ ベーカット かっ ましゃ

गती मदनरेखा पर बजाति हो गया । उनके दुपकी कोई सीमा न रही। एक नारी के लिये इससे बहकर और कोई दूसरा दुप नहीं हो सकता। ऐसी विषम स्थिति में नारी का धैयं विचलित हुए विना नहीं रहता परन्तु मती मदनरेषा विवेकवती नारी थी। उसने परिस्थिति को समझ तिया और अपने हृदय को बज्जमय बनाकर अपने कर्त्तं हम का निर्धारण कर लिया।

ऐसे कठिन प्रमग में यदि कोई साधारण नारी होती तो अपना दुख रोने बंठ जाती । हाय मेरा क्या होगा ? मेरे वच्चे का पया हागा। यो रोना रोकर स्वय भी व्याकुल वन जाती और मरणकारया पर पटे हुए ध्ययित को भी आकुल-व्याकृत बनाकर सकत्य-विकत्य के भवर में उात देती। स्वय आतंध्यान करती और अपने पति को भी आतं-रौद्र हवान में डालकर अशुभ सकत्वी से अशुभ गानिया वश्र कर-वाता । उसका परभव अमगतकारी बनाती । परन्तु सत्। मदनरेगा विवेकवाली थी । उसने अपना राना नहीं रोगा। जमन पहले अपने परलोक के प्रति प्रयाण करन वाले पनि की गति को मुवारन का कलंब्य पूरा किया । वह अवन पति के द्यारीर को गोद म लेकर गटने लगी-'हे नाव ! ग्राप द्याना धारण करे। कोध या प्रतिशोध को भाषना न भान दे। यह आपका अन्तिम समय है। ''प्यनी गतिः गा गतिः अना समा में जैसी भावता होती है उसी र धन्सार गति होती है। अताप्य आप भाग भाई व प्रति कांग भीर संदर्भ

보고 보고 독소화하다 같 사 : 200 의 기 30 20일 다 의 10 시 일 ... 다가 받는 그 나 작한 국 사 4일 전 을 하는데 그 보다보다는 경기로부터 전보 나는 독기를 하는데 다른 사용을 내 나 나 목하는 것 같아 보는 아니다. 그 보다보다는 경기로부터 대한 시간 동안을 느 어디 나를 하는을 내 나 나 목하는데 무슨 보다 보는 것이다. 그 보다보다는 경기로부터 대한 시간 수가 있다.

> मृत्याम् सर्वे सम्बन्धान् दृष्टः । मन्द्रे स्ट्रिय प्राचीत स्ट्रायकारस् । महेस् स्ट्रिय प्राचीत स्ट्रायकारस् । महेस् स्ट्रिय प्राचीत स्ट्रायकारस्

हैं। अपने २ णुमाणुम कर्मों के श्रनुसार सवको सुखदुम की प्राप्ति होनी रहती है। "मैं इनका प्रतिपालक हूँ" यह अभिमान मिथ्या है। कोई किसी का आश्रयदाता या आश्रित नहीं है। सव जीव अपने २ पुण्य-पाप के आश्रित हैं। अतएव आप चिन्ता से सर्वथा मूक्त होकर श्रिरहत देव का शरण लीजिये। नवकार मत्र का जाप कीजिये। अपनी आत्मा को ममाधि भाव में स्थापिन कीजिये।"

'में अभने ओर से आपको विश्वाम दिलाती हूँ कि
मैं प्राणों को न्यौछावर करके भी अपने धर्म और जील की
पिरपूर्ण रक्षा करुगी। मैं आपकी धरोहर की परिपालना
करुगी। मेरी ओर से आप सवंया निञ्चित्त रहिये। परलोक
के लिये प्रस्थान करते हुए आपके लिये यही मेरी अन्तिम भंट
है। आप परभव के इस पाथेय को साथ ले जाइये। नवकार
मत्र का स्मरण की जिये अरिहत—सिद्ध का शरण ली जिये
सवंजीवों से क्षमायाचना की जिये और समाधिपूर्वंक हँमते हँसते
मृत्यु का स्वागत की जिये।"

कितनी दृष्टता है मती मदनरेता की । नारी मूलम प्रवीरता को हटा कर बज्जमय छाती बनाकर पति की मृत्यु को सुधार देना साधारण राम नहीं है। कहने की आवश्यकता नहीं कि अपनी अर्जींगनी की ऐसी उत्कट धीरना, पबंत जैसी दृटता और शुभ निष्ठा देख कर तथा उसकी हिनकारी मगल-कारी शिक्षा पर मनन करने से युगवाहु को शान्ति मिली। उसने कींग्र और प्रनियोध की दृष गर दिया। समाजिभाव मे को बन्दन विद्या है। सभाजनो को वृतान्त मुन कर वहा प्रमोद हुआ।

कहने का तात्पर्य यह है कि सती मदनरेखा को हम साक्षात् क्षमा की प्रतिमा कह सकते हैं। कितना उत्कृष्ट हैं उसका क्षमाभाव ! पित के हत्यारे के प्रति भी रीप न थाना, मन में तिनक भी दुर्माव न आने देना, थार्तप्र्यान या रीइ-ध्यान के वशवर्ती न होना सचम्च असाधारण ग्रादर्श हैं। धन्य है सती मदनरेखा और धन्य है उसका ग्रादर्श क्षमाभाव! ऐसी क्षमामूर्ति को हमारे कोटिश. बन्दन और अनन्त-अनन्त बन्दन हो! ऐसी आदर्श नारी के जीवन वृत्त से हम क्षमा-पना के ममें को समझे तो हमारा जीवन भी धन्य-धन्य ही सकता है।

क्षमा वीरस्य भूपणं

क्षमा श्रमृत है, कोच जहर है। क्षमा दिव्य रमायन है, कोच भयकर व्याचि है। क्षमा पुष्ठरावर्त मेच है और कोच दावानल है। जो वीर है, घीर है, गम्मीर है, जो गुणवान् है, महान् है, प्रधान है वही क्षमा कर मकता है। जो भरा-पूरा है, शौय मम्पन्न है, और गुण-गरिमा प्राप्त है वही खुकना है, नम्र होता है। तुच्छ, छिछना और ओछा व्यक्ति ही अफटता है। नीनिकार ने कहा है –

ब्रमें मी श्रांस श्रामली, नमें मां दाहिम दास । लुक्ड वेचारा क्या नमें, जासी थोशी मास्त ॥

यह बात सही है कि क्षमा के आवरण के नीचे कायरता को आश्रय नहीं मिलना चाहिये। कायर व्यक्ति क्षमा कर ही नहीं सकता । जो मत्व सम्पन्न होगा वहीं क्षमा करेगा। क्षमा वीर का भूपण है। इस सम्बन्ध में राजा उदायन और चण्डप्रद्योतन का उदाहरण मननीय है।

राजा उदायन की क्षमापनाः

सिंघ देश का राजा उदायन था। उपकी राजधानी वीतभय पटन थी। उज्जयिनी का राजा चण्डप्रद्योतन था। चण्डप्रद्योतन ने उदयन की दासी का उपहरण कर लिया था। एव भगवान श्रीमह।वीर देव की प्रभावशाली प्रतिमाजी का क्षपहरण भी किया या । ग्रन उदायन ने चण्डप्रद्योतन पर म्राक्रमण कर उसे पराजित किया। इतना हो नही उसे बन्दी वना कर उसके कपाल पर 'दासीपति' शब्द अकित करवाया। तत्पइचात् उसने अपनी मेना के साथ वीतभय पाटन की ओर प्रस्थान किया। इतने मे पर्युपण पर्व आ गया। उदायन राजा ने पर्युषण पर्वं की आराधना के लिये दशरूर मे पटाय डाला। सबत्सरी के दिन उदायन राजा ने उपवास किया । अतः रसोइये ने चण्डप्रयोतन में पूछा कि आपके तिय क्या रसोई वनाई जावे । चण्डप्रचीतन का शका हुई कि हमेशा तो नहीं, क्षाज नयो कर पूछा जा रहा है। उसने रमोइये से कहा कि यह बान धाज वयो पूछो जः रही है।

रसोटमे ने कहा-आज हमारे राजा को पर्मृषण पर्न

in the first this birds the right.

I have been reducible in the the remittee of the Presidence of the the train.

> साधीत बार एक् राक्ष्य गाठा स्थाप है। विभी के बारव्युम्य कि कार सक्ष्य

आया । उमसे क्षमायाचना करते हुए उसे सकोच या तज्जा का अनुभव नही हुआ ।

चण्डप्रद्योतन ने कहा-जब तक आए मुझे बन्धनमुक्त नहीं कर देते तब तक में आपको क्षमा प्रदान नहीं कर सकता।

उदायन ने सोचा-सवत्सरी पर्व की वास्तविक ग्रारा-घना शत्रु के साथ क्षमायाचना करने से ही हो सकती है। अपने स्वजनो, रिश्तेदारो या स्नेहियो से क्षमायाचना करना तो केवल रूढि है। जिसके साथ वैरविरोध हुआ हो कलई-क्लेश हुग्रा हो, उससे क्षमायाचना करना वास्तविक क्षमायाचना है। इसमे ही पर्व की वास्तविक आराधना है।

वह मोचकर उदायन राजा ने चण्डप्रद्योतन को बन्धन-मुक्त कर दिया। इतना हो नहीं पूर्व में उसके कपाल पर अकित करवाय गये 'दासीपित' शब्द को छिपाने हेतु उसे सम्मान पूर्वक स्वर्णपट्टक अपित किया।

इस प्रकार उदायन राजा ने वैरी के साथ क्षमापना करके वास्तिवक पर्युपणपर्व का आराधन किया। उदायन राजा शिक्तशाली था, विजेता था, तदिप उसने अपने अधीन बने हुए बन्दी राजा चण्डप्रद्योतन से क्षमा माँगी। यह उदाहरण इस बात का प्रमाण है कि क्षमा करना कायरो का नहीं श्रितिनु वीरो का भूषण है।

उदायन राजा ने सरदभाज से क्षमापनापर्व की आग-

assi his the geat of whis Falt the same the bistoristic Americally a constitution of the

And the second of the second second of the s

A har be districted to the world of the best to be

The state production of the state of the sta

दिया। कुम्भकार ने मोचा-महाराज का तो यह खेल हो गया और मेरी दुर्देशा हुई जा रही है। जमने फिर क्षुरका को चेतायनी दी। क्ष्लक ने फिर 'मिच्छमि दुवकड' दिया।

चीथी बार फिर धुल्लक ने 'ककर मारा। अब कुम्मकार से न रहा गया! उसने धुल्लक महाराज का कान मरोड दिया और बोला 'मिच्छामि दुक्कड'। यो कई बार कान मरोडा और कई बार 'मिच्छामि दुक्कड' बोला। धुल्लक ने तंग होकर कहा—कान मरोडते जाते हो और मिच्छामि दुक्कड कहते जाते हो ? यह कैमा 'मिच्छामि दुक्कड"। कुम्मकार ने कहा—जीसा आपका मिच्छामि दुक्कड' बैमा मेरा 'मिच्छामि दुक्कड'।

कहने का तात्पर्य यह है कि कुम्मकार और क्षूल्लक जैसा "मिच्छामि दुक्चड" आत्मा को पवित्र नहीं कर सकता। अपने द्वारा को जाने वाली भूल का सच्चे हृदय से पश्चात्ताप करना और भविष्य में उम भूल को फिर से न दुहराने की सावधानी रमना वाम्नविक 'मिच्छामि दुक्चड है। पर्य प्यूंपण के इन पित्र दिनों में धार्मिक क्षियाएँ करते समय आप भी भ्रमेक वार 'मिच्छामि दुक्चड'वोनाते हैं। परन्तु क्या आप इम वात की मावधानी रमते हैं कि वे भूले दुवारा आपके द्वारा न हो ? 'मिच्छामि दुक्चड' की माथंकना दमी में हैं कि मच्चे हृदय से भूल का पश्चात्ताप हो और दुवारा भूल न करने का मकल्य हो। इम विषय में स्पष्ट्योजी श्री मृगावतीती का दुवाहरण स्मरणीय है।

स्थापतिने की समापना एवं देवत्यः

गुरू साथ कोलासचा समझे से क्षणपुरूष की कर और described at delign han 4 in held studies so delike any y jud lig nie nich line, bid nich nin filmin tigan mil tarm I and Enterno a maint of the book the fre with trans it tetritished by by be and be the till I the HF मान्त्र के हैं कि मेर्ड के कि which the distribution the layer of the best shall as the size in the 可以 我在人在 知识的 年時 年 不完成日 如此 人名日本 五十年 wanter to the time of a stanger by, the wind of on the the water of the · こかない かけり かまかん ははない はない かんか なんちんしょ 事人了各种 医水水 聖聖 有時 我不 有事 不知 其中 不 不不 飲作 於其言

कुलीन हो, ऐमा करना तुम्हारे योग्य नहीं है" ऐसा कहते ही निद्राधीन हो गई । इसलिये साध्वीजी श्री मृगावतीजी के "दुवारा ऐसी मूल न करुगी, क्षमा कीजिये" इस कथन का श्री चन्दनवालाजी ने कोई उत्तर नहीं दिया।

साध्वीजी श्री मृगावतीजी पर इसका दूसरा ही प्रभाव पड़ा । वे कुलीन थी ग्रतएव उनकी विचारधारा उच्छृखलता की ओर न वढ कर आत्मालोचन की ओर मुटी। उन्हों^{ने} सोचा-मेरी क्षमायाचना से मेरी प्रवातनीजी को पूरा सतीप नहीं हुआ। जहाँ तक प्रवर्तिनी जी अपने श्रीमुख से "ग्रपराध माफ किया" ऐसा न कहे वहाँ तक मुझे प्रवतिनीजी के चरणो मे पड़ी ही रहन। चाहिये। ऐसा निर्णय करके साध्वीजी श्री मृगावतीजी अपनी गुरुणीजी के चरएों में ही क्षमा प्राप्त करने के लिये झुकती रही। इस बीच में गुरुणीजी की निद्रा भग करने का उन्होने कोई प्रयास नहीं किया । इस प्रकार आत्मालीचन एव क्षमापना की भावना में वे रमती रही। भावनाओं में अजव− . गजब की अक्ति होती है। क्षण प्रतिक्षण श्रा मृगावतीजी की भावनाएँ गुद्ध और शुद्धतर होती गई । वे क्षपक श्रेणी पर आम्ट हो गई और वही उन्हें केवल ज्ञान की प्राप्ति होगई। क्षमापना के परम और चरम फल को उन्होंने प्राप्त कर लिया।

क्षमापना के लिये हदय को निर्मल और नम्र बनाहें की आवस्पकता होती है। हदय में नम्रता आये बिना मन्ता समापना हा भाव पैदा नहीं हो सहता। क्षमापना आये िता mile ge de servera tha stige an decembration that and antimodore emande ge con tatalant to the whiteless maken an arman to an arman to an arman at an constitution that the safety and administration to a server and the server and the server arman and the server and the server arman and the server are a server as a server and the server are a server as a server and the server and the server are a server as a server and the server are a server as a server as a server and the server are a server as a server and the server are a server as a

with the state of the state of

The second of th

जन्म दिया । आश्चर्य ओर जिज्ञासा से प्रवर्तिनी श्री चन्दनवालाजी ने श्री मृगावतीजी से पूछा कि—ऐसे गाढ अतकार में तुम काले सर्प को किस प्रकार देख सकी ?

साध्वीजी श्री मृगावतीजी ने कहा—"आपकी कृवा से प्राप्त ज्ञान के प्रकाश से मैं देख पाने मे समर्थ हुई।"

गुरुणी चन्दनवाल।जी एक दम उठ वैठी और पूछा कि-कीनसा ज्ञान ? अतिपाति या अप्रतिपाति ज्ञान ?

केवलज्ञानी मृगावतोजी ने कहा-श्रप्रतिपाति ज्ञान ।

प्रवर्तिनो श्री चन्दनवालाजी ने जान लिया कि मेरी शिष्या साध्वीजी श्री मृगावतीजी को केवलज्ञान उत्पन्न हो गर्या है। मैंने केवलज्ञानी को प्रनामोग मे आज्ञातना की। उनके हृदय मे भी पदवात्ताप की भावना प्रकट हुई और उन्होंने केवलज्ञानी साध्वी मृगावतीजी से क्षमापना चाही। क्षमापना के भाव मे वे भी इतनी ऊँवाई पर पहुँच गईं कि क्षपक श्रेणी पर आरूढ होकर केवलज्ञान उपाजन कर लिया।

इस प्रकार साध्वी मृगावतीजो और प्रवर्तिनी चन्दन-वालाजी दोनो क्षमापना के उच्च परिणामो के कारण भ्रमुत्तर केवलज्ञान-केवलदर्णन की घारिका वन गई। यह है क्षमापना का परम और चरम परिणाम !!

चण्डरुद्राचार्य का क्षमाशील शिष्यः

म्द्राचार्यं नाम के एक अ।चार्यं स्वमाव से अत्यन्त कीधी

यह है क्षमा का मुन्दर और मधुर परिणाम । !

कषाय विजयः

उक्त समस्त उदाहरणों के मर्म को हृदयगम करके है भद्र ग्रत्माओं । कपायों पर विजय प्राप्त करने का पूरा-पूरा प्रयास करों । शास्त्रकार के इन वचनों को अपना मुद्रा लेख बनाओं –

उवसमेण हणे कोह, माण मद्वया जिणे। भाय अञ्जवभावेण लोहं मंतोसओ जिणे।।

"उपशम भाव से कोब को जीतो, मृदुता से अहंकार को पराजित करो, सरलता से माया का निकन्दन करो और सतोप के द्वारा लोभ को नियत्रित करो।"

हे भव्य पुरुषो । कही ऐसा न हो कि कपाय तुम पर हावी हो जावे और तुम्हारी सारी आराधना निष्फल हो जावे । यह स्मरण रावना चाहिये कि वपों की आराधना क्षण भर के तीव्र कपाय के उदय से निष्फल हो जाया करती है। दमसार मुनि को नजदीक आया हुआ वेचलज्ञान कपाय करने के कारण दूर चला गया। यनएव कपायो पर विजय प्राप्त करने का प्रवल पुरुषार्थ करो। जब कपायो के निष्णु नुग मिहनाद करके मडे हो जाओंगे तो निष्मदेह वेचलज्ञान-दर्गन की माजिह्यता प्राप्त कर मकोंगे।

Enter the state of the field of the state of

The tight of the many and the state of the s

the state of the second

110,30 4013,32 4 7 4 3

की आज्ञा मे चलना हम सब का कर्त्तव्य हो जाता है। वे पापताप के उपद्रवो से, मोह मद मत्सर ग्रादि लुटेरो से हमारी
रक्षा करते हैं अतएव शासनाधिपित भगवत जिनेश्वर महाप्रभु
ने भी हम साधु-साध्वी-थावक श्राविका रूप आराधक प्रजाजन पर ग्रव्टम तप का ग्रिनवार्ण टेक्स लगाया है। उनके इस
ग्रावश्यक फरमान का पालन करना प्रत्यक जैन का कर्त्तव्य
है। जैन कुल में जन्म लेने वाले वालक-वालिका भी तप और
त्याग मे उल्लास पूर्वक भाग लेते हैं। इसिलये शिवत का
गोपन न करते हुए पर्युपण पर्व में एक अष्टम तप अवश्य
करना चाहिये।

टेक्स भें दी गई छुटः —

जिस प्रकार राज्य-शासन टेक्स लगान के वावजूद भी विशेष परिस्थितियों में टेक्स सम्बन्धी विशेष सुविधाओं का प्रावधान करता है, वसूली में सहू लियत देता है, छोटी २ किश्तों में भुगतान करने की छूट देता है, समय को पायदी में सुविधा कर देता हैं। इसी प्रकार जिनेश्वर भगवतों ने भी तप की आराधना में विशेष परिस्थित और पात्र की क्षमता— अक्षमता को दृष्टिगत रख करक तिषय सुविधाओं का प्रावधान भी कर दिया है। साधारणतया शक्ति हाने पर अष्टम तप करने का फरमान है परन्तु यदि एक साथ तीन उपवास करने की इक्ति न हो तो अलग—अलग तीन उपवास कर में भी तप की पूर्ति की जा मकती है। यदि अलग २ तीन उपवास भी न हो सकें तो ६ आयम्बल करना चाहिये। छह आयम्बल भी स्त हुं यह दुवस्थिति स्वस्ते स्वास्त्र हैं क स्वास्त्र कार्यात हैस्ति एक्का स्ट्रिय है कार्य क्षेत्र स्वास्त्र स्व

\$1. 陈言 佛言 书以下门门 如如 本年 是遗迹 上层的人的人的人名 田田日子的 计设计 \$200 唐子子 如節 to to 我们会上 本屋 是 你上去的 你也你们 午 都是少会我们是我们在我们的 我们会上 我们会不会 我们会不会 我们会不会 我们会不会 我们会不会 我们不是你们的 我们不是你的 我们们可以说出来我们就是我们的一个我的生活,我也会

काल में जितने जीव मोक्ष प्राप्त करेंगे वे सब परम प्रमु परमात्मा जिनेश्वर भगवान् की आज्ञा की आराधना से ही अपने साध्य को सिद्ध कर सके हैं और करेंगे। भगवान् की आज्ञा की आराधना ही मोक्ष की आराधना है। अतएव भगवान् की आज्ञा के आराधन हेतु जो तप अपर बताया गया है उसकी भावपूर्वक पूर्ति अवश्य ही कर लेनी चाहिये।

तप की महिमाः

जिस प्रकार जाज्वल्यमान अग्नि जीर्ण काष्ठों को जला कर भस्म कर डालती है उसी प्रकार सयम पूर्वक किया गया तप सब कमों को जला कर भस्म कर देता है। जिस प्रकार सोने में मिले हुए मिट्टो आदि अन्य वैभाविक तत्त्वों को ग्राम्न और क्षारादि तत्त्व नष्ट कर देते है और स्वर्ण ग्राप्ते सहज स्वरूप में आ जाता है। इसी प्रकार तप के द्वारा आत्मा में मिले हुए कमंपुद्गल नष्ट हो जाते हैं और फलतः ग्रात्मा अपने सहज शुद्ध निर्मल स्वरूप में ग्रा जाता है।

शास्त्रकार भगवतो ने उत्तराध्ययन सूत्र मे फरमाया है -

"तवेणं भंते! जीवे कि जणयह १ तवेणं वोदाणं जणयह । वोदाणेणं भंते जीवे कि जणयह १ वोदाणेणं श्रकिरियं जणयह । श्रकिरियाए भवित्ता तथा पच्छा सिज्मह, युज्मह, मुचड, परिनिच्चायड, सच्यदुक्खाणगन्तं करेहे।"

स्वतीय है। सामदान् है सब का निश्च कर स्वता सहस्य कीतार है। सामदानु रूपकार है जिए है। है। वह को दिन्दी है सहिद दिन कर है की है। है। है। की का नियम के हैं। वह की मही है। है सहिद दिन कर है की स्वति है। सामदानु रूपकार के लिए हैं। है। वह का की समझ से निया है सहिद साम सुक्की कर का नियम है। है। है। वह का की समझ से निया है सहिद साम सुक्की कर का नियम है। है।

अधारकारी भी संबंधित हार

तथा उपसगं-परीपहों का वृत्तान्त पढ कर एवं श्रवणकर रोमांच हो उठता है। उतनी कठोच तप की आराधना तया उत्कृष्ट सहनशीलता श्रन्यत्र कही दृष्टिगोचर नहीं होती। मनुष्य ही नहीं सुर-असुर और इन्द्र भी किम्पत हो उठे। १२ वर्ष, ६ मास और १४ दिन के दीधं तपक्चरण काल में केवल ३४९ दिन ही श्राहार (पारणा) किया। लागातार ६ मास का १ तप, पाच मास २५ दिन का १ तप, चार मास के ९ तप, ३ मास के २ तप, २॥ मास के २ तप, २ मास के ६ तप, १। मास के २ तप, २ मास के ६ तप, शास के २ तप, मासखमण १२, पन्द्रह दिन के ७२ तप, सर्वतोभद्र तप १, इस प्रकार १२॥ वर्ष, १४ दिन के तप.-काल में केवल ११ मास १९ दिन (अर्थात् ३४९ दिन) ही आहार ग्रहण किया। रोष समय तक सर्वथा निराहार रहे।

इस प्रकार की दीघं एव कठोर तपश्चर्या के कारण भगवान् महावीर को 'श्रमण' कहा जाता है। कठोर तप-आराधना के कारण वे 'श्रमण' (श्राम्यति-तपम्यतीति श्रमण') के प्रशस्त शब्द द्वारा इन्द्र से प्रशसित सुए। ममार का कोई अन्य महा-पुरुष 'महावीर' की उपाधि से विभूषित नहीं हुआ। अन्य महापुरुष 'वीर' की उपाधि से मण्डित हुए जबित श्रमण भगवान् वद्रमान स्वामी श्रपनी कठिन तप-आराधना के कारण 'महावीर' के स्व में तोक विश्वत हुए।

ता पद की पूजा में कहा गया है -

मिना भाग राज्य हैं रन उसन, दौनती भूमि सहाया है? वित यो देवन सदा जिल्हा, दश्वित्वव जर्म बन्दा है? नव्याय स्वत्य है। योज चीर प्रत्या की हैं स्वत्या स्वत्य है योज दोन दिन उत्पादी? मिना व्यक्ति स्वया स्वत्य वर्ष, मोज द्वार गेंद्रता है। । —याली स्व वर्ष प्रत्ये ।

新しまれる () ない ない と () ない (

日本書の できない ままいい でき いいい - いかい うかはら かいかいかま できまれる マンス からい いっち しいい - いかい うかはら かっかいかま ではらない はん かん

The state of the second of the state of the

make the same of the first of the

and the property of the second of the second

who were to be a few man to the same with the same of the same with the same of the same o

हारिका नगरी का विनाश होने वाला था। इस उपद्रव से रक्षा करने वाला आयम्बिन तप ही था। जब तक हारिका नगरी में श्रायविल का तप चलता रहा तब तक कुपित देव भी हारिका कुछ न विगाड सका। १२ वर्ष तक घर-घर में श्रायविल तप चलता रहा तब तक हारिका का विनाश न हो सका। यह तप की महिमा समझनी चाहिये।

नंदन ऋषि ने ग्यारह लाख अस्मी हजार चार सी पिच्याणु (११,८०,४६५) मासखमण करके तप की आरावना द्वारा निर्वाण प्राप्त किया था।

श्री गौतमस्वामीजी बंले-बेले पारणा करते थे।

काकदी के घन्ना अनगार वेला—वेला पारणा करते थे। पारणा के दिन भी आपिबल करते थे। उतने कठोर तप के कारण घन्ना अनगार का शरीर श्री—होन, भुष्क और क्षीण हो गया था किन्तु उनकी आत्मा अत्यन्त उज्ज्वल हो गई थी। भस्म राशि से आच्छादित अग्नि की तरह घन्ना अनगार की म्रात्मा तप के तेज से प्रत्यन्त मुशोमित थी।

एक बार श्रमण भगवान् महाबीर स्वामी से उनके परम भनत श्रीणक राजा ने श्रस्त किया कि "हे भगवन्! आपके चबदह हजार साधुओं में कीन श्रनगार महादुष्कर किया करने वाला और महानिजंरा करने वाला है?

इम प्रकृत के उत्तर में श्रमण भगवान् महातीर देव ने

कर दर्भियेत स्ट्रिंड अस्ति केस्ट्रियन स्ट्रियन स्ट्रियन स्ट्रिंड अस्ति स्ट्रिये स्ट्रिये स्ट्रिये अस्ट्रिये स्ट्रिये स्

क्षा अने हें हैं कि इस एक स्टूर्ड के हैं कि कि अपने के अपने कि इस के स्थापन के अपने के स्थापन के कि अपने के अ

अहरा है कर गण ल करते हैं। इत तहरक मान हेराना सन 解去你在我身上去年 水水 四次 恐不不舍 衛山 经分分 一首日時 孔子 斯费布 似色皮多头 经设施的 有花霉 化二醇二氯化醇 陈州 新进口机 抗學會 () という かまないない 他者 どうしゅうか か かっち かいがく やくかい とかかは、 斯夫美国城 经收入日本 网络加西亚亚斯 衛 经报金券 经未产品登上 逼 化二氯苯 推跨 医生生结 经人口一首 如本,是 我们 电对 " 好 不如何相 And the house to black to the second a second to the secon 在人本文本 多一个大小四日十年 其 1 至 多年 2 日 中日上午 四日 中 الها الله المراجعة المدالة من المراجعة المراجعة المراجعة المراجعة المراجعة المراجعة المراجعة المراجعة المراجعة 衛 如在 七十年 即日本大百年 五月41 七十 中 一九四年 十九八月年十 十七 蓝南油 食 医生性 医甲状腺 医生性 医生性 医髓黄色 指电 化安剂 医细点 有比 本有上一人人的 有者是 25 如 在哪一年不不明 等 以下不不知 無重社 the state of desirations of the second of Freely muse of Garage mass and the home of the standard of the

है जिससे नारकी का शरीर लोहू-लुहान हो जाता है इस प्रकार अनन्त, असहा, तोव्र वेदना नारकी जीव भोगते रहते हैं। सी वर्ष तक ऐसी दुस्सह यातनाएँ सहन करने से जितने कर्मों की निर्जरा होती है उतने अशुभ कर्मों की सकाम निर्जरा एक नवकारसी का तप भावपूर्वक करने से होती हैं।

पोरसी का प्रत्याख्यान करने से एक हजार वर्ष पर्यन्त नारकी के श्रसहा दुख सहन करने से जितने कर्मी की निर्जंग होती है, उतने श्रणुभ कर्म निर्जरित हो जाते हैं।

साड्ड पोरसी के प्रत्याख्यान से दस हजार वर्ष तक नरक में जो कर्म निर्जरा होती है उतनी सकाम निर्जरा होती है।

पृरिमञ्ज (दो पोरसी) के तप का आराधन करने से एक लाख वर्ष के नारकी योग्य पापकर्म की निर्जरा होती है।

एकादान तप करने से दस लाख वर्ष का, नीवी तप करने से एक करोड़ वर्ष का, एकल ठाणा तप करने से दस करोड़ वर्ष का, एकलढ़ती तप से सो करोड़ वर्ष का, श्रायविल तप करने से एक हजार करोड़ वर्ष का, उपवास तप करने से दस हजार करोड़ वर्ष का, उपवास तप करने से दस हजार करोड़ वर्ष का, छह तप करने से एक लाख करोड़ वर्ष का, श्राय्टम तप करने से दम लाग करोड़ वर्ष का नाग्क- ग्राय पापकमें दूर हो जाता है। यो ज्यो ज्यो एक जपवास वटना जाता है त्यो त्यो दम दम गुगा पापकमें नग्क में

机动物导性管心物 经购收款据据 医心管毒素

क्षेत्रके स्वित् कार्ट्रिक के हैं हैं हैं हैं हैं हैं हैं है के कार्ट्स कार्ट्स कार्ट्स के के किए कार्ट्स के के किए कार्ट्स क

्रे प्रता के देव के के प्रता के के के देव के के प्रता के देव के के देव इंड का के देव के का के देव के के के देव के देव के के देव के के देव के के देव के दे के देव क

जिस प्रकार खेत मे धान्य आदि के साथ साथ घास-फूस भी उग जाता है लेकिन घास-फूप के लिये खेती नहीं की जाती है। वह तो घान्य के साथ स्वयमेव उग आता है। (मनुष्य केवल धान्य खाते है, और घास पशुओं के लिए है,) इसी प्रकार तप के द्वारा पापकर्मों का क्षय हो जाने से पुण्य तो स्वयमेव हो ही जाता है और उसके फलस्वरूप सातावेदनीय के फल-सासारिक सुख भोग स्वयमेव प्राप्त हो जाते है। परन्तु सासारिक सुख भोगो की प्राप्ति के निमित्त तप करना, महिमा पूजायाप्रशसाके हेतु तप करना तपस्या के फल को हार जाना है। जंसे कोई व्यक्ति चिन्तामणि रत्न को कोडी के बदले वच देता है तो वह श्रज्ञानी और अविवेकी माना जाता है। ठोक इसी तरह यदि कोई व्यक्ति तप करके सासारिक फल की कामना करता है ता वह तप रूपी रत्न को सासारिक सुख रूपो कोडी के मोल बच देता है। इसलिय तप का उद्देश्य केवल निर्जरा और मोक्ष ही होना चाहिये। सासारिक सुखोप-भोग, स्वर्ग की लालसा अथवा कीति-प्रशसा को श्रभिलाया से कदापि तप नही करना चाहिये। यह तो तप का आनुपिक फल है। सासारिक कामनाओं से किया जाने वाला तप धात्मा की विशुद्धि करने वाला नहीं होता है। मोक्षमार्ग मे उसका कोई महत्त्व नहीं हैं। तामली तापस ने साठ हजार वर्ष तक तप किया परन्तु वह कामनाओं से प्रेरित होने से मोक्षमार्ग मे उप-मोगो नहीं हुमा। वह अज्ञान तप है। निजंरा की भावना से को गई एक नौकारसी का महत्त्व करोडो वर्षों के अज्ञान तप से वहीं अधिक श्रेयस्वर है। मस्यस्कृति श्राक्त मोक्ष के तिय

在中央中心 是 自 经有限的原本的 如此是我的我们是 我们 考虑一次 我们是 我们 我们是我 我们就是 我们的我们是 我们的 我们的 我们就 我们就 我们就是 我们就 我们是我们就是我们是 我们的 我们的 我们的 我们的 我们的 我们 我们就是 我们就是 我们是我们就是我们是 我们的 我们的 我们的 我们就是 我们就是 我们就是 我们就是 我们是我们就是我们的 我们的 我们的 我们就是我们的 我们就是 我们就是 我们的什么 我们就是我们的我们就是我们的 我们的 我们就是我们就是我们的我们就是 我们就是我们的我们的我们的我们就是我们就是我们的我们就是

There is a same of the month of the

निराहार रहने वाले व्यक्ति के विषय–इन्द्रियों के विकार–दूर हो जाते हैं। जो आसिवत रह जाती है वह भी परम–आत्म तत्त्व के चिन्तन से नष्ट हो जाती है।

गीता के जनत कथन से उपवास ग्रादि तप की महिमा स्पट प्रकट हो जाती है। इन्द्रियों के विकारों का आहार के साथ घनिष्ठ सवध् रहता है। पौष्टिक आहार से इन्द्रिया तूफानों हो जाती हैं, मन चवल होकर उन्मार्ग की ओर वला जाता है। जिस प्रकार लगाम रहित उद्दाम अश्व इघर—उघर दौडता हुआ ऊधम मचाता है। उसका निग्रह करने के लिये लगाम लगाना जरूरों हो जाता है। इसी प्रकार तूफानी इद्रियों और चवल मन का निग्रह करने के लिये तम को आवश्यकता है। मोह के वन्धन से मुक्त होने के लिये तम को आवश्यकता है। मोह के वन्धन से मुक्त होने के लिये, कम के भार से हल्का होने के लिये, शरीर और आहार की गुलामी से छुटकारा पाने के लिये और आत्मा के सहज शुद्ध चिदानन्दनय स्वरूग को प्राप्त करने के लिये तप अमोध साधन है। अतएव इन पर्वदिनों में अप्टम तप की ग्राराधना अवश्य करनी चाहिये।

शल्य रहित तपः

शत्य रहित होना तप का भूषण है। जैन सिद्धात में दान्य को बहुत बड़ा पान माना गया है। प्रत्येक धार्मिक या व्यवहारिक किया दात्य रहित होकर करने का भारत्येक निर्देश दिया गया है। दात्य रस कर को गई किया पापानुबंधी मानी गई है। दीर्घ काल तक यह का जात्य का कार्या होती है। And the growing of the second of the second

FIRE COR.

है। प्रकट शत्रु की अपेक्षा प्रप्रकट शत्रु विशय हानिकर होता है। श्रतएव उसमें वचने के लिये विशेष जागरुकता रखनी पड़ती है। इसलिये शास्त्रकारों ने माया से वचने के लिये जगह जगह पर मुमुक्षुओं को सावधान किया है। तप का आराधन भी माया शल्य से रहित होकर करना चाहिये। तप पद की पूजा में कहा गया है —

पीठ धने महापीठ मुनीश्वर, पूरव भव मिल्लिजिन नो साध्यी लच्मगा तप निव फिलियो, दंग गयो निह यननी ही शाणी तप पदने पूजीजे ।।

पीठ और महापेठ मुनि ने सयम का पालन तो उत्कट भाव से किया परन्तु मन में माया के भाव रतो, गुरु के प्रति मन में ईपी भाव लाये और इसकी आलोचना नहीं की तो उन्होंने स्त्रीवेद का बब कर लिया। वे ब्राह्मी और मुन्दरी के रूप में जन्में। श्री मित्तानाथ जिनेस्वर के जीव ने पूर्वभव में अपने साथियों से आगे बढ़ने की भावना से कपट पूर्वम तप का आचरण किया जिसके फलस्वका उन्हें स्त्रीवेद की शाबिन हुई।

माध्यो लक्ष्मणा ने हजारो वर्षों तक कठिन तप का ग्राचरण किया परन्तु प्रवने मन से चिन्तित दुष्कृत्य को कपट पूर्वक भालोचना की, सरलता से आलोचना नहीं की प्रतएय उमका हजारो वर्षों का किया हुमा तप भी सफल नहीं हुमा। इमित्रिये तप की प्राराधना करने हुए माया-शत्य को अन्त करण से निकाल कर सरण और निष्कपट भाग अपनाने की 有物的物质性较大

The second

भोग सामग्री का भोगने वाला वन् । मुनि ने सयम की मर्यादा को लाघकर मन ही मन ऐसा निदान कर लिया ।

इसी निदान के फलस्वरूप वह मृनि का जीव ब्रह्मदत्त चकवर्ती बना। निदान करने से इच्छित भोग्य वस्तु प्राप्त तो हो जाती है परन्तु वह जीव आत्मकल्याण के मार्ग मे बहुत ही अधिक पिछड जाता है। वह आत्मकल्याण के प्य पर नहीं चल सकता और विपयों का कीडा वन कर दोर्घकाल तक नरकादि स्थानों में यातना का अनुभव करता है।

ब्रह्मदत्त चकवर्ती के पूर्व के पाच भवो के भाई चित्त
मुनि अपने भाई को विपयोपभोगों में आसकत जान कर उमे
प्रतिवोध देने के हेतु उसके पास आते हैं और ब्रह्मदत्त चकवर्ती
को भोगों को असारता वतलाते हैं। अपने पूर्वभवों का उरलेप
करते हुए उन्होंने कहा कि है राजन्। अपन दोनों पूर्व के पाच
जन्मों से भाई—भाई रहे हैं। तुम्हारे द्वारा किये गये निदान के
कारण इस भव में हम अलग अलग उत्पन्न हुए हैं। पूर्वभव के
स्नेह के कारण में तुम्हे प्रतिवोध देने आया हूँ। राजन्।
समझो, सब गीत विलाप तुरय है, सब नृत्य विडम्बना हं,
सब बाभरण भार है सब कामभोग दु प्र देन वाले हैं। हम
दोनों ने पूर्वभव में भी साथ माथ मथम का ख्राराधन किया था।
यह मत भूलों कि तपोबनों मुनियों को जो मूस है वह कामभोगों में आमनत राजा-महाराजाओं को नहीं है। ख्रतएव हे
राजन्। विषय भोगों को छों योर आत्म—कत्याण के मार्ग
पर बड़ों। यहां समभाने के नियं भे धापके पास आया हैं।

के सिक्ता है के की की की का महिला के महिला म

作成としている。 まっ といれなり よっない よっない よっない よっない よっない よっない なっない なっな

おうなか トライトライ チャア ない まっち きょし かいろ

अर्थमं को धमं मानना मिथ्यात्व है। इसी तग्ह सुगुर को कुगुरु मानना, सुदेव को कुदेव मानना और धमं को अधमं मानना भी मिथ्यात्व है। राग और हेप से अतीत वीतराग भगवत ही सच्चे देव हैं, कचन—कामिनो के त्यागी सांगु ही सच्चे सांगु है और वीतराग सर्वज्ञ भगवती हारा प्रस्पित अहिंसा ग्रादि ही धमं का सच्चा स्वरूप है। इप तत्त्व पर वास्तिवक श्रद्धा करना सम्यग्दर्शन है और इमसे अन्यया मानना मिथ्यादर्शन हैं। यह मिथ्यादर्शन शल्य के समान दुखदायी है। अत मिथ्यादर्शन शल्य से अनने आपको वचाकर गृद्ध श्रद्धामाव का आश्रय लेना चाहिये।

इस तरह तप और सयम की निर्मल ग्राराधना के लिये कार बताये हुए तीनो शल्यो से रहित होना चाहिये। इत्य युवत आत्मा चाहे हजारो वर्षों तक तप करे वह सय निष्फल होता है। इसलिये अन्त करण के सब शत्यों को निकाल कर, हृदय की भूमि को स्वच्छ बना कर तप का अनुष्ठान करना चाहिये जिससे कत्याण की परम्परा को प्राप्त कर सके।

वाहा और आभ्यन्तर तप

जैन परम्परा में तप के दो भेद कहे गये हैं—(१) बाह्य और (२) श्राभ्यन्तर । बाह्य तप मुख्यनया शरीर—मापेक्ष होता है जबिक आभ्यन्तर तप चित्त की श्रन्तरम वृत्तियो से सम्बद्ध होता है । बाह्य तब का अमर शरीर पर परिलक्षित होता है और वह बाहर जन माधारण में देखा जा गाना है।

३ वृत्ति संक्षेपः -

ऊनोदरी तप में खाद्य वस्तु का प्रमाण कम करने का कहा गया है जबिक इस तप में खाद्य वस्तुओं की सख्या कम करने का कहा गया है। यथाणिक्त कम से कम वस्तुओं से अपना काम चला लेने की आदत डालने से इन्द्रियो पर काबू प्राप्त होता है और अनेक प्रकार की झझटों से सहज मुक्ति गिल सकती है। जीवन में सात्विकता लाने के लिये उस तप की बहुत आवश्यकता है। जैन जामन में प्रतिदिन चबदह नियम धारण करने का विधान किया गया है उसका अभिप्राय भी वृत्ति सक्षेप तप से है।

४ रस परित्यागः-

विकार उत्पन्न करने वाले पील्टिक एव मादक पदार्थों का परित्याग करना रस-परित्याग है। मध्, मन्दान, मद्य और मास ये चार महाविकारी पदार्थं सर्वेया त्याज्य और अभक्ष्य हैं। दूध, दही, घा, तेन, गुड-वाकर और पनवान्न ये छह विगय छोडना रस परित्याग तप कहनाना है। रमो से जिहा का रस वढता है। जिहा के रस से समार का रस बढता है। जिहा को जिहा विवास स्वावता विवास से उनुका बनने के लिये रस परित्याग तप करना ही चाहिये।

५ कायवलेशः-

शारीरिक मुल-लम्भटक को कम रक्ते के लिये राष्ट्रो

the time and the theological that to be major to be and a strong a branch केंग के के किया होते. ताल केंग्राली हैंगाली हैं के ब्यालिक केंग्राम केंग्राम केंग्राम है the person to the first state the person of the same who is a time of the dade stad mise, the future of other to the عيد والمالي المناسخ ال all on the sign was a sign of a set of the s 歌八本 本 如此者如 不知是者 衛 本西 如年 , 我在此 精 本部, 於 此人 m the sign of many decentages to a light of the set of the ten with Land gard where we did the hand the term of the real terms in it and where a fix media of old of the test often remaining 李 如此中午至於中國主要前一個學的主導 (1952年) 田田縣 (1964年) we will have been to the same of the same and the same more than the service of the service 本學 等 医二甲状子 经有限的 等 持有 打玩 医鼻上皮 the first that the first and the first that the transport of the property for the property E william alignment of

अत उससे बचने के लिये यह तप किया जाता है। एक जगहें स्थिर होकर बैठना, व्याख्यान—सामायिक आदि धर्मिक्या के अवसर पर स्थिर होकर बैठना, बार बार हाथ पाव ऊँवा नीचा न करना, निरर्थक हलन—चलन न करना, यह प्रति—सलीनता तप है।

उक्त रोति से बाह्य तप के छह भेद बताये हैं। अब आभ्यन्तर तप के छह भेद बताये जाते हैं। १ प्रायश्चित, २ विनय, ३ वैयावृत्य, ४ स्वाध्याय, ५ ध्यान और ६ कायोत्तर्ग।

१ प्रायश्चितः-

अज्ञानदशा, मोहावस्था या विषयादि की वासना के कारण जो मूलें हो जाया करनो है उन के लिये परवाताप करना, गुरु ग्रावि पुज्य पुरुषों के समक्ष सग्ल भाव से किवेदन कर देना और वे जो दण्ड देवे उसे स्वीकार करना प्रायश्चित तप है। यह ता प्रारमा के मैल को धो देने वाला, और आत्मा को णुद्ध वनाने वाला कहा गया है। प्रायश्चित की आग में तप कर आत्मा रूनी सोना निर्मल हो कर निखर उठना है।

२ विनयः-

वितय, धर्म का मूल कहा गया है। विनय से नछना आती है। नछना से गुरु की प्रसन्नना प्राप्त होनी है। ग्रु की प्रसन्नता से सम्बद्धान की प्राप्त होनी है। सम्बद्धान से विर्ति और विर्ति से स्वर-निजेश होनी है। स्वर-निजेश से मोध

養養理ないよっ

यथायोग्य वैयावृत्य करने से आत्मा ससार सागर से पार हो जाता है।

४ स्वाध्याय:-

श्रुत का पठन पाठन करना भी तप माना गया है।
आहमा की परिणित को शुद्ध करने वाले प्रन्यो का वाचन
करना, तत्व विषयक प्रश्नोत्तर करना, पढ हुए ग्रन्य की पुनरावृत्ति करना, तत्व चिन्तन करना तया धर्मोपदेश देना या श्रवण
करना, यह सब स्वाध्याय तप ह। अपने मन को ऐसो सात्विक
प्रवृत्ति में लगाये रहने से आत्मा स्वाभाविक ग्रानन्द की अनुभूति करके मोक्षमार्ग में प्रगति करता रहता है। जो श्रशकृत
आहमा ग्रनशन आदि तप करने में कर्मोदय से असमर्थ होते है
उन्हें स्वाध्याय तप के द्वारा उसकी पूर्ति करने का निर्देश दिया
गया है। आहमा की शुद्धि करने के लिये स्वःध्याय तप की
आराधना अवश्यमेव करनी चाहिये। यह ज्ञान-दशन और
चिरय की दृढता और निश्चलता को बढाने वाला है। मधाप
में स्वाध्याय तप मोक्षमार्ग को प्रयस्न बनाने वाला है।

५ ध्यान:-

चित्त का निरोध करना ध्यान कहलाता है। इमके चार भेद बताय गये है - १ आर्नध्यान, २ रोद्रध्यान, ३ धर्में ध्यान, और ४ शुक्र ध्यान। झरीर धन और काममोगो को प्राप्त करने की और प्राप्त होने पर उनका वियोग न होने की चिनता करना श्रातंध्यान है। अप्राप्त निषयभोगों को भोगने का

lait and lating about the about a finish the six to daing said to me have that it that since is to be इ.इ.च्ये ब्राह्म के कामान संकारण है बंदाहियाँ ब्रोहित के राजनिक सर मेर्ड केन्द्री को अनेक अनुन्न मेर्डि एक जनका हैद्यान के मीत्रे elforet mere governoù e espera ferra entras हैं "ये के हैंद्र के द्वेह समान कार्यहर के हैद्धानन के देखी कीर के A KIROL WALL BE FOR IN THE FEB SONT SOME AND A What difficult of his dide and the and it was a me द भी मा क्षीम सर्वे में हैं है है है है सम्मार्थ कर्म के दे है है है But a first of the same a few of the but the top the same 安。我也在各种 无证 茶年节年4日 班 衛山南北 不 日日 机记记指数 花沙森 the start of a world of the time of the start of the start 我去你小爷子 布布人之口 可与有心理 人名英格 教育公司有如何 九 数 安安 大· 40g · 福· 1.30g · 1 其中 美国大学 医水杨二二醇 新港 美国 医电影 医血管 医血管 我们有我 对克 衛生性的 是 我 是 衛 一端空间的 化水水 化 人 衛人 以斯里 田 THE REAL CONTRACTOR WITH THE SER MET AS A MET A MAN AND THE PERSON OF THE MET AND THE PERSON OF THE The governmenter of the things bett the the the property to the first property of the first terms of terms of the first terms of the first terms of the first terms of t

६ कायोत्सर्गः -

वित्त की एकाग्रता के लिये की जाने वाली किया-विशेष को कायोत्समं या काउत्मम्म कहा जाता है। सामायिक प्रतिक्रमण आदि कियाओं में 'काउसम्म' किया जाता है। मन, वचन काया की प्रवृत्ति को रोक कर पूर्ण समाधि भाव में ग्रा जाना कायोत्समं है। मन की एकाग्रता से सकल आख्यों का निरोध हो जाता है और आत्मा अनन्त कमें वर्गणाओं का क्षय कर डालता है। मोक्षमामं की मजिल को पाने में इसका बहुत अधिक महत्त्व है।

संवत्सरी प्रतिक्रमण में १००द श्वासोच्छ्वास का काउ सगा करना चाहिये। 'चदेसु निम्मलयरा' तक लोगस्स का पाठ गिनने में २५ श्वासोच्छ्वास होते हैं। चालीस लोगस्स गिनने से १००० श्वासोछ्वास तथा एक नवकार गिनने से ८ श्वासोच्छ्वास यो एक हजार आठ श्वासोच्छ्वास होते हैं। लोगस्स न श्वाता हो तो १६० नवकार गिनना चाहिये। लोगस्स न श्वाता हो तो १६० नवकार गिनना चाहिये। चौमासी प्रतिक्रमण में २० लोगस्स, पाक्षिक प्रतिक्रमण में बारह लोगस्स का कायोत्सगं करना चाहिये। एक नवकार में काउसगा में १९६३२६७ इ पत्योपम का तथा एक लोगस्स क काउसगा से ६१३५२१२ है पत्योपम का देवायु का वय होता है।

. इस प्रकार बाह्य आभ्यन्तर तप के स्वस्था को समझ का गोपन किये विना श्रमुपन संगतमय तप ab bi Miniche baut miffe ?

A サヤイマン

प्राचितिक प्रति के क्षेत्र के क्

のの、祖本の教、山道寺の 保証、 かって 記れた 無いとれる 夢 を れると、 なる 本 なぜる 実 記しいるの せる かられ ないそ からばる でんしょうし よくない てる 知美 夢 も はいるも ししょ ない からかん ないそ かっぱる まっぱから える なみにか かぶららすから からがられる 本 ふされ からからいしゅう あい

The William &

तीसरा ट्याख्यान

चैत्य-परिपाटी तथा एकाद्श् वार्षिक कर्त्त व्य

विशुद्धि का पर्व

महामहिमामय श्री पर्युपण महापर्व का ग्राज तीसरा दिन है। इन दिनो में एक अनोखा उल्जासमय वातावरण दृष्टिगोचर हो रहा है। श्राह्मगुद्धि के इन मगलमय दिवसो में वार्मिकता का उमडता हुआ प्रवाह आप सव मुमुक्षुओ के अन्त करण से प्रवाहित होता हुआ पिलिक्षित हो रहा है। जिस प्रकार सुगध से भरा हुआ फूल अपने सौरभ से आसपास के वातावरण को सुरभित कर देना है इसी तरह म।नव की मनो-भूमिका मे उत्पन्न होने वाले सद्भाव के सुमन भी आस-पास के वातावरण को मुरमित बना देते हैं। यह एक माना हुआ सत्य है कि मानव के मन में उद्भूत प्रत्येक अच्छा या ू बुरा विचार वातावरण पर अपना प्रमाय अक्ति किये विना नहीं रहता। ग्रच्छी भावनाओं का अच्छा असर होता है और ब्री भावनाओं के कारण वातावरण भी दूपित हो जाता है। हमारे यहाँ पर्युपण पर्व की आराधना हो रही है, इस प्रमग पर प्राय प्रत्येक व्यक्ति के मन में सद्भावनाओं का उद्गम

3.4 6. 4 2

को देरा कर कई आसन्न भन्य प्राणी उनके प्रति भिवतभाव पूर्वक श्राकिषत होते हैं और मिथ्यात्व का निकन्दन कर सम्यवत्व की प्राप्ति करते हैं। मोक्ष-प्रमाद की नीव मम्यवत्व ही है। अतः सम्यवत्व प्राप्ति का बहुत अधिक महत्त्व माना गया है। चैत्य-परिपाटी सम्यवत्व का महत्वपूर्ण अग हैं। यह इमलिये भी अधिक प्रमावशाली अग है कि यह स्वय की समिक्ति को निर्मल करने के साथ ही साथ श्रन्य अनेको प्राणियो को सम्यवत्व प्राप्त करने में सहाय-भूत होता है। श्रतएव पर्युपण पर्व के पित्र दिवसो में चैत्य परिपाटी रूप सत्कर्त्तव्य की भाव पूर्वक आराधना करना स्व-पर के कल्याण का कारण माना गया है। इसके सबध में श्री वज्यस्वामोजी महाराज का वृत्तान्त भननीय है। वह इस प्रकार है:-

थ्री वजधरस्वामीजी महाराज का चमरकार

किसी समय थी वज्रस्वामीजी महाराज पूर्व दिग्विभाग से उत्तर दिग्विभाग में पद्यारे, तब वहाँ भयकर दुष्काल पड़ा हुआ था। लोगों को पेट भरने में तकलीक पड़ती थी। दान- शालाएँ बन्द हो गई थी। मुनिवरों को निर्दोप आहार प्राप्ति में वहीं विठनाई होती थी। मुनिगण जब आवकों के घरों में आहार-प्राप्ति के लिये जाते तो स्वय थावक भी "आहार द्रिपत है" ऐमा कह कर टाला ले लेते थे क्योंकि उनके परिचार के लिये भी आहार को तगी थी।

हुटकाल के कारण ऐसी कदयेंना होती हुई देख कर

ता राज्य कार वे प्रमुक्त भागकाम् वर्षे सर् कार्यकारोशी स्व स वित्रीत को द्वेष उत्पाद दिस्तास्थ्यका भी तेति स्वस्त में स्वता सार राज्य के वित्रान का प्राचीन कार कार सात की तेति स्वस्त में उत्पति ए द कार संस्कृत दिस्ता वित्रात कर प्राप्तीत स्वस्त में तीत

भी राज्य की दिल्ली है जहां अवस्त्र के किया है आजार क्षण्यत् रहे क्ष्रिक कर्मा दश्हीकी स्थान के स्वयंत्रे हैं न्यान कर ज्यासीत 목도리 때쪽 많다. 그는 전문 출보자들에는 전통 이 나는 화나는 네이 나는 환화다. 五世 具是壁水 西華 指理 品 斯特賢 聖 海绵 海海 多頭 机能品 经证金 斯山縣 称 只如中草代性主义的老者 即時 阿拉里 野生中心 经复生 使成 经市 おくららぶっとんどく あま かいたいまし 書谷しゃ 配前のか だし あき するとかい 보 NE NO NEWS SERVES 200 NEW SERVES NEW MERCHANIST NEW YORK 中 理学目前 如其 性于了有 制度 的是情情的 大手 嘴毛 是 不知 新了 中 斯森中姓於 城 如子名称 第二次四 那三次野 四月十二次 中 多四十二次次 我会不一年少年小祖人不知是 我们 西日 本河山中城山 经产日场的 经加克日子 我们是我们有不知一个你的不知识的 我们 "我我 说 我没有,我们 我是 我 The second side of great to second side of the second 可能 of 大學 今下 grand 他人 知如中一里是我不能一世中的人 九个多 おき ぬかとっと ないかいしゃ まかし ぶっしょし 最れなり しゃ され おも コノナ ち ーン となる ちゃからか から 幸い しゃかまと かい そろろ 二日 我 多 在山 田 日田 人工小品、一年、 气 清水气、 如 如一百年 小年 八 5 人中。 如此之其 g 在上 西京 也 是 有工业户 在 是 日 日 一 上 人 在 3 次 राजा बौद्धान्यायी था अत उसने सत्ता के वल से आदेश दे दिया कि ''जैनियो को पुष्प न वेचे जाए"। इससे सिर में गूंबने के लिये भी जैनियो को पुष्प नहीं जिलते थे। वृयों कि बौद्धों की मान्यता थी कि इस वहाने पुष्प खरीद कर जैन लोग जिन—मन्दिरों में पुष्प चढ़ा कर सुन्दर शोभायमान पूजा कर सकेगे। राजा को आजा के कारण अधिक मूल्य देने पर भी जैनियों को पुष्पादिक नहीं जिल पाते थे। इसलिये जिन—मन्दिरों में साधारण रीति की पूजा ही की जाने लगी। मूह मागा मूल्य देने की तैयारी होने पर भी पुष्प न जिलने के कारण जैनियों के हृदय में भारी खटक थी। अपने आराध्य देव जिनेश्वर भगवतों की यथोचित पूजा न कर सकने के कारण जैनों के दिलों में भारी दुख भरा था।

इधर श्री पर्युपण पर्वं समीप आ गये। जैनियों को यह वात अधिक खटकने लगी 'क्या पर्वाधिगाज पर्युपण के दिनों में भी भगवान की सुन्दर रीति से पूजा न हो सकेगी? यह विचार श्राते ही हृदय में गहरी वेदना हुई। श्रावक सघ एकित हुआ। विचार-विमशं क पश्चात् श्रावक संघ आचाम भगवान् श्रीमद् वज्जास्वामीजी महाराज की सेवा में गया और उन्हें सारी वात निवेदित की। अश्रुपूणं नयनों से शावक-मंघ ने आचाम भगवान् से विनित करते हुए कहाकि, 'श्री जिनचंदों में प्रतिदिन विशोष प्रकार की पूजाएँ होती हुई देराकर ईपीलु वौद्धों ने राजा से कह कर हमें पुष्प न देने का आदेश निकालवा दिया है। इस राजाजा के कारण हमें पुष्प नहीं

जिन मन्दिरों की उन पुष्पों से पूजा की। इस चमत्कार में जैन शासन की महतो प्रभावना हुई और पुरों के राजा ने बीढ़ धमं छोड़ कर जैन धमें स्वीकार किया।

श्राचार्यं भगवान् श्रीमद् चच्चस्वामीजी महाराज दम पूर्वों के धारक ये और श्रतिशय ज्ञानी तथा श्रागम व्यवहारी थे। ऐसे महापुरुपो की वात निराली ही है परन्तु इस वृत्तान्त पर से यह मूचित होता है कि पर्वाधिगज श्री पर्युपण पव को अट्ठाई के दिनों में सुश्रावकों को जिन मन्दिरों में विशेष रूप से जिनेश्वर भगवतों को पूजा करनी चाहिये। अपनी शक्ति के अनुसार श्रावको को उन्छास पूर्वक उत्तम साधनो के द्वारा पूजा करनी चाहिये। इसमे भी जैन शासन की प्रभावना है। श्रावक चैत्य परिपाटी करने के तिये निकले तब पूजा की उत्तम सामग्री साथ लेकर निकले । इससे दूसरो को भी प्रेरणा मिलती है और अन्य लोगो पर भी सुन्दर छाप पडती है। भ्रपने यहाँ पूजा-भिवत के जमे उत्तम साधन बताये गये हैं वैसा श्रन्यत्र नही है । अत. उससे दूभरो पर प्रभाव पडता ही है। इस प्रकार चेत्य परिपाटी शासन की प्रभावना का कारण होने के साथ ही साथ मम्यवत्य की निमंठता का निमित्त है।

चेत्यों का सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक महत्त्व :

यद्यपि वैत्यों का मूलभूत उद्देश्य द्यानिक और आध्या-रिमक विकास है तदपि उनके साम्युनिक और ऐतिहासिक महत्व को भी ओजन नहीं किया जा सकता। जैन मण्युनि के

रेश्यात के, बर्गत कोष करान से क्षेत्र स्थितिको नी स्थापना and the the first thankent agreement age attende while the में होत्रहीं सुद्ध करें हैं अवस्थान अवस्था यह देश बद्ध अन्तर हैं। अर्थ 파가 가 하나면 불문과 없는 또한 지수도 시간이 되는 때문을 받는 방문 방문이를 불성되는 된 보고 두 글 가 클릭론보다다. 단계대다. 중단부 단위, 다디다다. 클래먼부 10년 to be a single to be and the second of the s 精神機能 新北西市 知 中田 本 的复数品 大 知识 医多类素的 人名 東京教育 東京 新山山市 一個年 青山山山 知明 在 在 人名西加斯 家 第1883 MARGORANDE REPORT & SARAS BRITAL PENNING 新安美的 最级人生人人 美 花 成了日 人 一次 在 我 医上午 本 是在九城 事品等 新教育 化高 化化二甲酚二甲基 化二年 医皮化 公司 在此 小的 品面 實 門 孝世 到,我你我是一次不会会不不不知 日本本 蒙古

A K2 ~ T K. 感, 學 人民 医 具体表 表 多生 人名 如 人名 人名 经 人名 人名

The second secon

की सम्पत्ति को चैत्य निर्माण मे लगा कर वास्तव में जैन यासन की महती सेवा वजाई है। उन्होंने अनेक भव्या-त्माओं के लिये सम्यक्त्व का द्वार खोलने का उपकार तो किया ही है साथ ही जैन संस्कृति को ऐतिहासिक अगरता भी प्रदान की है।

विषम काल में आलम्बन :

देवाधिदेव तीर्थं द्धार भगवान् के साक्षात् अभाव में विषम दुपम काल में ज्ञानी भगवतो ने तीन आलम्बन फरमायें हैं—जिन विम्व, जिनागम और जिन चैत्य। इन तीन का आलम्बन लेकर पचम विषम काल में भव्य जीव मोक्षमार्ग को चाराधना कर सकते हैं। ज्ञानी भगवतो के इस फरमान से सहज ही समभा जा सकता है कि इन तीन आलम्बनों का कितना श्रधिक महत्त्व है। यही कारण है कि महाराजा सम्प्रति, कुमारपात आदि राजाओ ने, उदायन—सज्जन विमलशाह श्रादि मित्रयों ने तथा कई धनकुबेर शाहों ने अपनी सम्पत्ति का सदुपयोग जिन—गन्दिरों के नवनिर्माण तथा जीणेंद्वार में किया है।

सज्जन मंत्रीव्यर ने तीथंराज गिरनार पर्वंत पर भगवान् श्री नेमिना चजी के मन्दिर के जीर्णोद्धार का बहुत वहा काम अपने हाय में लिया। उसने मौराष्ट्र के सेठो को बुलवाया। उनके सामने उस महान् कार्य की रूपरेमा प्रस्तुत की। ठाणा देवली के भीमा सेठ ने अपनी सम्मत्ति इस कार्य

The state of the s

Souther the transfer of the same of the sa

कोई एक चीज मांगने का कहा था। उनत दम्पित ने सन्तान की मांग न रखते हुए मन्दिर के निर्माण में सहायता की इच्छा व्यक्त की। कितनी महान् हैं इस दम्पित की प्रभू-भनित । प्रपत्ती को मन्दिर-निर्माण में लगा कर विमलशाह ने अक्षय पुण्य संचय करने के साथ ही ऐतिहासिक अमरता प्राप्त कर ली। न केवल जैन संसार में ही अपितु सारे विश्व में उनकी यशोग।था युगयुगान्त तक गाई जाती रहेगी। सन्तान के जिरये से अमर रहने की मानव की अभिलापा वास्तव में मूर्खता पूर्ण है। अपने सरकार्यों के द्वारा उपाजित यशो राशि ही व्यक्ति को अमरता प्रदान करती है।

इस प्रकार आपके पूर्व-पुरुषों ने भव्य चैत्यों का निर्माण करवाया है। एसा करके उन्होंने भव्य जीवों के लिये कल्याण का मार्ग प्रशस्त कर दिया है। जिन चैत्य और जिन-विस्व का ग्रालम्बन लेने से भावना की विश्विद्ध होती है, प्रमोद भाव की जागृति होती है, भिवत में रग जम जावे और उल्लास आ जावे तो प्रभुदर्शन से कल्याण हो जाता है। प्रभुदर्शन से कल्याण की प्राप्ति, वन्दन से इच्छित-प्राप्ति तथा पूजन से इहलोक-परलों की पुण्य सम्पत्ति या बत् मोक्ष की प्राप्ति होती है।

इन बातो पर ध्यान देकर पर्युपण पर्व के पवित्र दिवमो में चैत्य-परिपाटी रूप मत्कत्तंत्र्य का मलीमानि आराधन करना चाहिये।

在一日本本 在在 本本的 二百十二日 在 美田山 美年 五年 八十十二 Lydy by the Cap on Lefting the State of State of Antiques and asset a martin fale y and ti'm what which the take their कोर राज्यका कर सहेर हो। यह बार्ड है। उटल ह क्या की सुप्र शहिल्या J. Spice of the section with the second section of the section of the second section of the second section of the section of the second section of the section of Level & & Amagential of the strains and a second of the state of the s The test there deliver he and a suit that the level is the delivery the board of the second was about the sail and the to face a face of the foreign where he was not ずり、ガッアップ

while has been a feet to be the first of the see that 秦 其本 多年 五年 日本日本日本日本日本日本日本日本日本日本日本日本日本 End - I have the formers of the first of the formers of the first of t される あちしか はいみもっきょうかないから かんしゃ かっしょ えんれ a little and an in a first to the second 我也是我也有什么不会不不必要你不会 我你就 我一点都不得我了。 h, # m, an , an m of the state of the transfer transfer on a THE REPORT OF THE PARTY OF THE

इस प्रकार अमारि प्रवर्तन, म्वधर्मी वात्मल्य, क्षमापना, अप्टम तप की आराधना और चैत्य परिपाटी रूप पाच सत्कत्तंन्यो का निरूपण किया गया है।

इन पाँच सत्कर्तव्यो की आराधना के द्वारा पर्युपण पर्व की वास्तविक सफलता होती है। स्राशा है, आप सव इनको हृदयगम करके व्यवहार मे लावगे और अपनी आत्मा को कल्याण के मार्ग पर अग्र 4र करेंग।

एकादश वार्षिक कृत्य:

सघार्चादि सुकृत्यानि, प्रतिवर्षं विवेकिना । यथाविधि विधेयानि, एकादशमितानि वै॥

मानव-जीवन की सफलता ऐश-आराम या भोगोपभोग से नहीं अपितु धर्मावरण और सत्कृत्यों से होती है। मानवशरीर अलकारों या सुन्दर वेशभूपा से सुशोभित नहीं होता अपितु परोपकार, दान, तप, सयम आदि सद्गुणों से अलकृत होता है। कान की शोमा कुण्डल से नहीं, शास्त्र श्रवण से होती है, हाथ की शोभा ककण से नहीं दान से होती है; चरणों की शोभा नूपुरों या सुन्दर उपानहों से नहीं विक्ति तीर्यमन से होती है। चिन्तामणि रत्न क समान सुदुर्गम मानव-शरीर की मोगोपभोग में लगाय रपना मोन क पात्र में कूडाकचरा भरने के समान है। श्रतए विवेक सम्पन्न मानव का कत्तंव्य है कि वह अपने जीवन की धर्माचरण के द्वारा का कत्तंव्य है कि वह अपने जीवन की धर्माचरण के द्वारा

19 美術 記録と言 21 年初にいるとから ラギア ないな から 食みから にる 称 へ かいす 21 年初といる - min 20 日子香子 というのでかりとまるを かっとな お 上の - min 2 日 でのぶいたみなり 「より なぬみ ある 大 から す 、 - min 2 日 いる よのなはれまして はないない えん で まるの 切れ 所を はな ままままる ふなる くなき ないしょぎかい みなかか ・ ごうか み

पहेरामणी प्रादि बहुमान पूर्वक प्रदान करना सब-पूजा के अन्तर्गत आता है। सब पूजा तीन प्रकार की वही गई है-१ उत्कृष्ट, २ मध्यम और ३ जघन्य । सकल सघ की बहुमान पूर्वक भिवत करना, समस्त श्रावक श्राविका सघ को अदि पूर्वक भोजन कराकर पहेरामणी करना उत्कृप्ट सघ पूजा है। वस्तुपाल महामत्री प्रतिवर्ण सघ को ग्रपने घर अमित्रित करते थे और विपुल द्रव्य खर्च करके वहुमान पूर्वक सघ की भिवत करते थे। इतना आयिक सामर्थ्यं न होने पर कम से कम साधु साध्वियो को मुहपत्ति तथा श्रावक श्राविकाओ को एक एक सुपारी बादाम इलायवो देकर भी जघन्य सप पूजा के मत्कृत्य की आराधना करनी चाहिये। उत्कृष्ट और जघन्य के बीच मे अपनी शक्ति के ग्रनुमार यथाशक्ति सघ की पूजा भक्ति करना मध्यम पूजा है। यहाँ यह ध्यान देने योग्य यात है कि सघ पूजा मे भाव-भवित का जितना श्रधिक महत्त्व है उतना साधन सामग्री का नहीं। ग्रतः यह कोई जरुरी बात नहीं है कि सम्पन्न घनवान् व्यक्ति ही सघ पूजा कर सक्ते है, निर्धन व्यक्ति सघ पूजा वया करे? सघ पूजा की भावना हो तो निर्धन भी सम्यक् प्रकार से सघ पूजा कर मकता है और उसके द्वारा की जाने वाली तथ पूजा का विशेष महत्त्व होता है। क्योकि कहा गया है कि-सम्पत्ति होने पर नियम (परिग्रह-परिमाण), शक्ति होने पर सहनशीलता, युवावस्था मे सहाचर्य और दिरिद्र श्रवस्था में किया गया थोडा भी दान; ये चार वस्तुएँ महा लाम प्रदान करने वाली होती है। इस विषय मे श्रायक रत पुणिया श्रावक का उदाहरण मननीय है।

हैं का राजन की की पूजा र

大きない 大変 (本文) (

लित नहीं हुए ! मगद्य का सम्राट् श्रेणिक उनकी एक सामा-यिक के बदले अपना समस्त वैभव और साम्राज्य देने को तत्वर है परन्तु पुणिया श्रावक को उसकी रच मात्र भी इच्छा नहीं है। वह ग्रपने आत्मिक वैभव और मतोप के महासागर में निमग्न है, बाह्य घन दौलत उसकी शान्ति को भग करने में समयें नहीं है। यही कारण है कि देवाधिदेव तीर्थं द्वार श्रमण भगवान् महाबीर देव के मुखार्यवन्द से उसकी प्रशमा के शब्द निकले। पुणिया श्रावक की यह सघ पूजा, धनकुवरों द्वारा की जाने वाली पूजा से कही अधिक श्रेष्ठ है।

पुणिया श्रावक के इस उदाहरण से यह भी स्पष्ट ही जाता है कि उदारता ग्रातमा का गुण है। धनवान ही उदारता वता सकते हैं, धनवान ही धमंं के साधनों को बना सकते हैं, ऐसी कोई बात नहीं है। धमंं की भावना वाले माधारण व्यक्ति भी लाभ ले लेते हैं और धनवान कोरे ही रह जाते हैं। धमंं के लिये पौद्गलिक पदार्थों का भोग देने की वृत्ति जब आती हैं तभी धार्मिक बनुष्ठान आनन्द पूर्वक सम्पन्न किये जा सकते हैं। ऐसे ही व्यक्ति धर्म को दीपा सकते हैं।

वर्तमान मे अधिकांग व्यक्तियों को धर्म की अपेक्षा सौमारिक पौद्गलिक पदार्थों के प्रति विशेष आकर्षण है इमिल्ये वे धार्मिक अनुष्ठानों की अवहैतना कर देते हैं। धर्म को अपेक्षा धन को महत्त्व देने वाते व्यक्ति कदापि धर्मानुष्ठान नहीं कर सकते और न सुख-धान्ति का आनन्द ही ने सकते हैं। जीवन में मतोपपृत्ति और सान्विकता आये विना सच्चे सुल की अनुमति

THE CONTROL OF THE PROPERTY OF THE STATE OF

man ign a standard to the status of a single of the second

The property of the property o

श्रावको को तग्ह श्राविकाओं का भी वात्मत्य यथा-योग्य बहुमान पूर्वक करना चाहिय। मधवा हो या विधवा, कुमान्कि हो या युवती और वृद्धा हो, श्रीमत हो या गरीब हो जो कोई भी जिनेदवर देव की आज्ञा में चलने वाली हो उसका भिवतभाव पूर्वक वात्सत्य करना चाहिये।

कोई यह शका कर मकता है कि स्थियों की जगह २ निन्दा की गई है, उन्हें नरक का द्वार कहा गया है, मोह का मन्दिर बताया गया है, उनमें झूठ, अविवेक, कपट, मूर्णता, श्रानुरता, अतिलोभ, अपवित्रता और निर्दयता ये आठ दोग स्वभावत बताये गये हैं। सूर्यकान्ता, चूलणी, किपला, नागशी आदि स्थियों ने श्रपने दुष्कमों से इसे साबित कर दिया है तो स्थियों का बहुमान क्यों करना चाहिये?

इनका समाधान करते हुए शास्त्रकारों ने कहा है कि पापाचरण और धर्माचरण का सबध पुरुपत्व या स्त्रीत्व के साथ अविनाभूत नहीं हं। यह नहीं कहा जा सकता कि स्त्रियों में ही दुण्टता आदि दुगुण भरे होते हैं और पुरुप मात्र सदाचारी और गुणवान होते हैं। पुरुपों में अनेक महाकूर, नास्तिक देव—गुरु के निन्दक और विश्वासघाती देग्ने जाते हैं। खून, हत्या ठगाई आदि भयकर पापकमें करने बाले पुरुपों की सर्या कम नहीं है। अत्र एवं स्त्रियों को होन दृष्टि से देखना अविवेक पूर्ण है। स्वाध्याय रत्नावली में कहा गया है—

"सनी स्थियों निर्मल और पवित्र हैं। मोह का मन्दिर होते हुए भी वे मोह का नाश करती है। ये मच्नी गृहिणी

大田 日本日本では 日本年本 とした ある 中心は 安日の でんなん まっぱん かっぱん かいかい ない できょう かい かいかい ないしょう かい から かいかい かん かいかい かん かっかい かん かっかい かん かいかん しょうしゅう しょうしゃ しゅう かっかい かんかい かん かい かっかい カート・カー・ファール かっかい かんかい かん かい かん かっかい カール・ファール カー・ファール カー・フェール カー・フェー

THE STATE OF THE STATE OF

The second of th

जनसमुदाय के 'जय जय' के तुमुल घोप के साथ श्री जिनेस्वर देव का स्वर्ण का रथ तैयार किया। वह स्वर्णरथ भेह पर्वत के समान सुष्योभित लगता था। **उस रथ पर वि**याल द⁰ड वाली ध्वजा थी । उस पर छन लगे हुए त्रे । दोनो तरफ श्वेत शुभ्र और मनोहर चवर होरे जा रहे थे। इस रथ मे प्रक्षालन, विलेपन और पुष्पो से अग रचना की हुई श्री पार्श्वनाय प्रमू की मूर्ति स्थापन की हुई थी। सकल सघ ने उत्साह पूर्वक ऋदि सहित उस रथ का कुमारपाल राजा के राजद्वार पर लाकर स्यापित किया । उस समय वाद्यो और वादित्रो का नाद दसो दिशाओं को गुजायमान कर रहा था। मुन्दर तरुण स्त्रियो कासमूह रथ के आगे गृत्य कर रहा था। उस रथ को सामन्त तथा प्रधान राजमहल में ले गये। तत्पश्चात् कुमारपाल राजा ने रथ मे रही हुई प्रभुजी की प्रतिमा का पट्ट बस्त्र तथा स्वर्ण के अलकारो से पूजन किया। विविध नृत्य गान करवाये । धार्मिक श्रानन्द पूर्वक रात्रि व्यतीत कर राजा रथ सहित नगर के वाहर आये। वहा बनाये गये भव्य मण्टा मे रथ को स्थापित किया। राजा ने रथ मे रही हुई प्रतिमा का पूजन किया और चतुर्विद्य सघ के समक्ष स्वय ने आरती उतारी। तत्रश्चात् रथ में हाथी जीत कर उसे नगर में चल समारोह पूर्वक धूमबाम से घुमाया। स्थान स्थान पर बाधे गये मटपो में विस्तार वाली रचना द्वारा उत्पव को दीपाया। कुमार-पाल महाराजा द्वारा की गई रथ यात्रा वे अनुसार श्रायको गो रययात्रा का आयोजन अवस्थमे । मरना चाहिये ।

स्कार्यको सुर्वित्तार स्थान स्वयति । स्वयति स्वयति स्वयति स्वयत् स्वयति । स्वयति स्वयति स्वयति स्वयति । स्वयति स्वयति स्वयति ।

जिन महान् आत्माओ ने जिन जिन स्थानो पर रह कर आत्मा का कल्याण किया है उनका निमित्त लेकर अपनी ग्रात्मा का कल्याण करने के श्माशय से तीर्थयात्राएँ की जाती है। मीज-गौक के खातिर किये जाने वाले प्रवासी की तीर्थयात्रा की नाम नही दिया जा सकता। जिम यात्रा का ध्येय आध्यात्मिक न होकर सांसारिक और पौद्गलिक ममता को बढ़ाने का होता है वह प्रवास मात्र है तीर्थयात्रा नहीं । महा आरम्म और महा परिग्रह के कारण मूत कल कारखानो को देखने जाना, वाँबो को देखना और विविध नगरो के वाह्य दृष्टि से गिने जाने वाले दर्शनोय स्थानो को देखने की उत्कठा रखना तीर्थयात्रा के समय अनुचित है। मीज जीक क लिये तीर्थ स्थानो म जाना कमाने की जगह जाकर खो कर आना है। तीर्थयात्रा के दौरान पौद्गलिक सुखशीलता का त्याग करना श्रावण्यक है। इस सुखशीलता और अनुकूलता की उच्छा से आत्मा धनन्तकाल से ससार में भ्रमण कर रहा है। प्रतएव तीर्थस्थानी में सहनशीलता का अभ्याम करना और देह की ममता तथा पीद्गलिक राग को अत्व करने का यथाशक्य प्रयत्न करना चाहिये । तीर्थयात्रा के समय प्रात्मा नवीन उपल्टिय को प्राप्त करे, इस यात की तरफ लक्ष्य देना जरूरी है। इसी दृष्टि से तीर्थयात्री के जिये छह 'री' के नियम बताय गये हैं।

रसनेन्द्रिय की लमाहना का कम करने के जिये तथा भोजन की सहपट में अधिक समय न निकल जास उस हिस्ट Ling on hand man of hand the body of the mine and the grant of the second man and the sec

The same of the second of the

प्रतिक्रमण, गुरु नदन, योग हो तो न्यारुयान श्रवण, नवकार मत्र का स्मरण, गुरु भिवत, सार्विमक भिवत, आदि को करते रहना सम्यवत्ववारो रूप चतुर्थं 'रो' है।

तीर्थयात्रा के दौरान सचित्त पदार्थों का त्याग करना चाहिये। इसमें करुणा का विस्तार होता है। इन्द्रियो पर अकुश रहता है और जीवन सर्यामत बनता है। यह सचितहारी रूप पचम 'री' है।

तीर्थयात्रा के काल में ब्रह्मचारी रहना आवश्यक है। जीवन को सयमित, गर्यादित और विशुद्ध बनाने के लिये ब्रह्मचर्य का पालन करना अत्यत जरूरी है। भोगोपभोगों का स्याग आत्मिक अभ्युदय के लिये आवश्यक है। यह ब्रह्मचारी रूप छठी 'रो' है।

उक्त छह 'रो' का यथावत् पालन करते हुए तीयंयात्रा करनी चाहिये । पूर्वकाल में ग्रनेक राजाओ, मित्रयो और सेठ साहुकारो ने ऐमी तीर्थयाताएँ की है ।

प्रसार ताकिक, महाकवि, कत्याण मन्दिर स्तीय के रचियता पूज्य आचार थी सिद्धमेन दिवाकर सूरीस्वरजा म० के महुद्देश से प्रतिब्द महाराजा विकमादित्य ने थी शतु गय गिरिराज का सब निकाला या जिसमें १६९ स्वर्ण के. ५०० हायी दात तथा चन्दन ने जिनालय थे। थी सिद्धमेन दिवाकर स्नादि पात हुन्। ज नार्ष महाराज थे। चरदह मुहुद व्या राजा, सित्र लाग थातकों के हुन्। एक करोड दम

A 4 ha to the enter the fire a 2 ha to the at the total the total

State and white is a few forms a first to the By water of color to a respect to the same of the same the first projection of the property of the property of a property of the state of the state of the state of · 大學 一个 中國一部 知 知 知 如 如 如 如 五 五 五 人 一 四 一 五 人 三 1 年 日 1 日 The same of the high of the forther a market part with the at a promotion of the state of metro g a fagg a s a charge to get to 中国 人名英格兰 医牙髓体炎 集成 医二代氏 the transfer of the second to the second the second to the A TONORE FOR ALL HANDERS A BOND OF A P. 1 me 2 1 7 6 7 21 2 4 man garasan ne t and the second 4 11/2 1/2 2 2 4 45 3 4 4

7 77 28 7 7

व्यक्ति सब पर्वों में एमा कर सक्ते में समर्थ नहीं है उसे वर्ष में एक बार तो स्नाय-महोत्सव करना ही चाहिया। ग्रन्यों में कहा गया है कि श्री पेथडशाह मनीरवर ने श्री रेवतागिरिजी (गिरनारजी) पर स्नाय-महोत्सव में छप्पन घडी प्रमाण स्वर्ण का व्यय कर इन्द्रमाला पहनी थी। तथा शत्रुजय से गिरनार तक का एक स्वर्ण-ध्यज चढाया था। उनके पुत्र झाझण न उतना ही वडा रेशमी वस्त्र का ध्वज चढाया था। जिनेशवर देव के प्रति की गई भिन्त मुक्ति की निस्सरणों है। जैसे जमें भिन्त में श्राह्लाद बढता जाता है वैसे वैसे अनेक जावों को भिन्त में सम्मिलित होने का मन होता है। श्रतएव स्नाय-महोत्मव द्वारा प्रभुजीं की भिन्त का आनन्द लेना चतुर्थ वार्षिक कर्त्तव्य बताया गया है।

(+) देवद्रव्य की वृद्धि :

विवेक सम्बन्न श्रावक को अपने द्रव्य का रादुपयोग देवद्रव्य की वृद्धि के लिये करना चाहिये। मीजशौक या ऐश श्राराम में सम्पत्ति को खर्च करना सम्पत्ति का दुरुवयोग है तथा पापानुबंध का कारण होता है। अतएब पुण्य से मिली हुई लक्ष्मी का उपयोग पुण्यानुबंधी गुम कार्यों में ही करना चाहिये। देवद्रव्य की प्रतिवर्ष वृद्धि करने के लिये उपधान की माला, सद्य में तीर्थमाला, इन्द्रमाला ग्रादि की बोली वोलकर धारण करनी चाहिये। एक बार श्री गिरनारजी तीर्थ पर श्रीताम्बर और दिगम्बर नन एक माथ यात्रा करने के तिये अपने से से समय तीर्थ के स्वामित्न के विषय में होनों में

(६) बड़ी पूजा:—

प्रतिवर्षे श्रावक-श्राविकाओं को एक वडी पूजा पढानी ही चाहिये। जिन मदिरों में महोत्मव पूर्वक पूजा कराना म्रद्वाई महोत्सव आदि उत्सव म्रायोजित कर विभिष्ट प्रभु-भिक्त करना चाहिये। यह मुद्रालेख मदा याद रखना चाहिये कि ''जिनवर पूजा रे ते निज पूजना रे''। अर्थात् जिनेश्वर देव की पूजा करना अपनी आत्मा की पूजा करना है । आत्मा की पुजा करना अर्थात् आत्मकल्याण के द्वार को खोलना है। आर्द्रक्मार ने जिन-प्रतिमा के दर्शन से आत्म कल्याण का मगलमय द्वार खोल लिया था। ग्रतएव उल्लास पूर्वक वडी पूजा का आयोजन करना चाहिये। पूजा की विवि और पूजा की सामग्री सब विशुद्ध और उत्तम श्रेणी की होनी चाहिये। पूजा पढाते समय यह ध्यान में रखने की बात है कि लोकिक दिष्टि का उतना महत्व नहीं है जितना जिनेस्चर देथ के प्रति रे प्रीति और भगित का है। इसको ही प्रधानता देकर उत्तम पूजा की सामग्री से उल्लास पूर्वक वही पूजा पढ़ानी चाहिये। यह छठा वापिक कृत्य है।

(७) राब्रि-जागरण

श्रपने हृदय में रही हुई प्रमु-मिन की व्यान करने के लिये तथा वातावरण में भिनत के प्रवाह को प्रवाहित करने के उद्देश्य से रात्रि-जागरणी का आयोजन होता है। सामारिक कार्यों से निवृत्ति लेकर उन निवृत्ति के श्रणों को एस की स्थित त्य प्रतिकार्ण के प्रतिकार करिया क्षातिक के स्वाह के क्षातिक के स्वाह के स

किया मिल कर मोक्ष के कारण होते हैं। एकान्त किया अथवा एकान्त ज्ञान मोक्ष के निमित्त नहीं होते। ज्ञान और किया का समन्वय होना जरूरी है। किया की सफलता ज्ञान से है और ज्ञान की सार्यकता किया से है। अतएय मोक्षमार्ग की म्राराधना के लिये ज्ञान और किया का सामञ्जस्य आवश्यक है।

किसी भी मजिल पर पहुँचने के लिये रास्ता बताने वाले नेत्रों की आवश्यकता होते है ताकि सही रास्ते पर कण्डकों और गडहो से बचते हुए प्रगति की जा सके । साथ ही पैरों में चलने की शक्ति भी चाहिये ताकि निर्दिष्ट मार्म पर चलते चलते मजिल हासिल करली जाय।

इसी तरह मोक्ष की मिजल की प्राप्त करने के लिय ज्ञान, नेत्र की तरह मार्ग बताने वाला है और किया, पांव की तरह मिजल की तरफ प्रयाण कराने वाली है। ज्ञान के विना क्रिया अन्धी है और किया के बिना ज्ञान पगु है। यदि ये दोनों ग्रलग अलग रहते हैं तो दोनों ही मिजल पर पहुँचने में असमर्थ होते हैं। यदि ये दोनों मिल जाते हैं तो दोनों हो मिजल पर पहुँच सकते हैं। लगडा व्यक्ति अबे के कबे पर बैठकर—अधे की सहायता से पार हो जाता है और अन्धा व्यक्ति लगडे के द्वारा मार्ग बताये जाने स मिजल पा लेता है। इस अब पगु न्याय के ममान ज्ञान और किया पिल कर मोक्ष की मिजल तक पहुँचा देते हैं। इसलिये विवेकवान श्रावकों को धार्मिक अनुष्ठान रूप कियाओं के साथ श्रुतज्ञान की भिन्त और आरा-धना ग्रवश्यमेव करनी चाहिय। 野生 事情相等一個 不聽,而下,就是一樣的。 类是一樣的那 在在是不在事 如此 班子 安然上沒有 不是是沒有你 故語之 如然是 篇如 如此此 a not have noted that the the site of the site of the site of the 不行對於如此其下於如此轉身,與其 有 內脏性 於 相片 And Bolt to the sound by the state of the state of the state of the 8 2 . 4 - 6 2 8

क क्षा ती करती का तह प्रदेश का का कि हिंदी हैं। Dr mile til grandlig de til en fragt og til grandlig .

指できるこのかって 京京中 者 、 本 中です まく ままるの かんす 要す 会文 かく ち インコ 衛をす か 間 かく かかなな は う イケット か しゅん 美 カ to the same and the same of th the short of the state of the s

東·イ·美元 な Mic Mick m (をロ) 39 中の はいまえしてき At my water to me to the first the f the the terms of the same to the terms of the same to the same of the same to the same of The set of the beautiful to the tenter of the मय गुफा में अनन्तकाल तक इधर—उधर रखड़ने के सिवाय और कोई चारा नहीं हैं। ज्ञान का प्रकाश ही मसार-कन्दरा मे पार पहुँचाने वाला हैं। ज्ञान के ग्रमाव में श्रेयस् और श्रश्रेयस्, धर्म और ग्रवमं, पुण्य और पाप, कर्त्तव्य और श्रकर्त्तव्य जीव और अजीव, तत्त्व और अतत्त्व का विवेक ही समव नहीं हैं तो वेचारा अज्ञानी जीव क्या साधना कर सकेगा? साधना के लिये ज्ञान का होना जरूरी है। इमलिये कहा गया है—

पढमं नाणं तश्रो दया एवं चिट्टई सच्व संजए। श्रनाणी किं काही किं वा खाहीउ सेय पावगं।।

—दशवेकालिक सूत्र

अर्थात्-मुमुक्षु को पहले तत्त्व-अतत्त्व का ज्ञान करना चाहिये। इसके बाद ही सयम का आचरण हो सकता है। सयमी जावन का मूल ग्राधार ज्ञान है। अज्ञानी आत्मा श्रेय और अश्रेय को कैमे पहिचानेगा? ग्रतिएव ज्ञान को मोक्ष का प्रथम मोपान कहा जा सकता है। लोक में रत्न, दापक, चन्द्रमा और सूर्य प्रकाशमान तत्त्व माने जाते हैं परन्त, ज्ञान सबसे अधिक उत्कृष्ट प्रकाशमान तत्त्व है। उनत पदार्थों का प्रकाश तो मीमित क्षेत्र में और मीमिन मात्रा मे होता है। परन्तु ज्ञान का प्रकाश लोकालोक ब्यापी और अनन्त होता है। मम्यम् ज्ञान वही है, जो मोक्ष की माधना मे उपयुक्त है जा ममार साधक हो वह मिथ्याज्ञ एव ग्रज्ञान है।

पचमी तप, बीम स्थानक तप, रोहिणी तप आदि ज्ञान-दर्शन चारित्र के आरायन भूत विविध तप की समाप्ति के उपलक्ष मे उद्यापन करना चाहिये। यह नीवा वार्षिक कर्त्तत्व है। कम से कम वर्ष मे एक उद्यापन तो अवस्य करना ही चाहिये।

उद्यापन करने से तप के फल में वृद्धि होती है। कहा

'तप-फल वाधे रे उजमणा थकी, जिम जल पक्रजनाल' जैसे पानी से कमल-नारा की वृद्धि होती है वैसे हो उजमणा से तप के फल की वृद्धि होती है।

तप का उद्यापन करना मानो तप रूप मन्दिर पर कलश चढ़ाना है, अक्षत पात्र पर फल रखना है और भोजन कराने के पश्चात् ताम्बूल अपंण करने के समान है। तप के उद्यापन से तपस्वियों का बहुमान होता है तथा सघ में तप के प्रति सद्भाव प्रकट होता है। मत्री श्री पेयडकुमार ने नवकार मत्र के तप का उद्यापन किया था। उसमें सोना, मिण, मोती, रुपये, पकवान, फल, रेशमी ध्वजाएँ आदि प्रत्येक वस्तु ६८-६८ रख कर चमरकारिक उद्यापन किया था। इस प्रकार यथाशनित तप का उद्यापन करना नौवा बापिक कत्तंव्य कहा गया है।

(१०) शासन प्रभावना :

जैन-शासन की महिमा को बढाने वाले कार्यों को करना शासन-प्रमावना है। श्री गुरु महाराज के प्रवेश-महोत्सव

 का रवागत-समारोह ठाठ-बाठ से आयोजित करे। पूज्य, पूजा की इच्छा नहीं करता और पूजक पूज्य की पूजा किय विना नहीं रहता, यह श्रेष्ठ मर्यादा है। उम मर्यादा का पालन करना चाहिये। व्यवहार भाषा में साधु-प्रतिमा बहन के अधिकार में कहा गया है कि "साधु मम्पूर्ण प्रतिमा बहन करले तब यकायक नगर में प्रवेश न करे परन्तु समीप में आकर किसी साधु या श्रावक को अपना दर्शन दे या सदेशा पहुँच।वे जिसमें नगर का राजा या मत्री अयवा ग्राम का ग्रधिकारी महोत्मव पूर्वक प्रवेश करावे। उसके अभाव में श्रावक वर्ग और मध प्रवेशोतमय करावे।

शामन की प्रमायना के निमित्त वरघोडा, प्रवेश महोत्सव, कत्याण महोत्सव, उद्यापन, प्रतिष्ठा महोत्सव, साधिमक वात्सत्य उपधान तप, पद यात्रिक सब ब्रादि की आयोजना करते रहना चाहिये। ये मव कार्य अनेक जीधो को धर्ममार्ग के प्रति आकिपत करने वाले और बोधि-बोज की प्राप्ति के कारण होते हैं। श्रतएव विविध प्रकार के आयोजनो द्वारा जैन शासन की प्रमायना करना चाहिये। यह दमसा वार्षिक कृत्य है।

(११) आलोचना-विशोधि :

सातमा के कत्याण के लिये आलोचना का बहुन अधिक महत्त्व होता है। जिस प्रकार मेता कपडा सायुन और पानी से मृद्ध होता है जमी प्रकार किये गये पापों की णृद्धि आली- de gelein gras gie die waterie de mute mitaug die

大小學是不好學問 (學問為下 等 好後 可有生物 is the life like to the tent of the whole the time in the 人名西日及原始 衛門 医肝 经交换 事品報 "我你是我们是一个我一个我 of propressions in the form whenever a topical highlight of 如此者 无 好 · 看不事 如 在本 教育会 生 上海, 養田裕 新日 好 · 是 沒, 就是 and the second of the second o The way of the major of the state of the sta The transfer to the state of th the second secon The second of the second of the second of the second of

man to the state of the state o The standard stands of the standard of the sta

रीति से किया गया है उसे उसी रूप में सही सही गरु महाराज के समक्ष प्रकट कर देना और वे उसकी गुद्धि के लिये जी प्रायश्चित्त दें उसे अगोकार करना, यह वात हृदय की सरलता होने पर ही हो सकती है। सामान्य तौर पर तो लोग अपने अपराध को स्वीकार ही नहीं करते हैं। अपराध को छिपाने का प्रयत्न करते हैं। प्रकट हो जाने पर भी "मैंने नहीं किया" कहने की घृष्टता करते हैं। ऐसे व्यक्ति ग्रवनी गृहि नहीं कर सकते। जिस प्रकार शरीर के किसी भाग में काटा लग जाने पर जब तक काटा अन्दर बना रहता है तब तक चैन नही पडती। काटा निकल जाने पर ही शान्ति मालूम होती है। उसी तरह पापकर्म का शत्य जब तक अन्दर बना रहता है तब तक विशुद्धि नहीं हो सकती। पाप कर्म के शल्य को आलोचना के द्वारा निकाल फेंकने पर हो आत्मा की विगृद्धि हो सकती है और शान्ति की वास्तविक अनुभूति भी तभी हो सकती है। इसीलिये सच्ची शान्ति और आत्म-गुद्धि के लिये पापकर्म की आलोचना गुद्ध और सरलभाव मे अवस्य ही कर लेना चाहिये।

आलोचना या परचात्ताप ऐसा अमृत का अरना है जिसमे अवगाहन करने से भयकर पाप का ताप झान्त हो जाता है, मन की मिलनता और मैंन धुल जाना है, हृदय स्वच्छ बन जाता है और आत्मा परम झान्ति का अनुमव करने तम जाता है। इस विषय पर निम्न उदाहरण मननीय है-

झाझरिया मुनिवर बाजार में से निकत रहे हैं। राजा-

रणसंबन्द्रीते । समी स्थितः की पूर्व प्रदेशका की में इंप्तर प्राप्त की बूस बाल की शहर सही है हे साई मा में भूपने व हेमारे हैं। बीहरूका के बाइना करिय की प्रीपी र ग र्यो तर । यह पेल क्ष यावा के यह में हर ता राया Egystelene de dir myth matte etter etter etter m रेन्द्र रिक्टमण मन्द्र दर्दे तत्रक स्रोत्त जवक प्रज्ञानुस्तर व स्रोत्त्रमण स्वयनी 뭐 가면 가다 말은 는 도시오는 아내지는 사람이 뭐 뭐 말은 때문 모나 나무 the fear of a figure of marting and makes arrang and the second and second to the second of manager of the second sections 电电影 医原性 化苯酚酚 高级的现代数 掛大 经制造基金 医糖糖 化化红色 > 3 to the land of the top of the first to the tent of the form of the first to the 其次 本日加之 美工生物 善 私茶魚 放弃 海山湖岸 化山高水平 新 切如子 到

 का पार नहीं रहा। विना विचारे, मूर्नि हत्या का घोर पाप कर डालने के कारण अन्त. रुरण में तीव वेचैनी है, आँबो में आंमू लाकर मुनिराज के मृत देह री क्षमायाचना करता है। पश्चात्ताप की अग्नि में घोर पाप को भस्म कर डालता है। पश्चात्ताप के करने में पाप मैल को घो डालता है और राजा भी केवल ज्ञानी वन जाता है। यह है महिमा परचात्तार और आलोचना की। अनेक महापापी भी आलोचना के प्रताप से तिर गये हैं। इमलिये थावक का यह कर्तव्य है कि वह वर्ष में एक बार अपने पापो की आलोचना पू गुरु महाराज के समक्ष अवश्यमेव करके आत्मा को शुद्ध करले। यह ग्यारहवा वार्षिक सत्कृत्य है।

इस प्रकार जिनेच्यर देव के मार्ग क रिसक जीव पाच सहक्तं च्य और एकादय वार्षिक कृत्यों के आराधन द्वारा अपने जीवन को धन्य वनाते हैं। आत्म-परिणित को निर्मल बनायें विना जीवन की सफनता नहीं हो। सकती। प्रमाद के वण में पड़ा हुआ प्राणी पाप में पड़ता है और मुख के लिये पाप करता है। परन्तु यह उनकी भ्रमणा मात्र है। पापक में में दुख की परम्मग ही बढ़ती है। सामारिक मुल की अभितापा आत्मा को गतत मार्ग पर ते जातो है। सासारिक मुलो को अभिनापा से धामिक अपुट्ठान करना मानो अमृत सरावर के जिगारे आकर वृत्वित रह जाना है या कोचड़ को चूयना मात्र है। धामिक अन्छानों का आगधन मोदा म्पी फन के तिये होना चाहिये।

AND AND FOR IN MIS SO ESSENT TO SEE THE MISSE SECURITY 不是不不是歌曲 医胃管管管 無其下者 医皮黄素 獨在 被中 海湾 医超级性 * 3 .





